पाइय विज्जा

प्राकृत विद्या

3

प्राकृत विद्यालय
पाइय विज्जालयो
स्वागतम्
सागयं
Welcome

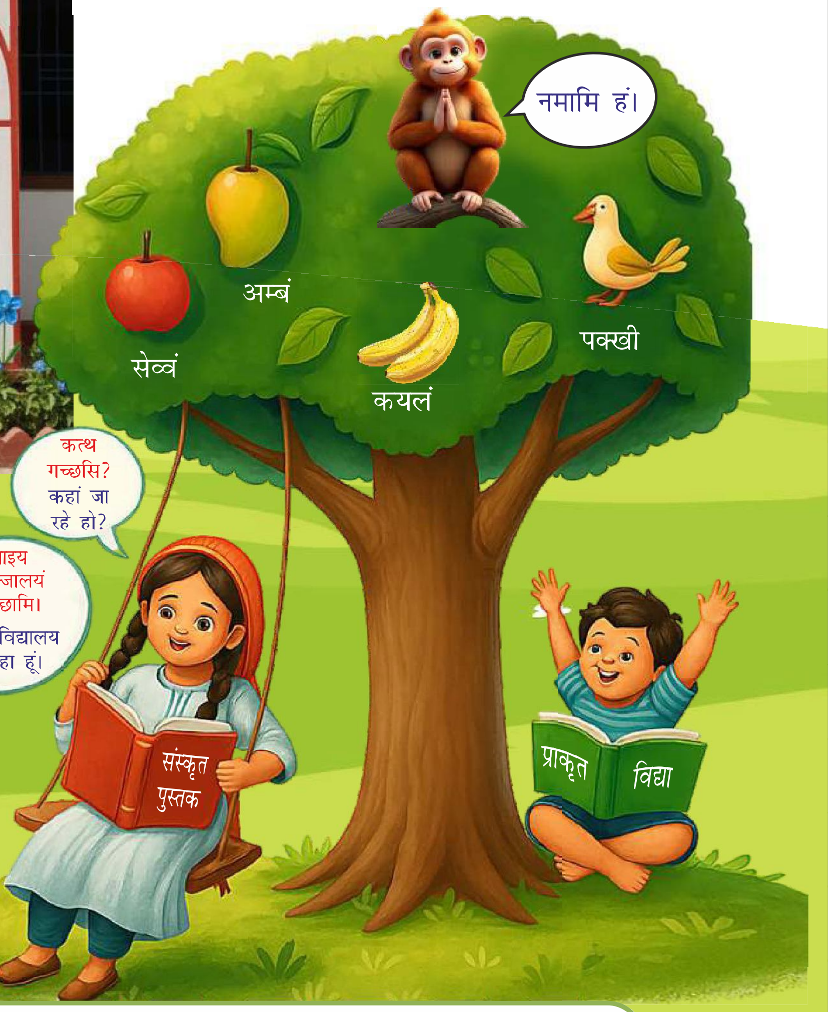
नमामि हं।
अम्बं
सेव्वं
कयलं
पक्खी
कत्थ गच्छसि? कहां जा रहे हो?
पाइय विज्जालयं गच्छामि। प्राकृत विद्यालय जा रहा हूं।
जयउ जिणिंदो
संस्कृत पुस्तक
प्राकृत विद्या

जय जिनशासन प्रकाशन
श्रुत रत्नाकर

पाइय विज्जा

प्राकृत विद्या

3

प्राकृत
विद्यालय
पाइय विज्जालयो
स्वागतम्
सागयं
Welcome

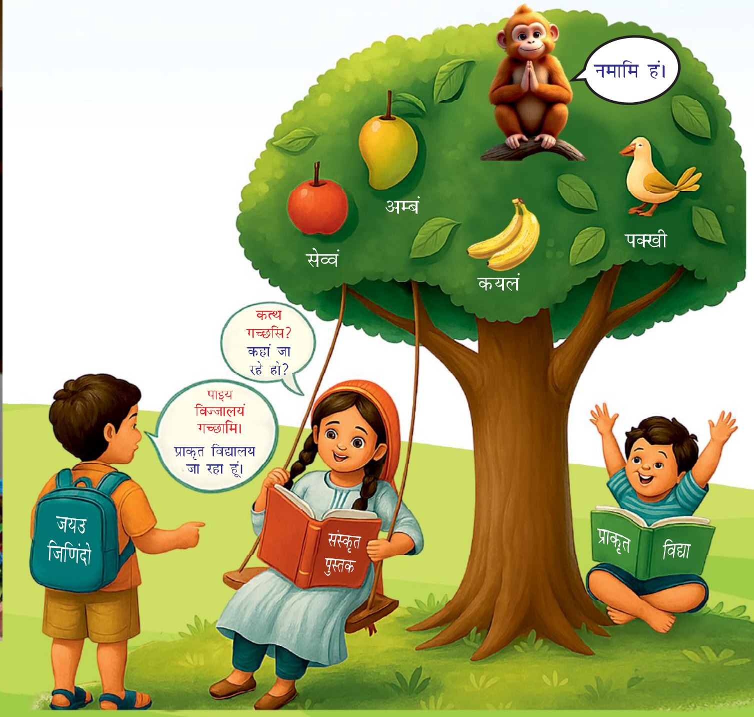
नमामि हं।
अम्बं
सेव्वं
कयलं
पक्खी
कत्थ गच्छसि? कहां जा रहे हो?
पाइय विज्जालयं गच्छामि। प्राकृत विद्यालय जा रहा हूं।
जयउ जिणिंदो
संस्कृत पुस्तक
प्राकृत विद्या

पुस्तक : पाइय विज्जा – 3
प्रकाशक : जय जिनशासन प्रकाशन (दिल्ली)
एवं श्रुतरत्नाकर (अहमदाबाद)
मुद्रक : पारस ऑफसैट प्रा. लि., कुण्ड़ली, सोनीपत
साज-सज्जा : श्रमण पब्लिशर्स प्रा. लि., लुधियाना, 98140-23225
प्राप्ति स्थान : 212, वीर अपार्टमेंट, सैक्टर-13, रोहिणी, दिल्ली-85
मोबाइल नं. : 98102-87446

प्राक्कथन

प्राकृत भाषा भारत की प्राचीन भाषा है व हिंदी, पंजाबी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं की जननी (माता) है।

भगवान् महावीर स्वामी सहित सभी तीर्थंकर भगवन्तों ने धर्म का ज्ञान प्राकृत में ही दिया। जैन आचार्यों ने भी प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना अनुपम योगदान दिया है। प्राकृत भाषा का सुन्दर, सुव्यवस्थित व्याकरण लिखने का श्रेय भी जैनाचार्य श्री हेमचंद्र जी को जाता है। अनेक जैन-अजैन लेखकों ने प्राकृत भाषा में उत्तम साहित्य व प्राकृत भाषा सिखाने वाली सुन्दर पुस्तकों की रचना की है।

इस पुस्तक-शृंखला में सरलता से व चित्रों के साथ प्राकृत भाषा की वाक्य रचना, शब्द ज्ञान, नियम, व्यवहारिक वाक्य आदि सिखाने का प्रयास किया गया है। अब तक उपलब्ध प्राकृत सीखने में सहयोगी पुस्तकों में यह पुस्तक-शृंखला कुछ हटकर है।

इस पुस्तक माला को विद्यार्थियों की रुचि व बौद्धिक स्तर आदि के अनुरूप सुन्दर, सरस व रोचक बनाया गया है। पुस्तकों का मूल उद्देश्य प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ विद्यार्थियों के जीवन को सुसंस्कारित करना है।

यह पुस्तक-शृंखला अपने उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी-ऐसा विश्वास है।

अणुक्कमणिया/अनुक्रमणिका

0. पत्थणा – प्रार्थना 6
1. पाइय भासा – प्राकृत भाषा 7
2. वण्णमाला – वर्णमाला 9
3. लहुवक्का – छोटे-छोटे वाक्य 13
4. लिंग भेओ – लिङ्ग भेद 15
5. वयणं – वचन 18
6. संखा वक्का य – संख्या और वाक्य 26
7. मम परिचयो – मेरा परिचय 28
8. वक्क रयणा-उत्तम पुरिसो – वाक्य रचना-उत्तम पुरुष 29
9. वक्क रयणा-मज्झिम पुरिसो – वाक्य रचना-मध्यम पुरुष 34
10. वक्क रयणा-अण्ण पुरिसो – वाक्य रचना-अन्य पुरुष 38
11. तओ काला – तीन काल 42
12. अव्वयो – अव्यय 60
13. लहुससगो (कव्वं) – नन्हा खरगोश (काव्य) 64
14. धावन्तो वेज्जो (कव्वं) – दौड़ता हुआ वैद्य (काव्य) 65
15. दंत सोहणं (कव्वं) – दंत शोधन (काव्य) 66
16. गोलगप्पं (कव्वं) – गोलगप्पा (काव्य) 67
17. चंदो माउलो (कव्वं) – चंदा मामा (काव्य) 69
18. को एत्थ संदेहो? – इसमें क्या शक है? 70
19. तिण्णि मित्ताणि – तीन मित्र 74
20. मूढो वाणरो – मूर्ख बन्दर 77

21. बुद्धिमंतो वायसो – बुद्धिमान कौआ 79
22. सुसंगई कायव्वा – सत्संगति करनी चाहिए 82
23. दाणिं को समयो? – अब क्या समय है? 85
24. मम पायचरिया – मेरी प्रात:चर्या 88
25. रूवग-नाणग-बोहो – रुपये पैसे का बोध 91
26. संवाओ – संवाद 94
27. विविहा किरिया-रूवा – विविध क्रिया रूप 96
28. पाइय सुत्ता – प्राकृत सूक्त 98

प्राकृत गीतिका

पागयं पढामि हं – मैं प्राकृत पढ़ता हूँ
पागयं लिहामि हं – मैं प्राकृत लिखता हूँ
पागयं सरामि हं – मैं प्राकृत का स्मरण करता हूँ
पागयं वयामि हं – मैं प्राकृत बोलता हूँ

हं पिवामि पागयं – मैं प्राकृत को पीता हूँ
हं जीवामि पागयं – मैं प्राकृत को जीता हूँ
हं कीलामि पागयं – मैं प्राकृत से खेलता हूँ
हं नमामि पागयं – मैं प्राकृत को नमन करता हूँ

पागयं पहुवयं – प्राकृत प्रभु की वाणी है
पागयं पुराणयं – प्राकृत बहुत पुरानी है
पागयं सुसंगयं – प्राकृत भाषा है सुसंगत
पागयं इसिमयं – यह ऋषियों के द्वारा अनुमत

पत्थणा / प्रार्थना

हे भगवं

हे भगवं हे भगवं	हे भगवान्! हे भगवान्!
देहि बुद्धिं हे भगवं	दे दो बुद्धि हे भगवान्!
मणस्स सुद्धिं हे भगवं	मन की शुद्धि, हे भगवान्!
निरुग्ग–कायं हे भगवं	नीरोगी तन, हे भगवान्!
निद्दोस–वायं हे भगवं	निर्दोष वचन, हे भगवान्!
दयं करेहि हे भगवं	दया करो, हे भगवान्!
संतिं देहि हे भगवं	शांति दो, हे भगवान्!

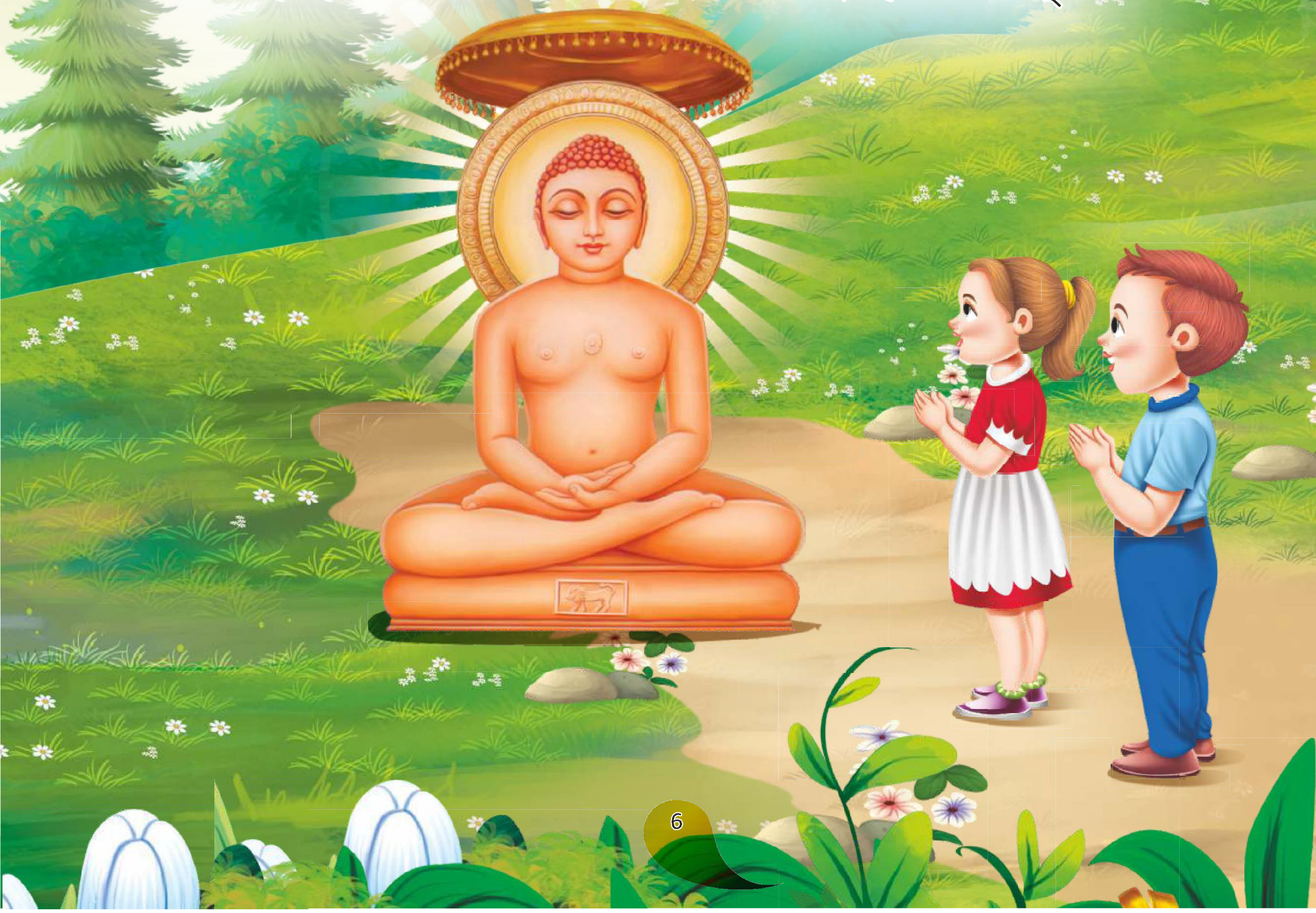

पाढो
पाठ
1

पाइय भासा
प्राकृत भाषा

1. विश्व के सात प्रमुख धर्म हैं। सभी की अपनी– 2 प्रमुख भाषा है, जिसमें उस धर्म का मूल साहित्य लिपिबद्ध हुआ है। जैसे–

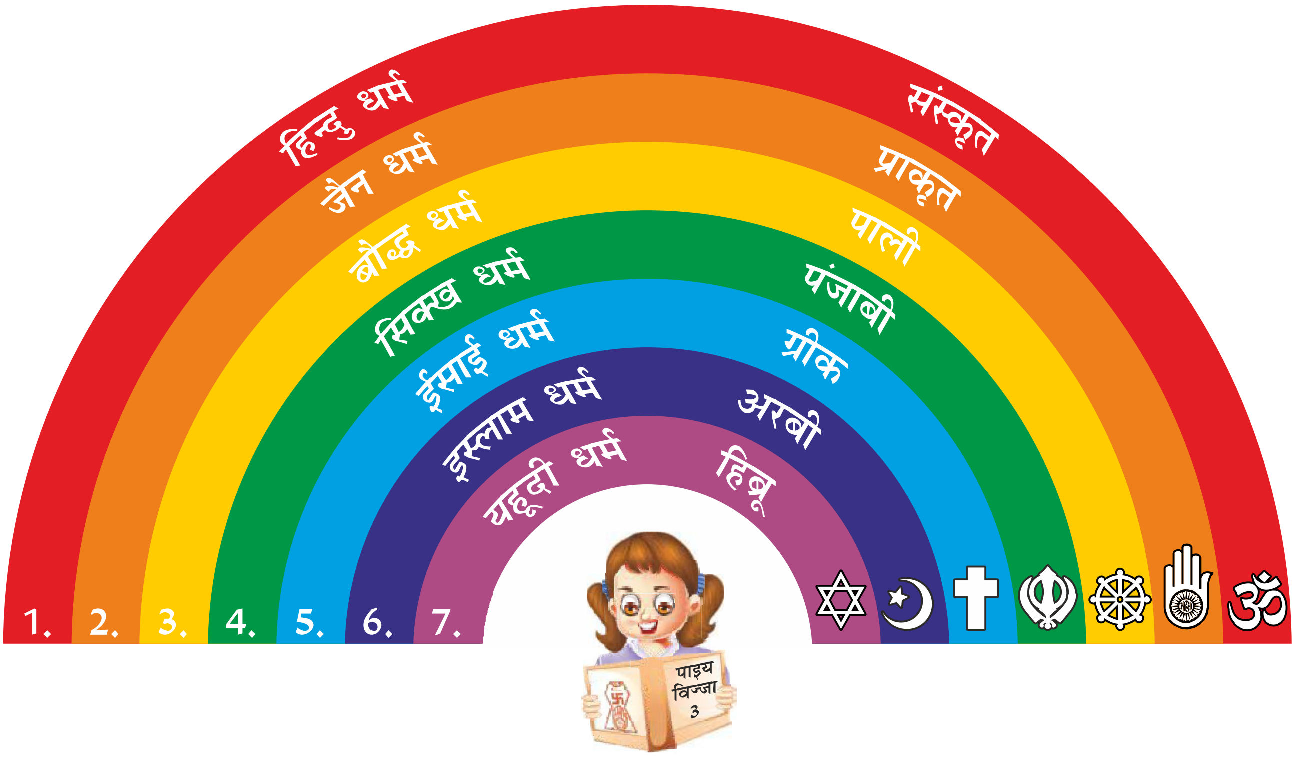
हिन्दु धर्म
जैन धर्म
बौद्ध धर्म
सिक्ख धर्म
ईसाई धर्म
इस्लाम धर्म
यहूदी धर्म
संस्कृत
प्राकृत
पाली
पंजाबी
ग्रीक
अरबी
हिब्रू
1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
ॐ
पाइय विज्जा 3

2. **जन भाषा प्राकृत भाषा –**

आज से दो–ढाई हजार साल पहले प्राकृत भाषा जन भाषा थी।

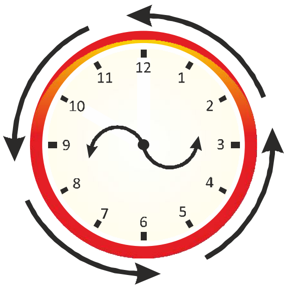
12
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11

2 हजार साल पहले

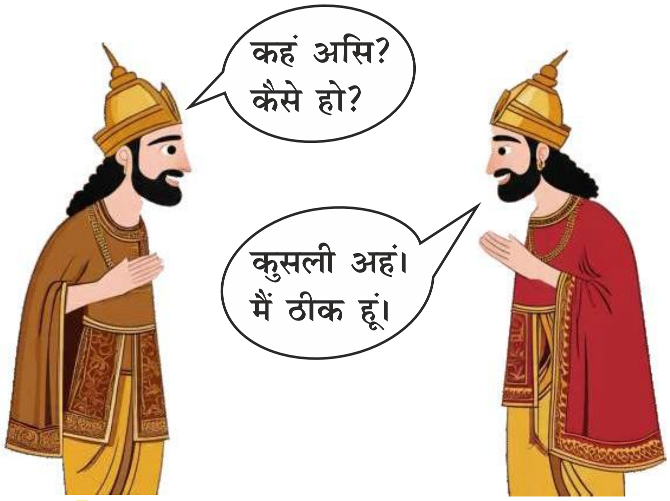
कहं असि?
कैसे हो?
कुसली अहं।
मैं ठीक हूं।

3. प्राकृत भाषा के विविधरूप –

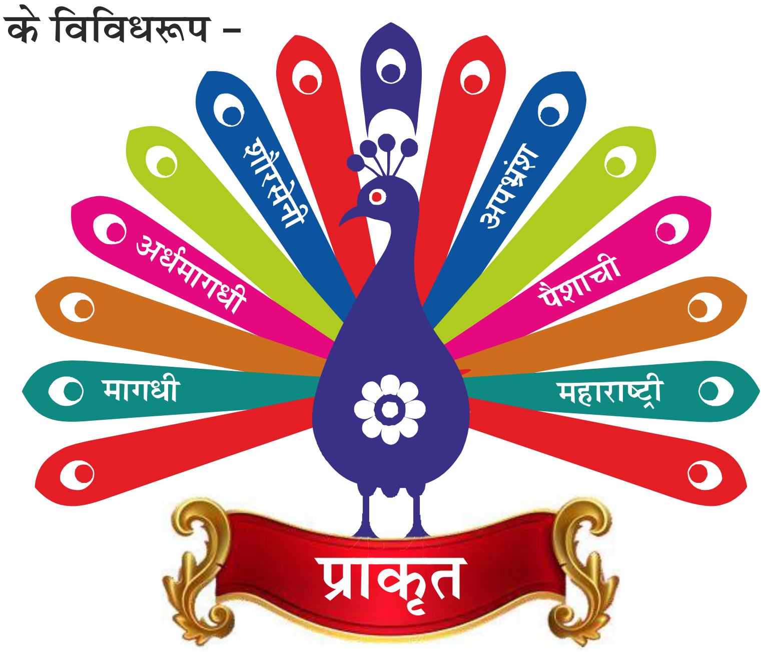

4. जैन शास्त्रों की भाषा –

जैन शास्त्रों (आगमों) की भाषा अर्धमागधी प्राकृत है।

आयारो	दसवेआलिओ	उत्तरज्झयणाइं	णंदी
जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ।	जं सेयं तं समायरे।	सोही उज्जुय – भूयस्स	जयइ महप्पा महावीरो
जो एक को जानता है वह सब को जानता है।	जो श्रेयस्कर है, उसका आचरण करो।	सरल व्यक्ति की शुद्धि होती है।	महान आत्मा महावीर (प्रभु) की जय हो।
आचार अंग	दशवैकालिक	उत्तराध्ययन	नन्दी

5. प्राकृत व्याकरण के रचनाकार –

प्रसिद्ध एवं सर्वप्रमुख प्राकृत व्याकरण के रचनाकार **जैनाचार्य श्री हेमचंद्र जी** हैं।

प्रश्नोत्तर (पण्होत्तराणि)

1. विश्व के सात प्रमुख धर्म व उनकी मुख्य भाषा का नाम लिखें।
2. जैन आगम कौन-सी प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं?
3. प्राकृत भाषा के 4 धर्म ग्रन्थों के नाम लिखें। (प्राकृत व हिन्दी)
4. प्राकृत भाषा जन भाषा कब थी?
5. प्राकृत व्याकरण के रचनाकार कौन हैं?

पाढो
पाठ
2

वण्णमाला
वर्णमाला

सभी भाषाओं की अपनी-2 वर्णमाला होती है, जैसे हिन्दी में अ, आ... क, ख... आदि तथा अंग्रेजी में A,B,C,D... आदि।

प्राकृत वर्णमाला हिन्दी वर्णमाला के समान है। हां, प्राकृत भाषा में कुछ वर्ण- श, ष, ज्ञ, त्र, क्ष, आदि use नहीं होते हैं।

प्राकृत भाषा की वर्णमाला

अ 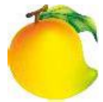 अंबं (आम) Mango	आ 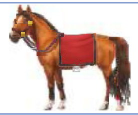 आसो (अश्व) Horse	इ 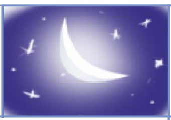 इंदू (इंदु-चंद्रमा) Moon	ई 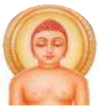 ईसरो (ईश्वर) God
उ 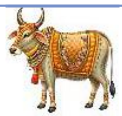 उसभो (ऋषभ-बैल) Ox	ऊ 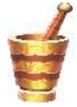 ऊलूखलं (ऊदूखल-ऊखल) Mortar	ए 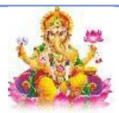 एगदंतो (एकदंत-गणेश जी) Ganesh Ji	ओ 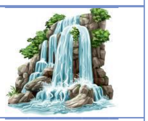 ओज्झरं (झरना) Waterfall
क 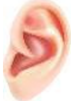 कण्णो (कर्ण-कान) Ear	ख 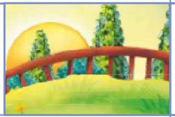 खेत्तं (क्षेत्र-खेत) Field	ग 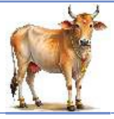 गावी (गौ-गाय) Cow	घ 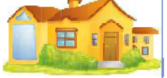 गिहं (घरं) Home

च 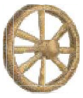 चक्कं (चक्र) Wheel	छ 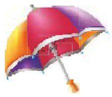 छत्तं (छत्र-छतरी) Umbrella	ज 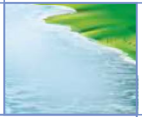 जलं (पानी) Water	झ 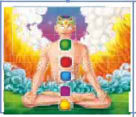 झाणी (ध्यानी) Dhayani	ट 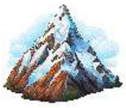 टंको (टकू-पर्वत की चोटी) Top Mountain
ठ 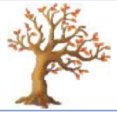 ठाणू (स्थाणु-सूखा पेड़) Dry Tree	ड 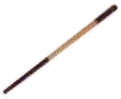 डण्डो (दण्ड-डण्डा) Stick	ढ 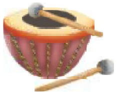 ढक्का (नगाड़ा) Drum	ण 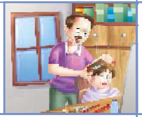 णाविओ (नापित-नाई) Barber	त तेल्लं (तेल) Oil
थ 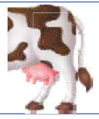 थणं (थन) Udder	द दुद्धं (दुग्ध-दूध) Milk	ध 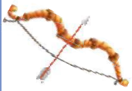 धणू (धनुष) Bow	न 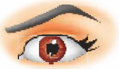 नेत्तं (नेत्र-आँख) Eye	प 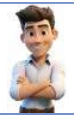 पुरिसो (पुरुष) Man
फ 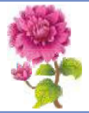 फुल्लं (फूल-पुष्प) Flower	ब 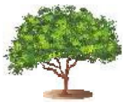 बोरो (बदरी-बेर वृक्ष) Beri	भ भल्लुओ (भालू) Bear	म 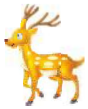 मिगो (मृग-हिरण) Deer	य 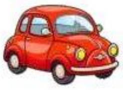 जाणं (यान) Vehicle
र रिसहो (ऋषभ) Lord Rishabh Dev	ल लोणं (लवण-नमक) Salt	व वत्थं (वस्त्र-कपड़ा) Cloth	स 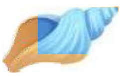 संखं (शंख) Shell	ह 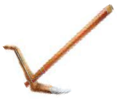 हलं (हल) Plough

वर्णमाला विश्लेषण

किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसकी वर्णमाला को जानना अति आवश्यक है।

वर्ण – किसी भी भाषा की मूलभूत ध्वनियां वर्ण कहलाती हैं। जैसे– अ, क्।

प्राकृत भाषा में वर्ण के दो भेद हैं– स्वर (Vowels) और व्यंजन (Consonants)।

स्वर – जो स्वयं अपने आप में पूर्ण हैं; वे स्वर कहलाते हैं। जैसे– अ, आ।

प्राकृत में 8 स्वर हैं।

स्वर के भी दो भेद हैं– ह्रस्व (short) और दीर्घ (long)।

- ह्रस्व स्वर अ, इ, उ हैं।
- दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ, ए और ओ हैं।
- प्राकृत भाषा में ऐ और औ का प्रयोग नहीं होता।
- प्राकृत भाषा में ऋ, ॠ, लृ और विसर्ग (:) भी नहीं होते।

व्यंजन – जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता की अपेक्षा रहती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। जैसे– क्, ख्।

प्राकृत में 31 व्यंजन हैं।

क, ख, ग, घ, ङ	(ङ से कोई शब्द शुरू नहीं होता)।
च, छ, ज, झ, ञ	(ञ से कोई शब्द शुरू नहीं होता)।
ट, ठ, ड, ढ, ण	(ण को प्रयोग प्राकृत में बहुलता से होता है।)
त, थ, द, ध, न	(अनादि न को ण हो जाता है।) (अनादि=जो शब्द के शुरू में न हो)
प, फ, ब, भ, म	
य, र, ल व	(शब्द की आदि में य को ज हो जाता है।)
श, ष, स, ह	(श, ष को प्राकृत में स हो जाता है)

- य, र, ल, व–ये अंतस्थ व्यंजन कहलाते हैं।
- स, ह–ये ऊष्म व्यंजन हैं।
- ङ्, ञ्, ण्, न्, और म् ये अनुनासिक व्यंजन हैं।

प्रश्नोत्तर

1. वर्ण किसे कहते हैं?
2. स्वर किसे कहते हैं?
3. स्वर के कितने भेद होते हैं?
4. प्राकृत में किन-किन स्वरों का प्रयोग होता है?
5. प्राकृत भाषा में किन-किन स्वरों का प्रयोग नहीं होता है?
6. व्यंजन किसे कहते हैं?
7. प्राकृत में कितने व्यंजन हैं?
8. किन-किन व्यंजनों का प्राकृत में प्रयोग नहीं होता है?
9. अन्तस्थ व्यंजन कौन-कौन से हैं?
10. ऊष्म व्यंजन कौन से हैं?
11. अनुनासिक व्यंजन कौन-कौन से हैं?

(वर्णों के 6 उच्चारण स्थान होते हैं।)

1. कण्ठ 2. तालु 3. मूर्धा 4. दन्त 5. ओष्ठ (होठ) 6. नासिका

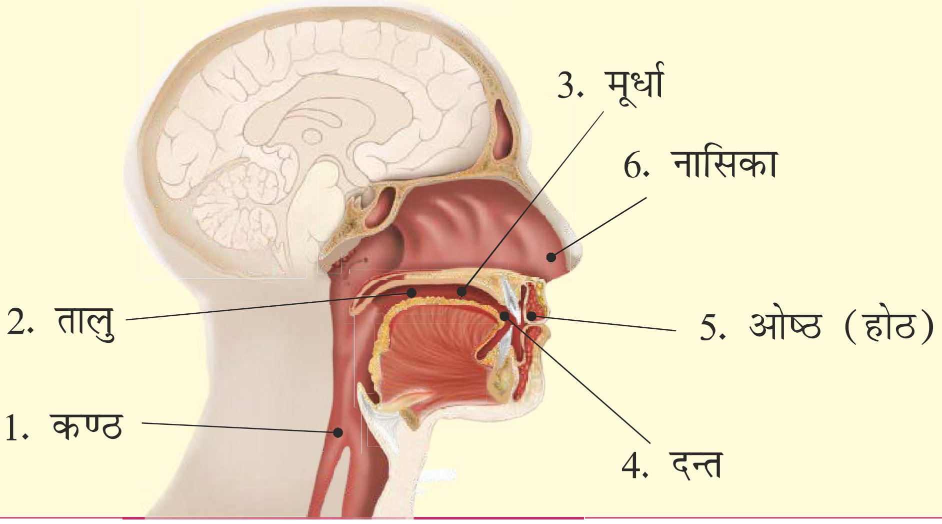
3. मूर्धा
6. नासिका
2. तालु
5. ओष्ठ (होठ)
1. कण्ठ
4. दन्त

प्राकृत वर्णमाला में प्रयुक्त शब्दों पर आधारित अभ्यास पत्र

चित्र देखें और प्राकृत नाम बताएं

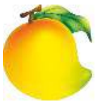
(आम) ______________________________

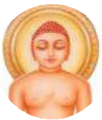
(ईश्वर) ______________________________

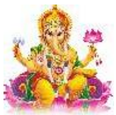
(गणेश जी) ______________________________

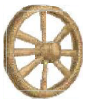
(चक्र) ______________________________

(दूध) ______________________________

(वस्त्र) ______________________________

(भ. ऋषभ देव जी) ______________________________

(फूल) ______________________________

(भालू) ______________________________

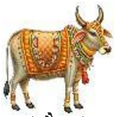
(बैल) ______________________________

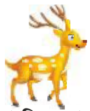
(हिरण) ______________________________

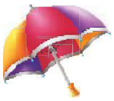
(छतरी) ______________________________

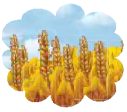
(खेत) ______________________________

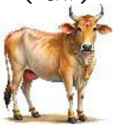
(गाय) ______________________________

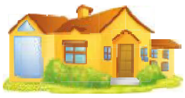
(घर) ______________________________

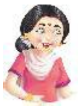
(स्त्री) ______________________________

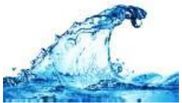
(पानी) ______________________________

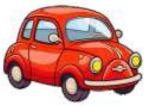
(कार) ______________________________

(नमक) ______________________________

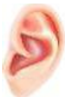
(कान) ______________________________

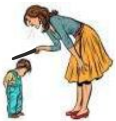
(दण्ड) ______________________________

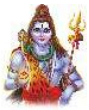
(शिव) ______________________________

पाढो 3 लहुवक्का

पाठ 3 छोटे-छोटे वाक्य

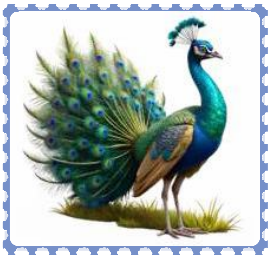

इमो मोरो अत्थि।
यह मोर है।

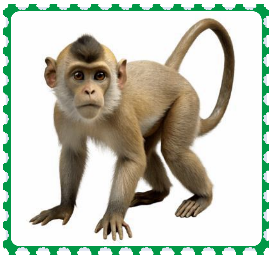

इमो वाणरो अत्थि।
यह बंदर है।

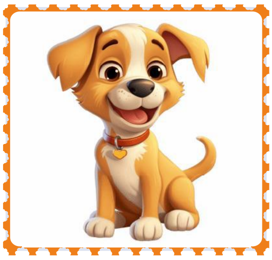

इमो सुणओ/कुक्कुरो अत्थि।
यह कुत्ता है।

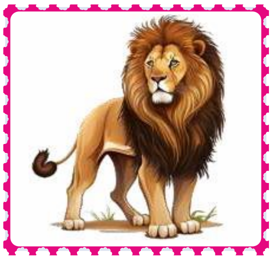

इमो सीहो अत्थि।
यह शेर है।

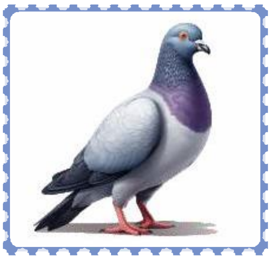

इमो कवोओ अत्थि।
यह कबूतर है।

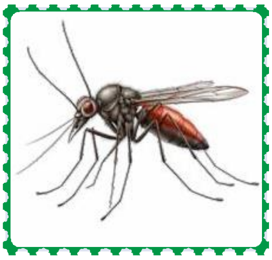

इमो मसगो अत्थि।
यह मच्छर है।

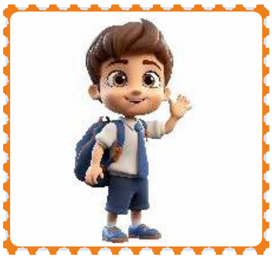

इमो छत्तो अत्थि।
यह छात्र है।

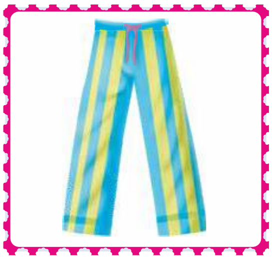

इमो पायजामो अत्थि।
यह पाजामा है।

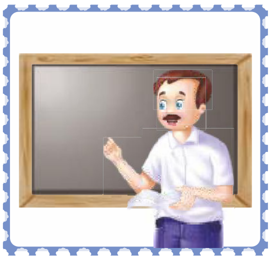

इमो अज्झावओ अत्थि।
यह अध्यापक है।

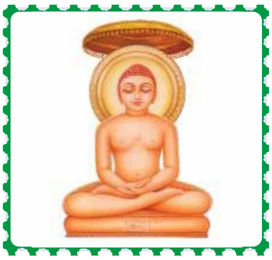

इमो भगवं महावीरो अत्थि।
ये भगवान महावीर हैं।

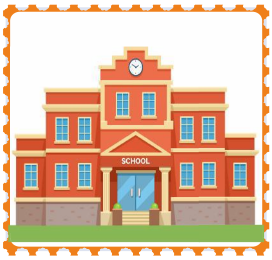

इमो विज्जालयो अत्थि।
यह विद्यालय है।

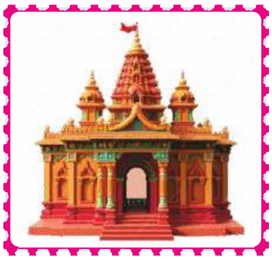

इमो देवालयो अत्थि।
यह देवालय/मंदिर है।

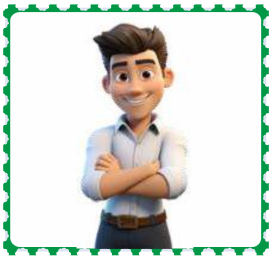

इमो पुरिसो अत्थि।
यह पुरुष है।

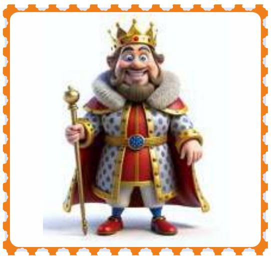

इमो राया अत्थि।
यह राजा है।

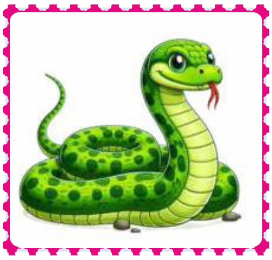

इमो सप्पो अत्थि।
यह सर्प है।

अब्भासो-अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के प्राकृत व हिन्दी उत्तर लिखें।

	प्राकृत	**हिन्दी अर्थ**
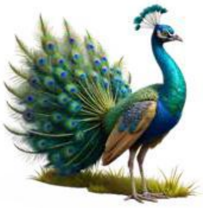	– इमो को अत्थि? (इदं किं अत्थि?) ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
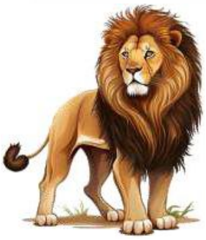	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
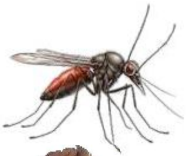	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
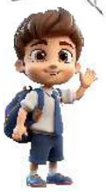	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
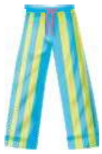	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
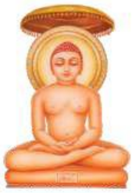	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
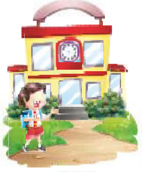	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………
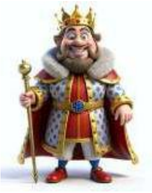	– इमो को अत्थि? ……………………………………	– यह क्या है? ……………………………………

पाढो पाठ 4

लिंग भेओ

लिङ्ग भेद

लिङ्ग (Gender) की अपेक्षा से शब्दों के 3 भेद हैं।

1. पुल्लिंग शब्द	2. स्त्रीलिंग शब्द	3. नपुंसकलिंग शब्द
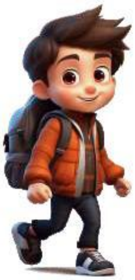	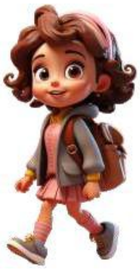	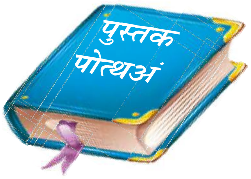
1. आसो – घोडा 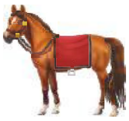	1. इत्थी – स्त्री 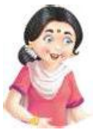	1. अम्बं – आम 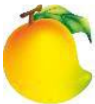
2. ईसरो – ईश्वर 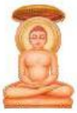	2. गावी – गाय 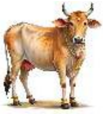	2. ऊलूखलं – ऊखल 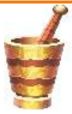
3. उसभो – बैल 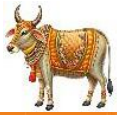	3. फुल्लगब्भी–फूलगोभी 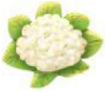	3. ओज्झरं – झरना 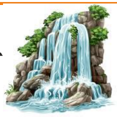
4. एगदंतो – गणेश जी 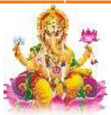	4. मज्जारी – बिल्ली 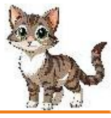	4. खेत्तं – खेत 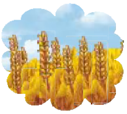
5. कण्णो – कान 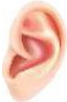	5. चडया – चिड़िया 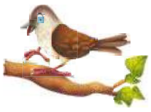	5. घरं – घर 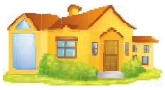
6. टंको – चोटी 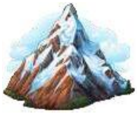	6. मयणा – मैना 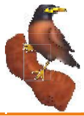	6. चक्कं – चक्र 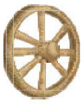
7. डण्डो – दण्ड 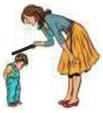	7. वट्टिया–बत्तख 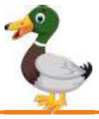	7. छत्तं – छत्र 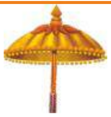
8. णाविओ – नाई 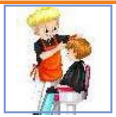	8. कुक्कुडी – मुर्गी 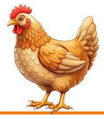	8. जलं – पानी 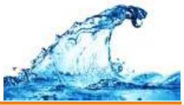
9. पुरिसो – पुरुष 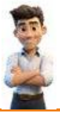	9. पिवीलिया – चींटी 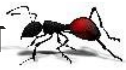	9. तेल्लं – तेल 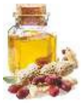
10. भल्लुओ – भालू	10. लूआ – मकड़ी	10. दुद्धं – दूध

लिङ भेद वाक्य

	इमो को ?		इमा का ?		इमं किं ?	
1.	इमो आसो । यह घोड़ा है।	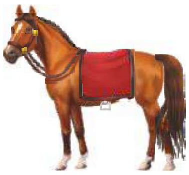	इमा इत्थी । यह स्त्री है।	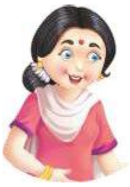	इमं अम्बं । यह आम है।	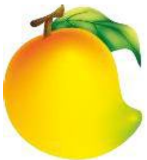
2.	इमो ईसरो । यह ईश्वर है।	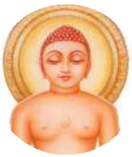	इमा गावी । यह गाय है।	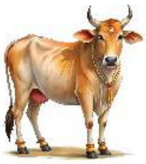	इमं ऊलूखलं । यह ऊखल है।	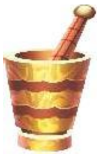
3.	इमो उसभो । यह बैल है।	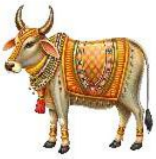	इमा फुल्लगब्भी। यह फूलगोभी है।	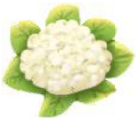	इमं ओज्झरं । यह झरना है।	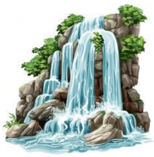
4.	इमो एगदंतो। यह गणेशजी हैं।	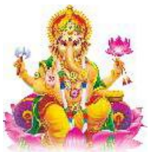	इमा मज्जारी। यह बिल्ली है।	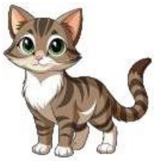	इमं खेत्तं । यह खेत है।	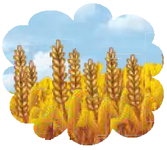
5.	इमो कण्णो । यह कान है।	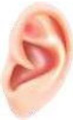	इमा चडया। यह चिडिया है।	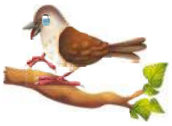	इमं घरं । यह घर है।	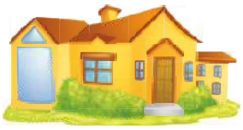

अब्भासो-अभ्यास

(ऊपर पुल्लिंग, स्त्रीलिंग व नपुंसकलिंग के 5-5 शब्द दिए हैं। शेष बचे 5-5 शब्दों के प्राकृत वाक्य आप स्वयं बनाएं।)

उदाहरण:

चोटी	इमो टंको	मैना	....	चक्र	....
डण्डा	....	बत्तख	....	छत्र	....
नाई	....	मुर्गी	....	पानी	....
पुरुष	....	चींटी	....	तेल	....
भालू	....	मकड़ी	....	दूध	....

लिङ्ग (Gender) बताएं

1. भमरो (भ्रमर) ....
2. सेव्वं (सेब) ....
3. संतिहरं (संतरा) ....
4. सुणओ (कुत्ता) ....
5. अया (बकरी) ....
6. एलया (भेड़) ....
7. भिण्डं (भिण्डी) ....
8. गद्दहो (गधा) ....
9. गावी (गाय) ....
10. मिगो (हिरण) ....
11. सीहो (शेर) ....
12. कयलं (केला) ....
13. दाडिमं (अनार) ....
14. पपीयं (पपीता) ....
15. अमियफलं (नाशपाती) ....
16. गिंजणं (गाजर) ....
17. रत्तंगं (टमाटर) ....
18. मरीअं (मिर्च) ....
19. छत्तं (छतरी) ....
20. गेन्दुअं (गेंद) ....
21. मसगो (मच्छर) ....
22. मच्छिआ (मक्खी) ....
23. मोरो (मोर) ....
24. कागो (कौआ) ....
25. उलूओ (उल्लू) ....
26. कवोओ (कबूतर) ....
27. गओ (हाथी) ....
28. पालयं (पालक) ....
29. कलायं (मटर) ....
30. दक्खाफलं (अंगूर) ....
31. अणिण्णास (अनानास) ....
32. उट्टो (ऊंट) ....
33. गिद्धो (गीध) ....
34. गरुलो (गरुड) ....
35. कंकारुहो (कंगारू) ....
36. कच्छभो (कछुआ) ....
37. संगणगो (कम्प्यूटर) ....
38. पोत्थयं (पुस्तक) ....
39. सीसग-लेहणी (पेन्सिल) ....
40. दुचक्कं (साइकिल) ....

पाढो 5 वयणं

पाठ 5 वचन

A संस्कृत भाषा में वचन के 3 भेद होते हैं, एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। किन्तु प्राकृत में हिन्दी भाषा की तरह एकवचन व बहुवचन ऐसे दो ही वचन होते हैं।

पुल्लिंग

एकवचन	बहुवचन
एगो आसो – एक घोड़ा। 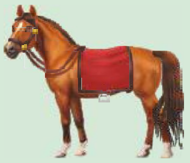	अणेगे आसा – अनेक घोड़े। 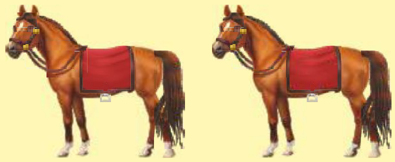
एगो ईसरो – एक ईश्वर। 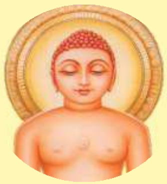	अणेगे ईसरा – अनेक ईश्वर। 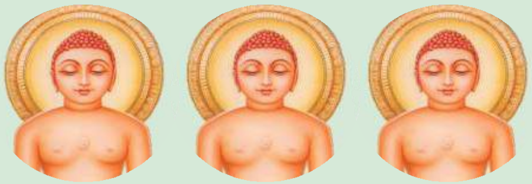
एगो उसभो – एक बैल। 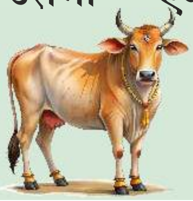	अणेगे उसभा – अनेक बैल। 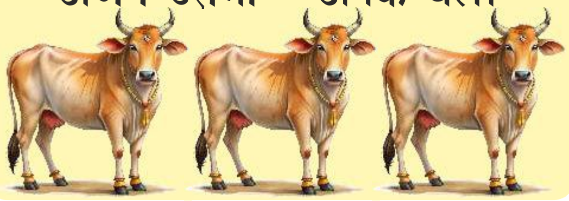
एगो एगदंतो – एक गणेश जी। 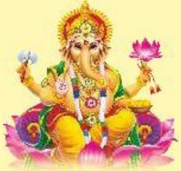	अणेगे एगदंता – अनेक गणेश जी। 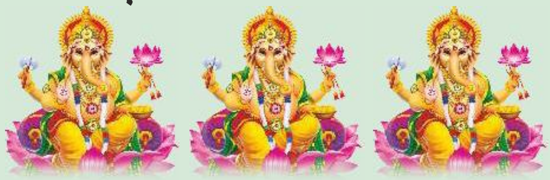
एगो कण्णो – एक कान। 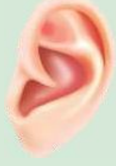	अणेगे कण्णा – अनेक कान। 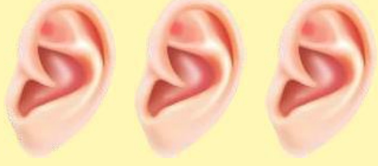

अब्भासो-अभ्यास

निम्नचित्रित चित्रों को देखें व प्राकृत भाषा में वाक्य बनाएं।

उदाहरण :

एक चोटी - एगो टंको ।

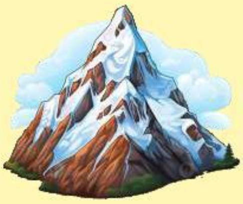

………………………………………………।

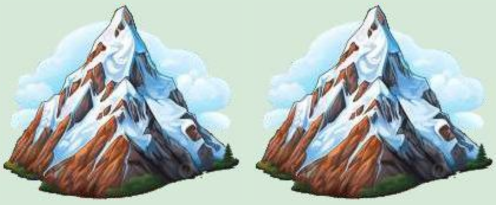

………………………………………………।

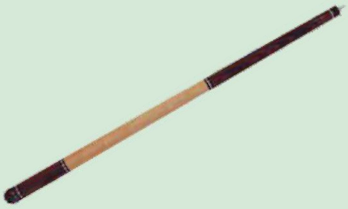

………………………………………………।

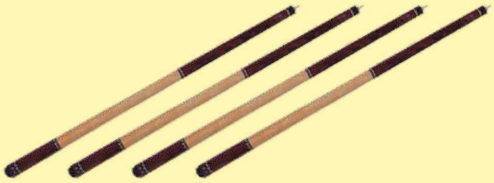

………………………………………………।

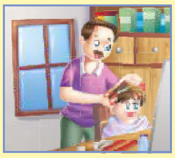

………………………………………………।

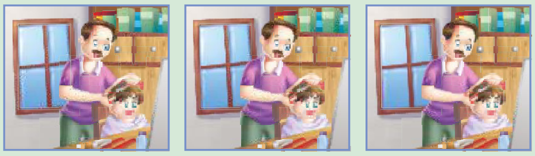

………………………………………………।

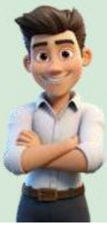

………………………………………………।

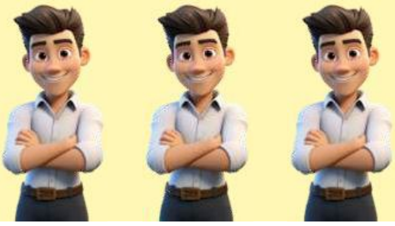

………………………………………………।

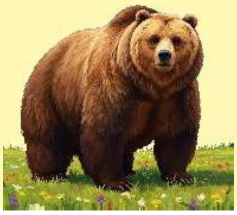

………………………………………………।

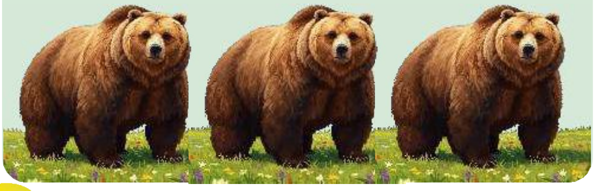

B

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन	बहुवचन
एगा इत्थी। – एक स्त्री। 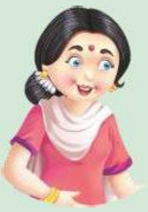	अणेगाओ इत्थीओ। – अनेक स्त्रियां। 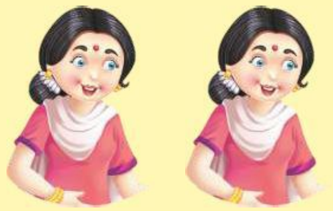
एगा गावी। – एक गाय। 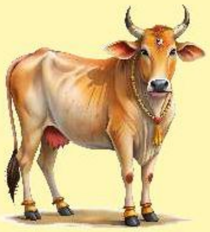	अणेगाओ गावीओ। – अनेक गायें। 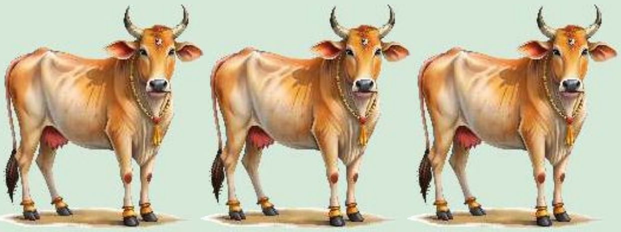
एगा फुल्लगब्भी। – एक फूलगोभी। 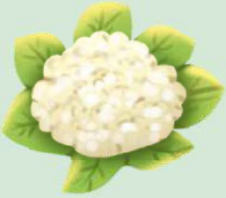	अणेगाओ फुल्लगब्भीओ। –अनेक फूलगोभियां। 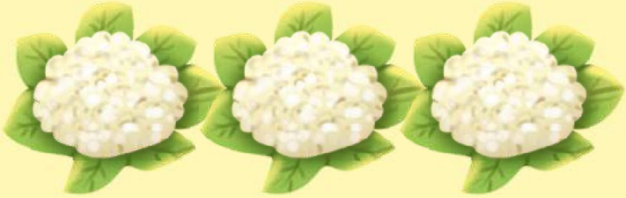
एगा मज्जारी। – एक बिल्ली। 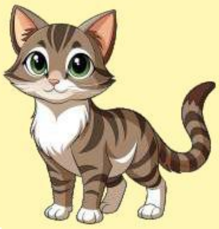	अणेगाओ मज्जारीओ। – अनेक बिल्लियां। 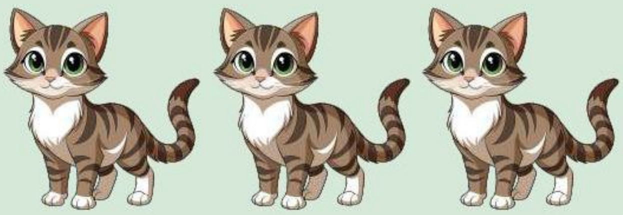
एगा चडया। – एक चिडिया। 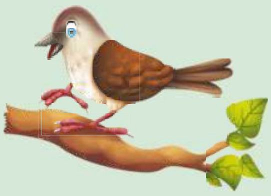	अणेगाओ चडयाओ – अनेक चिडियां। 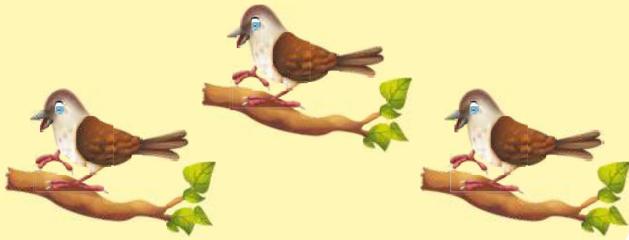

अब्भासो-अभ्यास

चित्र को देखें तथा प्राकृत भाषा में वाक्य बनाएं।

....

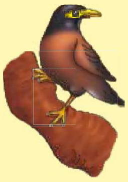

....।

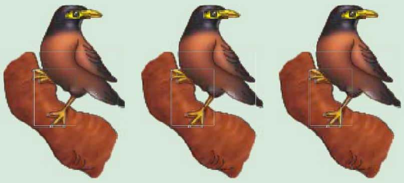

....।

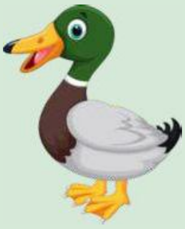

....।

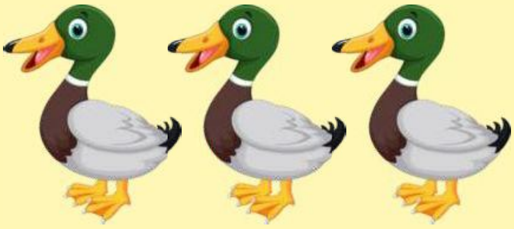

....।

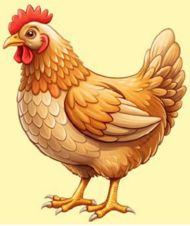

....।

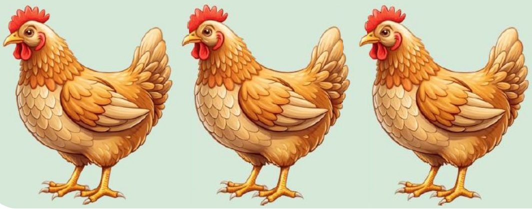

....।

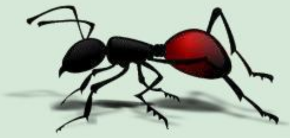

....।

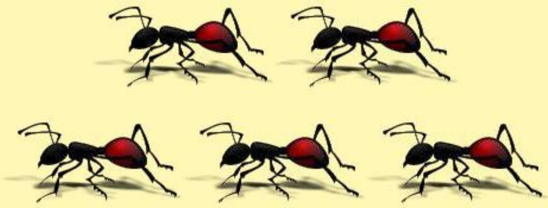

....।

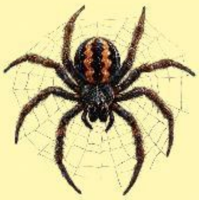

....।

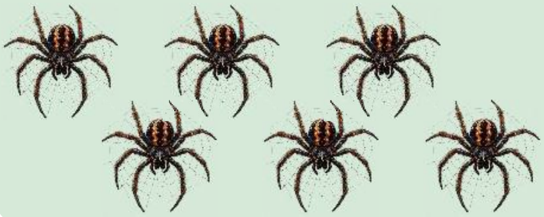

C

नपुंसक लिंग

एकवचन	बहुवचन
एगं अंबं – एक आम। 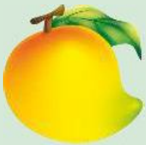	अणेगाणि अम्बाणि–अनेक आम। 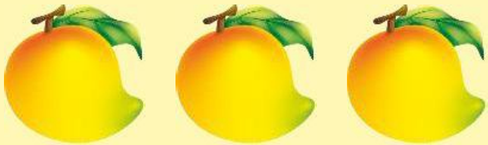
एगं ऊलूखलं – एक ऊखल। 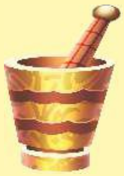	अणेगाणि ऊलूखलाणि–अनेक ऊखलें। 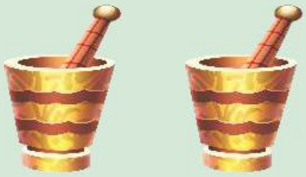
एगं ओज्झरं – एक झरना। 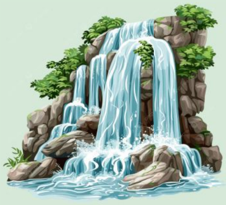	अणेगाणि ओज्झराणि – अनेक झरने। 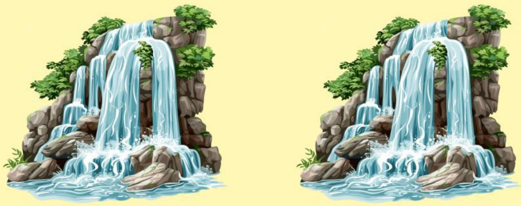
एगं खेत्तं – एक खेत। 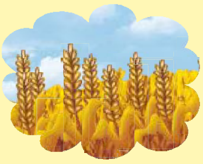	अणेगाणि खेत्ताणि – अनेक खेत। 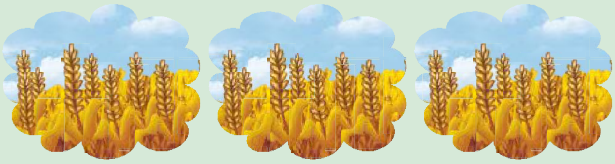
एगं घरं – एक घर। 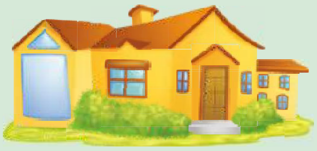	अणेगाणि घराणि – अनेक घर। 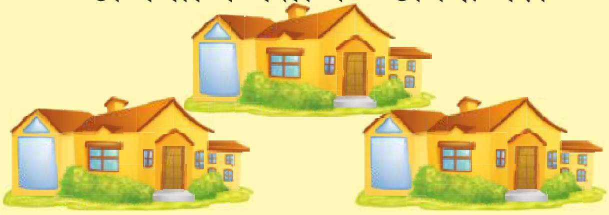

सूचना – बहुवचन में अणेगाणि की जगह अणेगाइं व अम्बाणि की जगह अंबाइं भी आ सकता है, ऐसा ही नपुंसकलिंग के सभी बहुवचन वाले शब्दों में समझ लेना चाहिए।

अब्भासो-अभ्यास

चित्र को देखें तथा प्राकृत भाषा में वाक्य बनाएं।

....

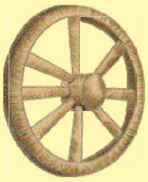

....।

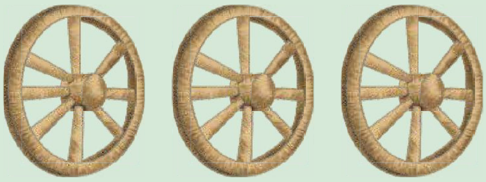

....।

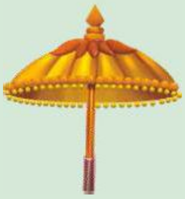

....।

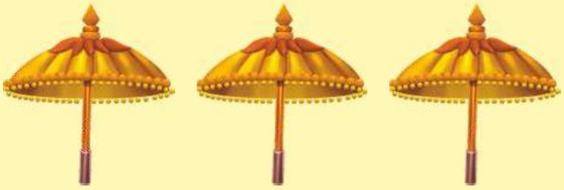

....।

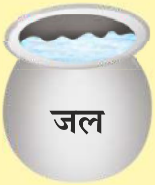

....।

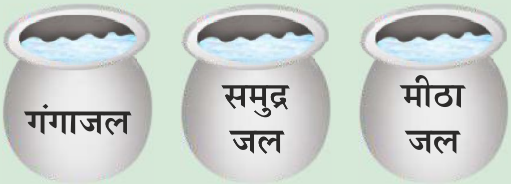
गंगाजल
समुद्र जल
मीठा जल

....।

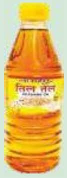

....।

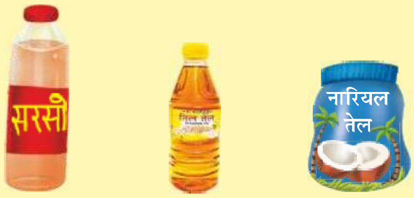
सरसों
तिल तेल
नारियल तेल

....।

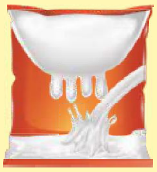

....।

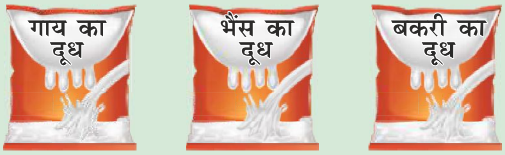
गाय का दूध
भैंस का दूध
बकरी का दूध

अब्भासो-अभ्यास

शब्द	अर्थ	बहुवचन
1. भमरो		
2. सेव्वं		
3. संतिहरं		
4. सुणओ		
5. अया		
6. एलया		
7. भिण्डं		
8. गद्दहो		
9. गावी		
10. मिगो		
11. सीहो		
12. कयलं		
13. दाडिमं		
14. पपीयं		
15. अमियफलं		
16. गिंजणं		
17. रत्तंगं		
18. मरीअं		
19. छत्तं		
20. गेन्दुअं		

शब्द	अर्थ	बहुवचन
1. मसगो		
2. मच्छिआ		
3. मोरो		
4. कागो		
5. उलूओ		
6. कवोओ		
7. गओ		
8. पालयं		
9. कलायं		
10. दक्खाफलं		
11. अणिण्णासं		
12. उट्टो		
13. गिद्धो		
14. गरुलो		
15. कंकारुहो		
16. कच्छभो		
17. संगणगो		
18. पोत्थयं		
19. सीसग लेहणी		
20. दुचक्कं		

पाढो
पाठ
6

संखा वक्का य
संख्या और वाक्य

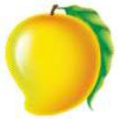	एगं अम्बं अत्थि।	एक आम है।
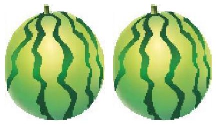	बे कालिंदाणि संति।	दो तरबूज हैं।
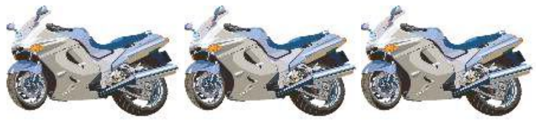	तिण्णि वाहगाणि संति।	तीन मोटर साइकिल हैं।
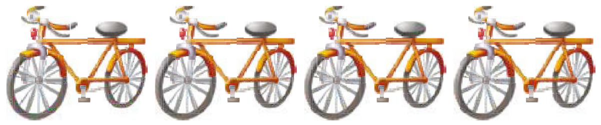	चत्तारि दुचक्काणि संति।	चार साइकिल हैं।
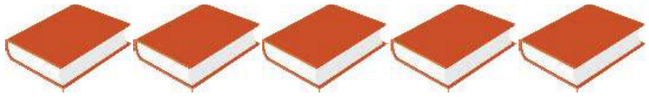	पंच पोत्थआणि संति।	पांच पुस्तकें हैं।
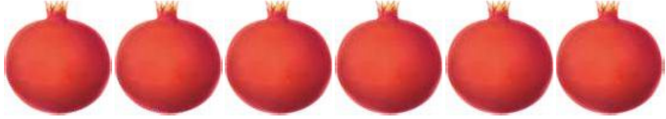	छह/छ दाडिमाणि संति।	छः अनार हैं।
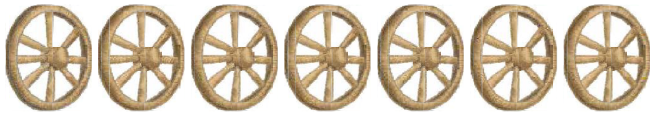	सत्त चक्काणि संति।	सात चक्र हैं।
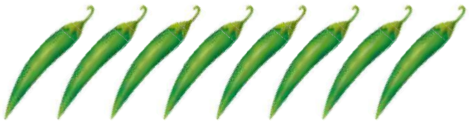	अट्ठ मरीआणि संति।	आठ मिर्चें हैं।
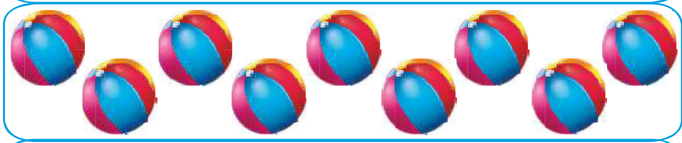	नव गेन्दुआणि संति।	नो गेंदें हैं।
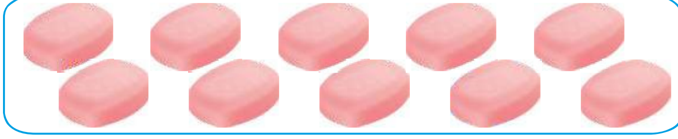	दह (दस) कक्काणि संति।	दस साबुनें हैं।

सूचना– प्राकृत में अम्बं का अर्थ है एक आम व अम्बाणि (अम्बाइं) का अर्थ है अनेक आम। यानि कि अम्बं एकवचन है व अम्बाणि (अम्बाइं) बहुवचन है। इसी तरह कालिंदं – कालिंदाणि, वाहगं – वाहगाणि आदि शब्द समझने चाहिए।

अब्भासो-अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के प्राकृत व हिन्दी में उत्तर लिखें।

कइ = कितने / अत्थि = है / संति = हैं।

⊙ कइ अम्बाणि संति? – एगं अम्बं अत्थि।

– कितने आम हैं ? – एक आम है।

⊙ कइ कालिंदाणि संति? – ....

– कितने तरबूज हैं? – ....

⊙ कइ वाहगाणि संति? – ....

– कितने मोटर साइकिल हैं? – ....

⊙ कइ दुचक्काणि संति ? – ....

– कितने साइकिल हैं? – ....

⊙ कइ पोत्थयाणि संति ? – ....

– कितनी पुस्तकें हैं? – ....

⊙ कइ दाडिमाणि संति ? – ....

– कितने अनार हैं? – ....

⊙ कइ चक्काणि संति ? – ....

– कितने चक्र हैं? – ....

⊙ मरीआणि कइ संति ? – ....

– मिर्चें कितनी हैं? – ....

⊙ कइ गेन्दुआणि संति ? – ....

– कितनी गेंदें हैं ? – ....

⊙ कइ कक्काणि संति ? – ....

– कितनी साबुनें हैं ? – ....

पाढो
पाठ 7

मम परिचयो
मेरा परिचय

हे मित्र!	हे मित्तो!
मेरा नाम रूपम् है।	मम नामं/अभिहाणं रूवं अत्थि।
मैं बालक हूं।	अहं बालो अम्हि।
मेरी आयु 5 वर्ष है।	अहं पंचवरिसायू अम्हि।
मेरी माता श्रीमती रमा जैन हैं।	मम माअरा सिरीमई रमा जेण अत्थि।
मेरे पिता श्रीमान् रमण जैन हैं।	मम पिअरो सिरीमं रमणो जेण अत्थि।
मेरी बहन रूपाली जैन है।	मम भगिणी/बहिणी रूवाली जेण अत्थि।
मेरा प्रिय मित्र देवम् है।	मम पियं मित्तं देवं अत्थि।
मेरे स्कूल का नाम ‘प्राकृत पाठशाला’ है।	मम विज्जालयस्स नामं ‘पाइअ पाढसाला’ अत्थि।
मैं प्रथम कक्षा में पढ़ता हूं।	अहं पढम-कक्खाए पढामि।
मैं प्राकृत विद्या भी पढ़ता हूं।	अहं पाइअविज्जं वि पढामि।
मैं प्रतिदिन भगवान को नमन करता हूं।	अहं पइदिणं पहुं नमामि।
मेरा फोन नम्बर 98132.......... है।	मम दूरभासस्स कमंको 98132.......... अत्थि।

अब्भासो-अभ्यास

रित्त-ठाणाइं – रिक्तस्थान (यहां रूपम् का या अपना परिचय लिखें)

★ मम नाम .... अत्थि।

★ अहं .... अम्हि। (बालो/बाला)

★ अहं .... अम्हि। (आयु)

★ मम माअरा .... अत्थि।

★ मम पियं मित्तं .... अत्थि।

★ अहं .... वि पढामि।

★ मम दूरभासस्स कमंको .... अत्थि।

पाढो
पाठ
8

वक्क रयणा – उत्तम परिसो
वाक्य रचना – उत्तम पुरुष

कर्त्ता (कार्य को करने वाला)

तीन तरह के कर्त्ता होते हैं–

मैं, हम
(उत्तम पुरुष)

तू, तुम
(मध्यम पुरुष)

वह, वे
(अन्य पुरुष)

A. जब आप कोई बात कहते हैं तो या तो आप खुद के बारे में कहते हैं जैसे– 'मैं आम खाता हूं।' (अहं अम्बं खामि।)

B. या फिर आप सामने वाले से बात कहते हैं कि 'तुम आम खाते हो।' (तुमं अम्बं खासि।)

C. या फिर आप अन्य के बारे में बात कहेंगे। जैसे– 'वह आम खाता है।' (सो अम्बं खाइ।)

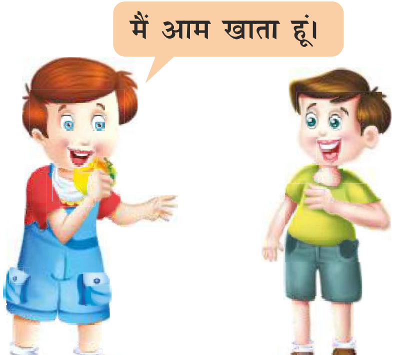

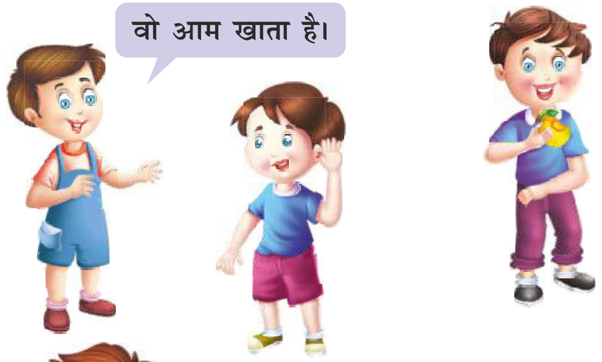

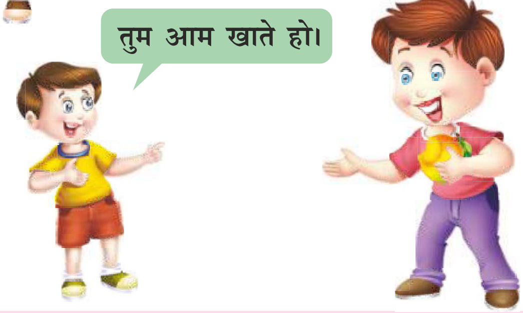

- जैसे हिन्दी भाषा में ऊपर दिए गए वाक्यों में 'हूं' 'हो' 'है' का फर्क है, ऐसे ही प्राकृत भाषा में भी उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष के वाक्यों में कुछ-कुछ अंतर होता है। आगे के पृष्ठों में आप वही अंतर देखें।

क्रिया शब्द याद कीजिए

एकवचन–(Singular)

1
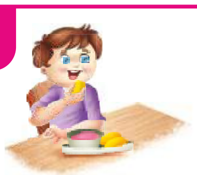
खामि–खाता हूं।

2
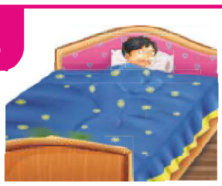
सयामि–सोता हूं।

3
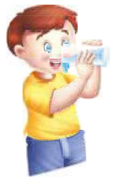
पिबामि–पीता हूं

4
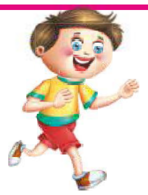
धावामि–दौड़ता हूं।

5
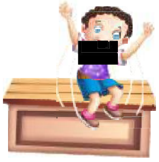
[redacted]
कुद्दामि–कूदता हूं।

6
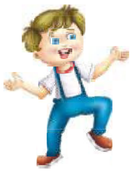
नच्चामि–नाचता हूं।

7
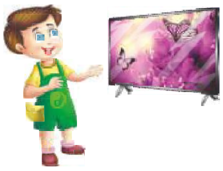
पासामि–देखता हूं।

8
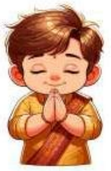
नमामि–नमस्कार करता हूं।

9
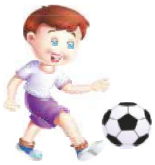
खेलामि–खेलता हूं।

10
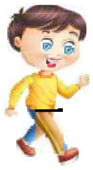
गच्छामि–जाता हूं।

बहुवचन–(Plural)

खामो–(हम) खाते हैं।
सयामो–(हम) सोते हैं।
पिबामो–(हम) पीते हैं।
धावामो–(हम) दौड़ते हैं।
कुद्दामो–(हम) कूदते हैं।
नच्चामो– हम नाचते हैं।
पासामो–(हम) देखते हैं।
नमामो–(हम) नमन करते हैं।
खेलामो–(हम) खेलते हैं।
गच्छामो– (हम)जाते हैं।

सूचना–

- प्राकृत भाषा में 'मैं' की जगह 'अहं' का प्रयोग करें व हम की जगह 'अम्हे' का प्रयोग करें।
- तुम/तू एकवचन की जगह 'तुमं' का व 'तुम' (बहुवचन) के स्थान पर 'तुम्हे' का प्रयोग करें।
- 'वह' के लिए 'सो' तथा 'वे' के लिए 'ते' का प्रयोग करें।

★ ★ ★

- प्राकृत भाषा में कुछ क्रियाएं हिन्दी व पंजाबी भाषा से मिलती जुलती है। जैसे खेल=खेलना। ऊपर जो क्रियाएं दी हैं, इन शब्दों का प्रयोग इसी रूप में नहीं होगा। अहं, अम्हे, तुमं, तुम्हे, सो तथा ते के साथ यह क्रिया–शब्द अलग–अलग रूप में प्रयुक्त होगा। जैसे–

  अहं खामि। तुमं खासि। सो खाइ।
  अम्हे खामो। तुम्हे खाइत्था। ते खान्ति।

उत्तम पुरुष/एकवचन

मैं **अहं**

बालओ=बच्चा

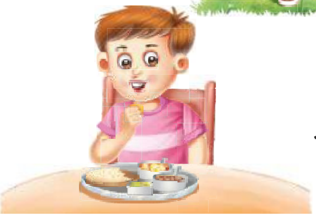

1. अहं खामि – मैं खाता हूं।

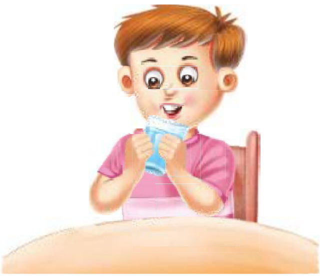

2. अहं पिवामि – मैं पीता हूं।

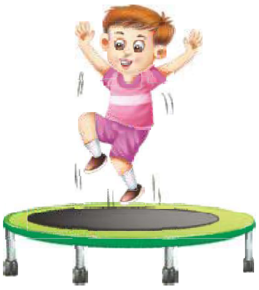

3. अहं कुद्दामि – मैं कूदता हूं।

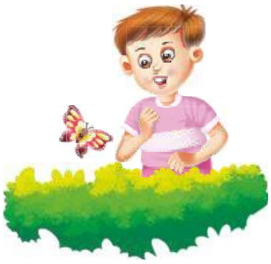

4. अहं पासामि – मैं देखता हूं।

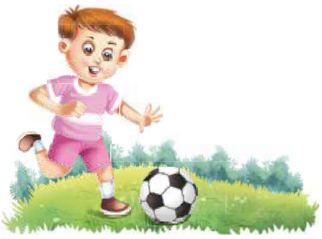

5. अहं खेलामि – मैं खेलता हूं।

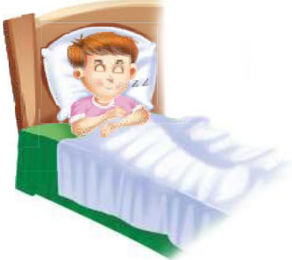

6. अहं सयामि – मैं सोता हूं।

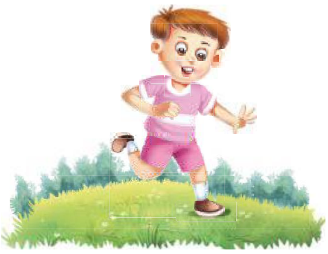

7. अहं धावामि – मैं दौड़ता हूं।

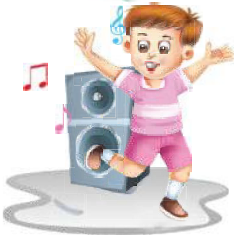

8. अहं नच्चामि – मैं नाचता हूं।

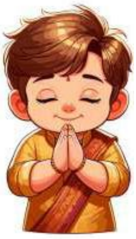

9. अहं नमामि – मैं नमस्कार करता हूं।

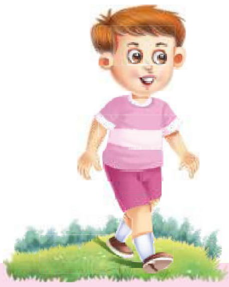

10. अहं गच्छामि – मैं जाता हूं।

सूचना–

- उत्तम पुरुष एकवचन में क्रिया के साथ 'आमि' लगता है– जैसे-पिव (क्रिया) + आमि = पिवामि। इसी तरह सभी धातुओं (क्रियाओं) का रूप बनता है।

उत्तम पुरुष/बहुवचन

हम **अम्हे**

बालया=बच्चे

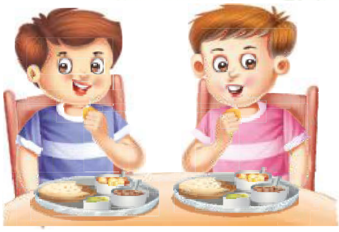

1. अम्हे खामो – हम खाते हैं।

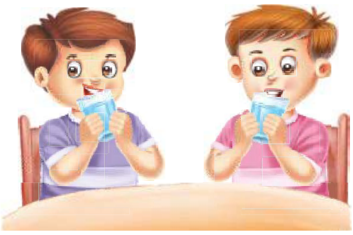

2. अम्हे पिवामो – हम पीते हैं।

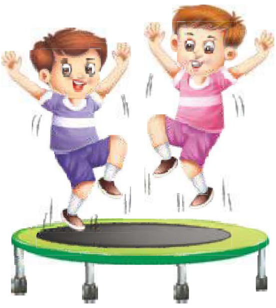

3. अम्हे कुद्दामो – हम कूदते हैं।

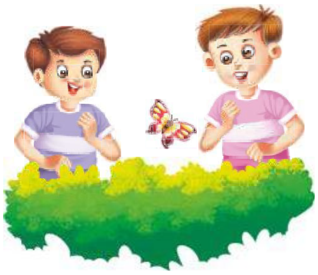

4. अम्हे पासामो – हम देखते हैं।

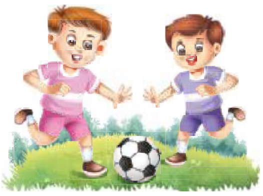

5. अम्हे खेलामो – हम खेलते हैं।

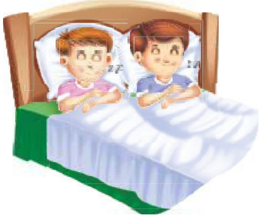

6. अम्हे सयामो – हम सोते हैं।

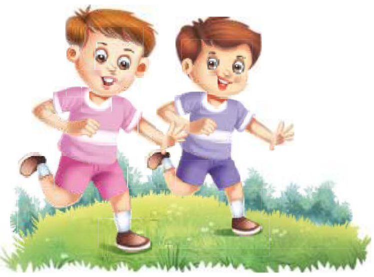

7. अम्हे धावामो – हम दौड़ते हैं।

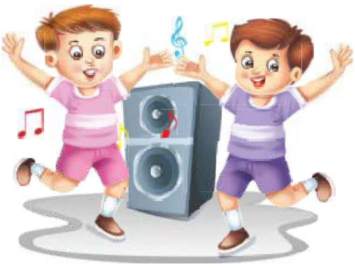

8. अम्हे नच्चामो – हम नाचते हैं।

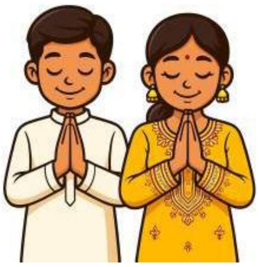

9. अम्हे नमामो – हम नमस्कार करते हैं।

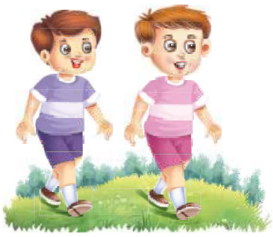

10. अम्हे गच्छामो – हम जाते हैं।

सूचना–

- उत्तम पुरुष बहुवचन में क्रिया के साथ 'आमो' लगता है– जैसे– खा (क्रिया) + आमो – खामो। पिव – पिवामो। अन्य क्रियाओं का रूप भी इसी तरह बनाना है।

अब्भासो-अभ्यास

A. हिन्दी अर्थ लिखिए–

1. अहं खामि – ....
2. अम्हे खामो – ....
3. अहं पिवामि – ....
4. अहं खेलामि – ....
5. अहं सयामि – ....
6. अम्हे नच्चामो – ....
7. अहं नमामि – ....
8. अम्हे पासामो – ....
9. अहं गच्छामि – ....
10. अम्हे कुद्दामो – ....

B. सही और गलत का निर्णय करें– ✓ or ×

1. अहं पिवामो । ☐
2. अम्हे सयामि । ☐
3. अम्हे नच्चामो । ☐
4. अहं गच्छामो । ☐
5. अम्हे पिवामो । ☐
6. अम्हे धावामि । ☐
7. अम्हे कुद्दामो । ☐
8. अहं पासामो । ☐
9. अम्हे नमामि । ☐
10. अहं गच्छामि । ☐

C. प्राकृत बनाओ–

1. मैं जाता हूं। ....
2. मैं खाता हूं। ....
3. मैं नमन करता हूं। ....
4. मैं देखता हूं। ....
5. मैं कूदता हूं। ....
6. हम देखते हैं। ....
7. हम दौड़ते हैं। ....
8. हम खेलते हैं। ....
9. हम पीते हैं। ....
10. हम नाचते हैं। ....

पाढो पाठ 9

वक्क रयणा – मज्झिम पुरिसो
वाक्य रचना – मध्यम पुरुष

क्रिया शब्द याद कीजिए

एकवचन–(Singular)

1
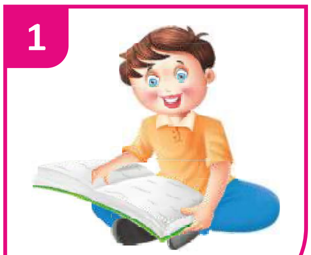
पढसि–(तू) पढ़ता है।

2
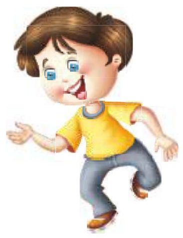
नच्चसि–(तू) नाचता है।

3
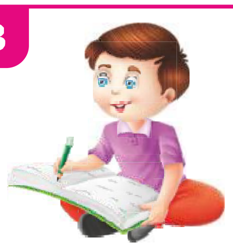
लिहसि–(तू) लिखता है।

4
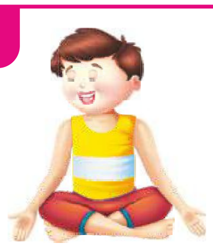
झासि–(तू) ध्यान करता है।

5
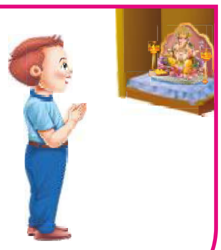
अच्चसि–(तू) अर्चा करता है।

6
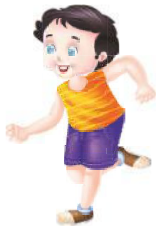
धावसि–(तू) दौड़ता है।

7
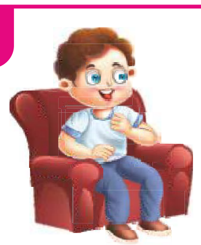
चिट्ठसि–(तू) बैठता है।

8
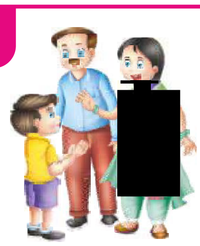
[redacted]
वंदसि–(तू) वंदना करता है।

9
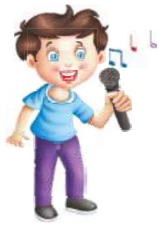
गायसि–(तू) गाता है।

10
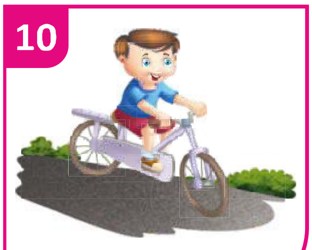
सिक्खसि–(तू) सीखता है।

बहुवचन–(Plural)

पढित्था–(तुम) पढ़ते/पढ़ती हो।
नच्चित्था–(तुम) नाचते/नाचती हो।
लिहित्था–(तुम) लिखते हो।
झाइत्था–(तुम) ध्यान करते हो।
अच्चित्था–(तुम) अर्चा करते हो।
धावित्था–(तुम) दौड़ते हो।
चिट्ठित्था–(तुम) बैठते हो।
वंदित्था–(तुम) वंदन करते हो।
गाइत्था–(तुम) गाते हो।
सिक्खित्था–(तुम) सीखते हो।

सूचना–

- बहुवचन (Plural) बनाने के लिए 'इत्था' की बजाय सिर्फ 'ह' का भी प्रयोग होता है जैसे – पढह, लिहह, अच्चह। इनके भी वही अर्थ है, जो पढित्था, लिहित्था, अच्चित्था आदि के हैं।

मध्यम पुरुष/एकवचन

तू / तुम = तुमं

प्राकृत Classes
अ = अम्बं
आ = आसो

तुमं बालो असि/तुम बच्चे हो

1. तुमं पढसि - तुम पढ़ते हो।
2. तुमं लिहसि - तुम लिखते हो।
3. तुमं अच्चसि - तुम अर्चा करते हो।
4. तुमं चिट्ठसि - तुम बैठते हो।
5. तुमं गायसि - तुम गाते हो।
6. तुमं नच्चसि - तुम नाचते हो।
7. तुमं झासि - तुम ध्यान करते हो।
8. तुमं धावसि - तुम दौड़ते हो।
9. तुमं वंदसि - तुम वंदन करते हो।
10. तुमं सिक्खसि - तुम सीखते हो।

सूचना–

- मध्यम पुरुष एकवचन में क्रिया के साथ ‘सि’ लगाएं– जैसे– पढ+सि = पढसि।

मध्यम पुरुष/बहुवचन

तुम = **तुम्हे**

प्राकृत Classes
अ = अम्बं
आ = आसो

1. तुम्हे पढित्था - तुम पढ़ते हो।
2. तुम्हे लिहित्था - तुम लिखते हो।
3. तुम्हे अच्चित्था - तुम अर्चा करते हो।
4. तुम्हे चिट्ठित्था - तुम बैठते हो।
5. तुम्हे गायित्था - तुम गाते हो।
6. तुम्हे नच्चित्था - तुम नाचते हो।
7. तुम्हे झाइत्था - तुम ध्यान करते हो।
8. तुम्हे धावित्था - तुम दौड़ते हो।
9. तुम्हे वंदित्था - तुम वंदन करते हो।
10. तुम्हे सिक्खित्था - तुम सीखते हो।

सूचना–
- मध्यम पुरुष बहुवचन में क्रिया के साथ 'इत्था' लगाएं– जैसे– पढ+इत्था = पढित्था।

अब्भासो-अभ्यास

A. हिन्दी अर्थ लिखिए–

1.तुमं पढसि। – ....
2.तुम्हे अच्चित्था। – ....
3.तुमं लिहसि। – ....
4.तुम्हे चिट्ठित्था। – ....
5.तुमं गायसि। – ....
6.तुम्हे नच्चित्था। – ....
7.तुमं झासि। – ....
8.तुम्हे धावित्था। – ....
9.तुमं वंदसि। – ....
10.तुम्हे सिक्खित्था। – ....

B. सही और गलत का निर्णय करें–

✓ or ✗

1.तुमं लिहित्था। ☐
2.तुम्हे पढसि। ☐
3.तुम्हे गायसि। ☐
4.तुमं नच्चसि। ☐
5.तुम्हे झामि। ☐
6.तुमं वंदसि। ☐
7.तुम्हे सिक्खित्था। ☐
8.तुम्हे धावसि। ☐
9.तुमं गायसि। ☐
10.तुम्हे लिहित्था। ☐

C. प्राकृत बनाओ–

(एकवचन के वाक्य)

1.तू पढ़ता है। ....
2.तू दौड़ता है। ....
3.तू वंदन करता है। ....
4.तू ध्यान करता है। ....
5.तू बैठता है। ....

(बहुवचन के वाक्य)

6. तुम नाचते हो। ....
7. तुम पूजा करते हो। ....
8. तुम गाते हो। ....
9. तुम लिखते हो। ....
10. तुम सीखते हो। ....

पाढो
पाठ
10

वक्क रयणा – अण्ण परिसो
वाक्य रचना – अन्य पुरुष

क्रिया शब्द याद कीजिए

एकवचन-(Singular)

1
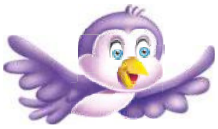
उड्डइ – (वह) उड़ता है।

2
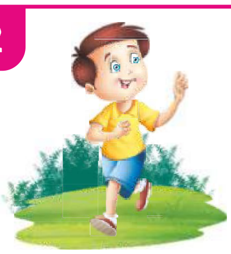
घुम्मइ – घूमता है।

3
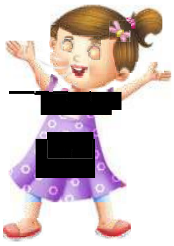
[redacted]
[redacted]
उस्ससइ – सांस लेती है।

4
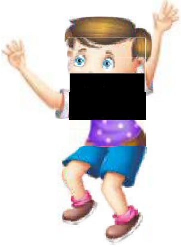
[redacted]
नच्चइ – नाचता है।

5
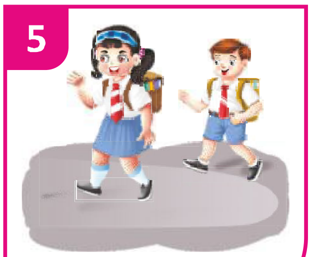
कोक्कइ – बुलाता है।

6
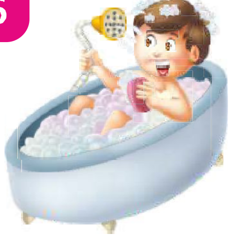
ण्हाइ – नहाता है।

7
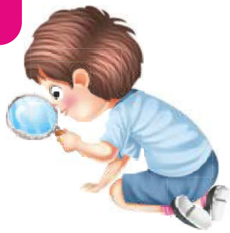
गवेसइ – ढूंढता है।

8
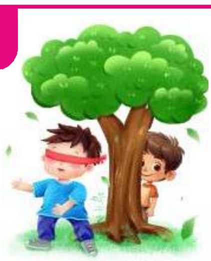
लुक्कइ – छिपता है।

9
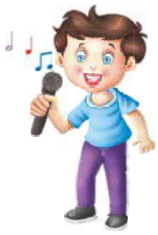
गायइ – गाता है।

10
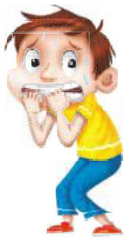
बीहइ – डरता है।

बहुवचन-(Plural)

उड्डंति – उड़ते हैं।

घुम्मंति – भटकते हैं।

उस्ससंति – सांस लेते हैं।

नच्चंति – नाचती हैं।

कोक्कंति – बुलाते हैं।

ण्हांति – नहाते हैं।

गवेसंति – ढूंढते हैं।

लुक्कंति – छिपते हैं।

गायंति – गाते हैं।

बीहंति – डरते हैं।

अन्य पुरुष/एकवचन

सो = वह

1. सो उड्डइ - वह उड़ता है।
2. सो उस्ससइ - वह सांस लेता है।
3. सो कोक्कइ - वह बुलाता है।
4. सो गवेसइ - वह ढूंढता है।
5. सो गायइ - वह गाता है।
6. सो घुम्मइ - वह घूमता है।
7. सो नच्चइ - वह नाचता है।
8. सो ण्हाइ - वह नहाता है।
9. सो लुक्कइ - वह छिपता है।
10. सो बीहइ - वह डरता है।

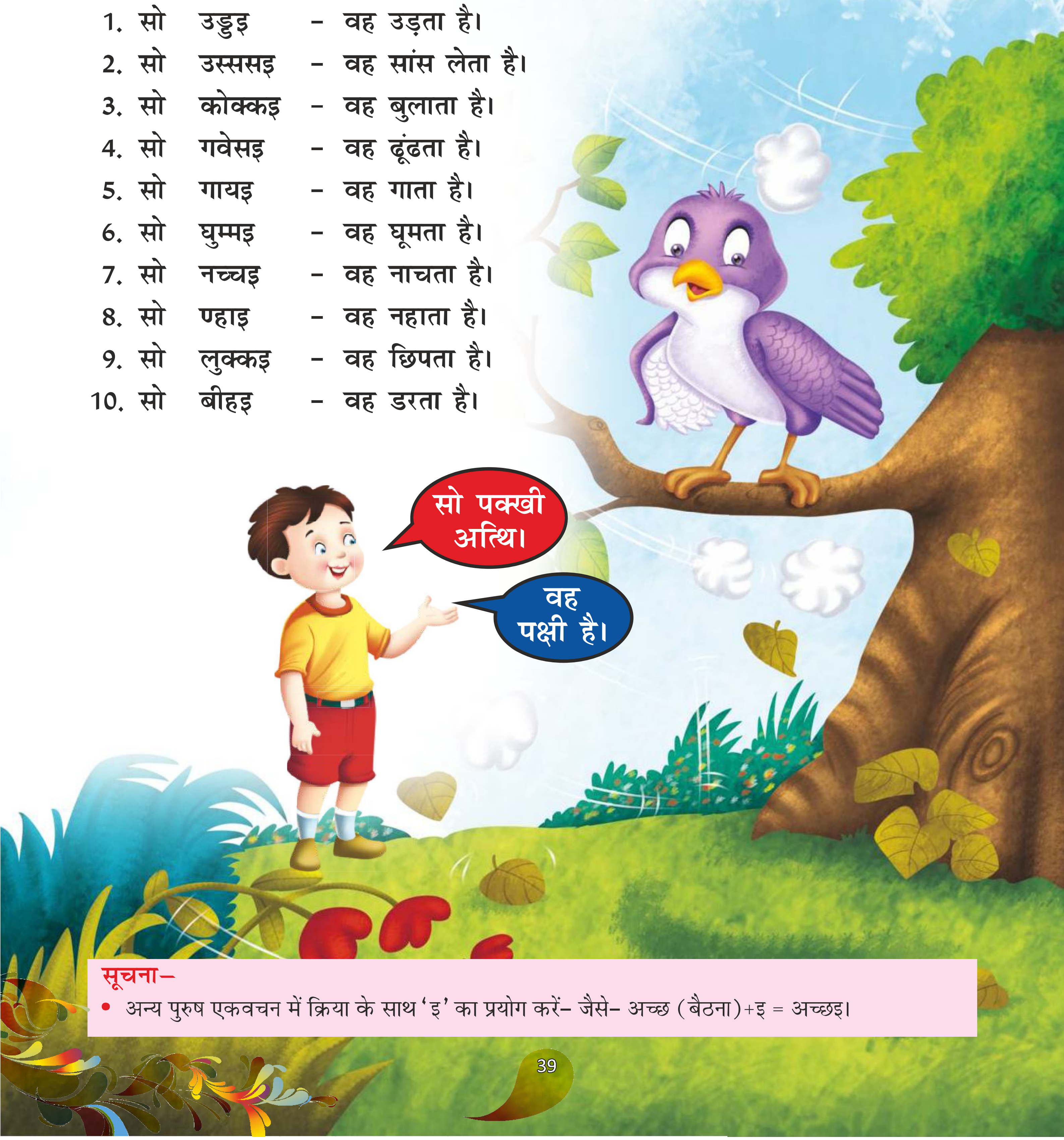
सो पक्खी अत्थि।
वह पक्षी है।

सूचना–

- अन्य पुरुष एकवचन में क्रिया के साथ 'इ' का प्रयोग करें– जैसे– अच्छ (बैठना)+इ = अच्छइ।

अन्य पुरुष/बहुवचन

वे = ते

1. ते उड्डंति - वे उड़ते हैं।
2. ते उस्ससंति - वे सांस लेते हैं।
3. ते कोक्कंति - वे बुलाते हैं।
4. ते गवेसंति - वे ढूंढते हैं।
5. ते गायन्ति - वे गाते हैं।
6. ते घुम्मन्ति - वे घूमते हैं।
7. ते नच्चन्ति - वे नाचते हैं।
8. ते ण्हान्ति - वे नहाते हैं।
9. ते लुक्कन्ति - वे छिपते हैं।
10. ते बीहन्ति - वे डरते हैं।

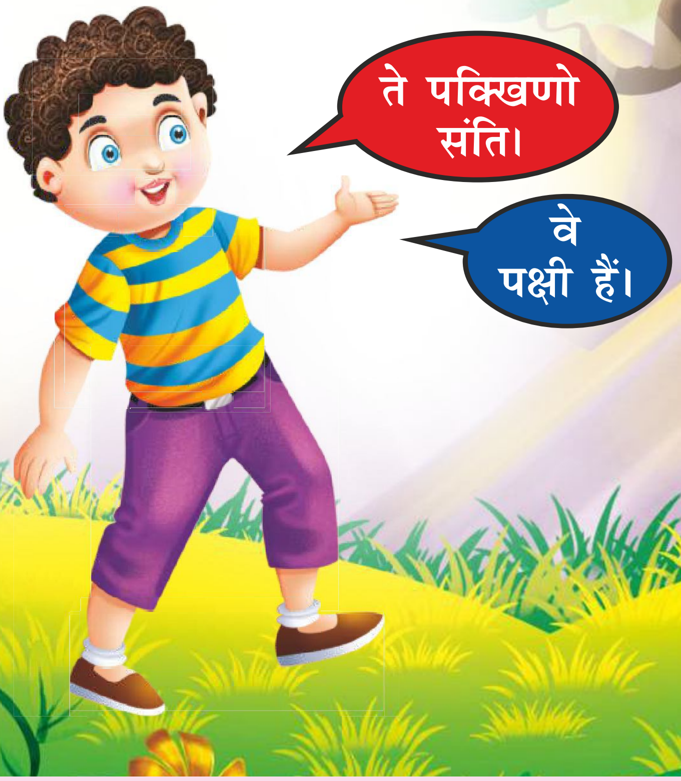
ते पक्खिणो संति।
वे पक्षी हैं।

सूचना–

- अन्य पुरुष बहुवचन में क्रिया के साथ 'न्ति' का प्रयोग करें- जैसे- अच्छ (बैठना)+न्ति = अच्छन्ति।

अब्भासो-अभ्यास

A. हिन्दी अर्थ लिखिए–

1. सो उड्डइ। – ……………………………
2. ते उस्ससंति। – ……………………………
3. सो कोक्कइ। – ……………………………
4. ते गायन्ति। – ……………………………
5. सो गवेसइ। – ……………………………
6. ते नच्चन्ति – ……………………………
7. सो घुम्मइ। – ……………………………
8. ते लुक्कन्ति। – ……………………………
9. सो ण्हाइ। – ……………………………
10. ते बीहन्ति। – ……………………………

B. सही और गलत का निर्णय करें–

✓ or ✗

1. ते उस्ससइ। ☐
2. ते गायन्ति। ☐
3. ते नच्चइ। ☐
4. सो बीहन्ति। ☐
5. सो कोक्कइ। ☐
6. ते घुम्मइ। ☐
7. सो ण्हान्ति। ☐
8. ते गवेसन्ति। ☐
9. ते कोक्कइ। ☐
10. सो नच्चइ। ☐

C. प्राकृत बनाओ–

1. वह सांस लेता है। ……………………………
2. वह गाता है। ……………………………
3. वह नाचता है। ……………………………
4. वह छिपता है। ……………………………
5. वह डरता है। ……………………………
6. वे उड़ते हैं। ……………………………
7. वे बुलाते हैं। ……………………………
8. वे खोजते हैं। ……………………………
9. वे भटकते हैं। ……………………………
10. वे नहाते हैं। ……………………………

पाढो पाठ 11

तओ काला
तीन काल

तीन काल

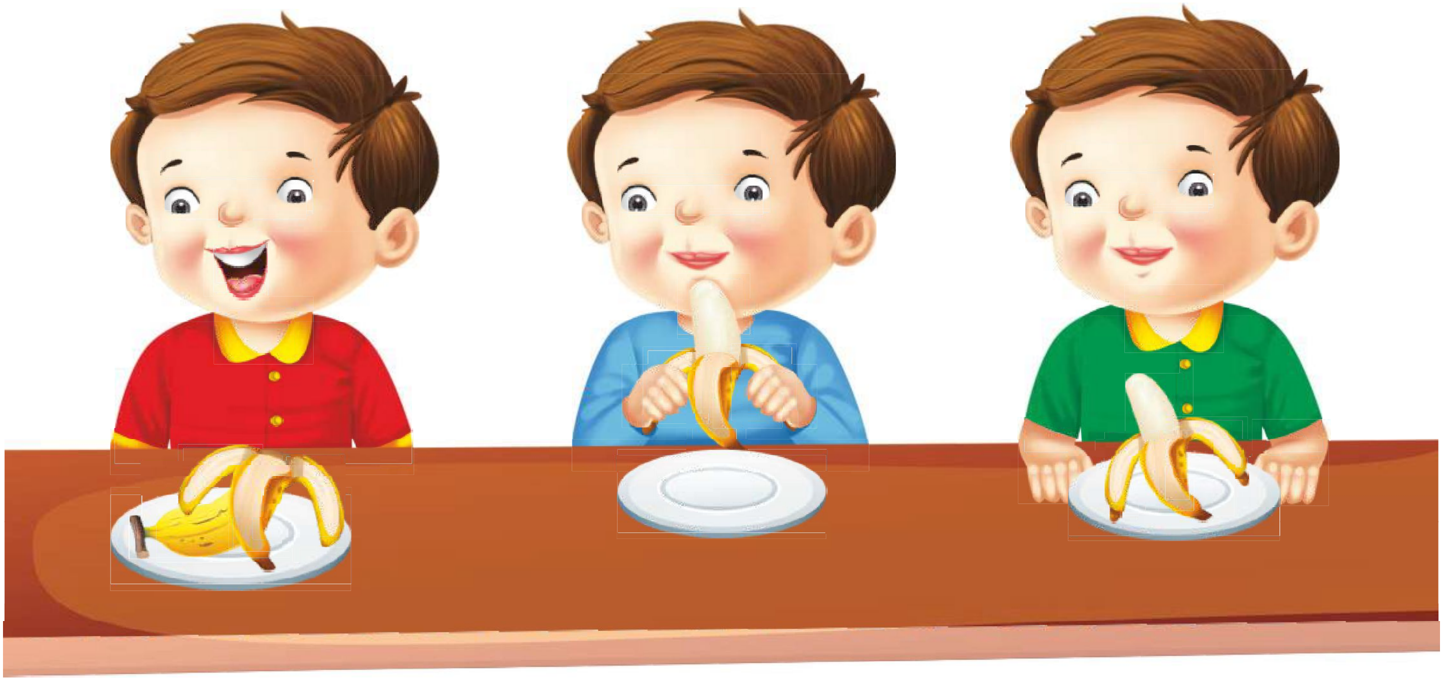

इसने केला खा लिया है।
(अतीत काल)

यह केला खाता है।
(वर्तमान काल)

यह केला खाएगा।
(भविष्य काल)

काल तीन होते हैं- अतीत काल (Past), वर्तमान काल (Present) और भविष्य काल (Future)।

काल की अपेक्षा वाक्यों की रचना भी 3 तरह की होती है। पहले आपने सिर्फ वर्तमान काल के वाक्य सीखे हैं। इस पाठ में वर्तमान काल के साथ आप अतीत काल/भूतकाल व भविष्य काल के वाक्य भी सीखें।

काल के तीन भेद हैं

अतीत काल
Past (खाया)

वर्तमान काल
Present (खाता है)

भविष्य काल
Future (खाएगा)

वर्तमान काल के वाक्य

वर्तमान काल वह काल (समय) है, जो अभी चल रहा है। पिछले पाठों में आप वर्तमान काल के वाक्यों का अध्ययन कर चुके हैं, यहां भी कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं, उनका अभ्यास करें। फिर आगे के पृष्ठों में भूतकाल व भविष्यकाल के वाक्यों का ज्ञान करें।

यह केला खाता है।

1. अहं खामि। - मैं खाता हूं।
2. अहं पिवामि। - मैं पीता हूं।
3. अम्हे खामो। - हम खाते हैं।
4. अम्हे पिवामो। - हम पीते हैं।
5. तुमं खासि। - तुम खाते हो।
6. तुमं पिवसि। - तुम पीते हो ।
7. तुम्हे खाइत्था। - तुम (बहुवचन) खाते हो।
8. तुम्हे पिवित्था। - तुम (बहुवचन) पीते हो।
9. सो खाइ। - वह खाता है।
10. सो पिवइ। - वह पीता है।
11. ते खान्ति। - वे खाते हैं।
12. ते पिबन्ति। - वे पीते हैं।
13. सा खाइ। - वह खाती है।
14. ताओ खान्ति। - वे खाती हैं।
15. इमो खाइ। - यह खाता है।
16. इमा खाइ। - यह खाती है।
17. इमे खान्ति। - ये खाते हैं।
18. इमाओ खान्ति। - ये खाती हैं।
19. को खाइ? - कौन खाता है?
20. के खान्ति? - कौन खाते हैं?
21. का खाइ? - कौन खाती है?
22. काओ खान्ति? - कौन खाती हैं?

अब्भासो-अभ्यास

पहले दिए गए वाक्यों के नकारात्मक (Negative) या प्रश्नात्मक (Interrogative) भाव बनाने हों तो निम्निलिखित रूप बनेंगे।

नकारात्मक – अहं न खामि। अहं न पिवामि।

प्रश्नात्मक – किं अहं खामि? किं अहं पिवामि?

(18 नं. तक सभी वाक्यों के) नकारात्मक व प्रश्नात्मक रूप बनाएं।

	नकारात्मक (Negative)	प्रश्नात्मक (Interrogative)
1.	**अहं न खामि।**	**किं अहं खामि?**
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8.		
9.		
10.		
11.		
12.		
13.		
14.		
15.		
16.		
17.		
18.		

भूतकाल (Past Tense) के वाक्य

भूतकाल वह काल (समय) है, जो बीत चुका है।

सूचना – भूतकाल में अकारान्त क्रिया के साथ 'ईअ' लगाएं।
जैसे भुंज (खाना) + ईअ – भुंजीअ (खाया)

आकारान्त, एकारान्त व ओकारान्त क्रियाओं के साथ 'ही' लगाएं।
जैसे दा (देना) + ही – दाही (दिया)

उत्तम पुरुष – एकवचन

1. अहं इच्छीअ।	मैंने इच्छा की।	6. अहं लिहीअ।	मैंने लिखा।
2. अहं सुणीअ।	मैंने सुना।	7. अहं वसीअ।	मैं रहा।
3. अहं पासीअ।	मैंने देखा।	8. अहं चमक्कीअ।	मैं चमका।
4. अहं नच्चीअ।	मैं नाचा।	9. अहं चुणीअ।	मैंने चुगा।
5. अहं जईअ।	मैं जीता।	10. अहं खणीअ।	मैंने खोदा।

उत्तम पुरुष – बहुवचन

1. अम्हे इच्छीअ।	हमने इच्छा की।	6. अम्हे लिहीअ।	हमने लिखा।
2. अम्हे सुणीअ।	हमने सुना।	7. अम्हे वसीअ।	हम रहे।
3. अम्हे पासीअ।	हमने देखा।	8. अम्हे चमक्कीअ।	हम चमके।
4. अम्हे नच्चीअ।	हम नाचे।	9. अम्हे चुणीअ।	हमने चुगा।
5. अम्हे जईअ।	हम जीते।	10. अम्हे खणीअ।	हमने खोदा।

प्राकृत बनाओ

एकवचन वाले वाक्य

1. मैं पढ़ा ______
2. मैं नाचा ______
3. मैं हंसा ______
4. मैं खेला ______
5. मैंने पीआ ______

बहुवचन वाले वाक्य

6. हम कूदे ______
7. हम सोये ______
8. हम दौड़े ______
9. हमने नमस्कार किया ______
10. हम गए ______

हिन्दी लिखें

1. अम्हे खणीअ। ______
2. अम्हे चुणीअ। ______
3. अम्हे चमक्कीअ। ______
4. अम्हे वसीअ। ______
5. अम्हे लिहीअ। ______
6. अम्हे जईअ। ______
7. अम्हे नच्चीअ। ______
8. अम्हे पासीअ। ______
9. अम्हे सुणीअ। ______
10. अम्हे इच्छीअ। ______
11. अहं इच्छीअ। ______
12. अहं लिहीअ। ______
13. अहं वसीअ। ______
14. अहं सुणीअ। ______
15. अहं पासीअ। ______
16. अहं चुणीअ। ______
17. अहं खणीअ। ______
18. अहं चमक्कीअ। ______
19. अहं नच्चीअ। ______
20. अहं जईअ। ______

भूतकाल (Past Tense) मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष - एकवचन

1.	तुमं उत्तरीअ।	तू नीचे उतरा।	6.	तुमं ठाही।	तू ठहरा।
2.	तुमं सारीअ।	तूने संवारा।	7.	तुमं णेही।	तू ले गया।
3.	तुमं झाही/झासी।	तूने ध्यान किया।	8.	तुमं सेवीअ।	तूने सेवा की।
4.	तुमं अच्चीअ।	तूने पूजा की।	9.	तुमं तुलीअ।	तूने तौला।
5.	तुमं कीणीअ।	तूने खरीदा।	10.	तुमं ढक्कीअ।	तूने ढका।

मध्यम पुरुष - बहुवचन

1.	तुम्हे उत्तरीअ।	तुम उतरे।	6.	तुम्हे ठाही?	तुम ठहरे।
2.	तुम्हे सारीअ।	तुमने संवारा।	7.	तुम्हे णेही?	तुम ले गए।
3.	तुम्हे झाही?	तुमने ध्यान किया।	8.	तुम्हे सेवीअ।	तुमने सेवा की।
4.	तुम्हे अच्चीअ।	तुमने पूजा की।	9.	तुम्हे तुलीअ।	तुमने तौला।
5.	तुम्हे कीणीअ।	तुमने खरीदा।	10.	तुम्हे ढक्कीअ।	तुमने ढका।

प्राकृत बनाओ

एकवचन वाले वाक्य

1. तूने सेवा की ________
2. तू नाचा ________
3. तू उतरा ________
4. तूने तौला ________
5. तू ले गया ________

बहुवचन वाले वाक्य

6. तुमने संवारा ________
7. तुमने पूजा की ________
8. तुमने ध्यान किया ________
9. तुम ठहरे ________
10. तुम ले गए ________

हिन्दी लिखें

1. तुम्हे ढक्कीअ। ________
2. तुम्हे तुलीअ। ________
3. तुम्हे सेवीअ। ________
4. तुम्हे णेही। ________
5. तुम्हे ठाही। ________
6. तुम्हे कीणीअ। ________
7. तुम्हे अच्चीअ। ________
8. तुम्हे झाही। ________
9. तुम्हे सारीअ। ________
10. तुम्हे उत्तरीअ। ________
11. तुमं उत्तरीअ। ________
12. तुमं सारीअ। ________
13. तुमं झाही। ________
14. तुमं अच्चीअ। ________
15. तुमं कीणीअ। ________
16. तुमं ठाही। ________
17. तुमं णेही। ________
18. तुमं सेवीअ। ________
19. तुमं तुलीअ। ________
20. तुमं ढक्कीअ। ________

भूतकाल (Past Tense) अन्य पुरुष

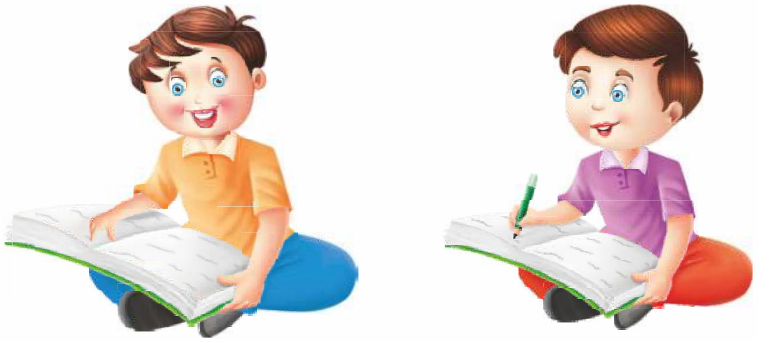

अन्य पुरुष – एकवचन

1.	सो कड्ढीअ।	उसने खींचा।	6.	सो हिंसीअ।	उसने हिंसा की।
2.	सो छिण्णीअ।	उसने काटा।	7.	सो घाईअ।	उसने मारा।
3.	सो सोहीअ।	वह सुशोभित हुआ।	8.	सो खासीअ।	वह खांसा।
4.	सो संचईअ।	उसने इकट्ठा किया।	9.	सो जिंघीअ।	उसने सूंघा।
5.	सो फुल्लीअ।	वह फूला।	10.	सो वेढीअ।	उसने लपेटा।

अन्य पुरुष – बहुवचन

1.	ते कड्ढीअ।	उन्होंने खींचा।	6.	ते हिंसीअ।	उन्होंने हिंसा की।
2.	ते छिंण्णीअ।	उन्होंने काटा।	7.	ते घाईअ।	उन्होंने मारा।
3.	ते सोहीअ।	वे सुशोभित हुए।	8.	ते खासीअ।	वे खांसे।
4.	ते संचईअ।	उन्होंने इकट्ठा किया।	9.	ते जिंघीअ।	उन्होंने सूंघा।
5.	ते फुल्लीअ।	वे फूले।	10.	ते वेढीअ।	उन्होंने लपेटा।

प्राकृत बनाओ

एकवचन वाले वाक्य

1. उसने काटा ____________________
2. उसने इकट्ठा किया ____________________
3. उसने हिंसा की ____________________
4. वह खांसा ____________________
5. उसने लपेटा ____________________

बहुवचन वाले वाक्य

6. उन्होंने खींचा ____________________
7. वे सुशोभित हुए ____________________
8. वे फूले ____________________
9. उन्होंने मारा ____________________
10. उन्होंने सूंघा ____________________

हिन्दी लिखें

1. ते वेढीअ। ____________________
2. ते जिंघीअ। ____________________
3. ते खासीअ। ____________________
4. ते घाईअ ____________________
5. ते हिंसीअ। ____________________
6. ते फुल्लीअ। ____________________
7. ते संचईअ। ____________________
8. ते सोहीअ। ____________________
9. ते छिण्णीअ। ____________________
10. ते कड्ढीअ। ____________________
11. सो वेढीअ। ____________________
12. सो जिंघीअ। ____________________
13. सो खासीअ। ____________________
14. सो घाईअ ____________________
15. सो हिंसीअ। ____________________
16. सो फुल्लीअ। ____________________
17. सो संचईअ। ____________________
18. सो सोहीअ। ____________________
19. सो छिण्णीअ। ____________________
20. सो कड्ढीअ। ____________________

भूतकाल के विविध वाक्य

1. अहं भुंजीअ। – मैंने खाया।
2. अहं पिवीअ। – मैंने पीया।
3. अम्हे भुंजीअ। – हमने खाया।
4. अम्हे पिवीअ। – हमने पीया।
5. तुमं भुंजीअ। – तुमने खाया।
6. तुमं पिवीअ। – तुमने पीया।
7. तुम्हे भुंजीअ। – तुमने खाया।
8. तुम्हे पिवीअ। – तुमने पीया।
9. सो भुंजीअ। – उसने खाया।
10. सो पिवीअ। – उसने पीया।
11. ते भुंजीअ। – उन्होंने खाया।
12. ते पिवीअ। – उन्होंने पीया।
13. सा भुंजीअ। – उसने (स्त्री ने) खाया।
14. ताओ पिवीअ। – उन्होंने (स्त्रियों ने) पीया।
15. इमो भुंजीअ। – इसने (पुरुष) खाया।
16. इमा पिवीअ। – इसने (स्त्री) पीया।
17. इमे भुंजीअ। – इन्होंने (पुरुष) खाया।
18. इमाओ पिवीअ। – इन्होंने (स्त्री) पीया।
19. को भुंजीअ? – किसने (पुरुष) खाया?
20. के पिवीअ? – किन्होंने (पुरुष) पीया?
21. का भुंजीअ? – किसने (स्त्री) खाया?
22. काओ पिवीअ? – किन्होंने (स्त्री) पीया?

अब्भासो-अभ्यास

भूतकाल के प्रारम्भिक 18 विविध वाक्यों के नकारात्मक व प्रश्नात्मक वाक्य बनाएं।

	नकारात्मक (Negative)		प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative)
1.	अहं न भुंजीअ।	1.	किं अहं भुंजीअ?
2.		2.	
3.		3.	
4.		4.	
5.		5.	
6.		6.	
7.		7.	
8.		8.	
9.		9.	
10.		10.	
11.		11.	
12.		12.	
13.		13.	
14.		14.	
15.		15.	
16.		16.	
17.		17.	
18.		18.	

भविष्य काल (Future Tense)

तीसरा काल भविष्य काल (Future Tense) है। जो समय अभी आया नहीं है, किन्तु आएगा वह भविष्य काल कहलाता है। भविष्य काल में होने वाली क्रिया को दर्शाने वाले वाक्य भविष्य काल के वाक्य कहलाते हैं, जैसे वह पढ़ेगा. वह खेलेगा आदि।

सूचनाः क्रिया शब्दों का भविष्यकाल का रूप बनाने की विधि

	(पंक्ति A)	**उत्तम पुरुष(पंक्ति B)**
एकवचन	अहं भुंज्+इहिमि = अहं भुंजिहिमि।	अहं भुंज् + इस्सामि = अहं भुजिस्सामि
बहुवचन	अम्हे भुंज्+इहामो = अम्हे भुंजिहामो।	अम्हे भुंज्+इस्सामो = अम्हे भुजिस्सामो
	मध्यम पुरुष	
एकवचन	तुमं भुंजिहिसि।	तुमं भुंजिस्ससि।
बहुवचन	तुम्हे भुंजिहिह।	तुम्हे भुंजिहित्था।
	अन्य पुरुष	
एकवचन	सो भुंजिहिइ। (सा, इमो, को, का)	सो भुंजिस्सइ। (सा, इमा, को, का)
बहुवचन	ते भुंजिहिन्ति। (ताओ, इमाओ, के, काओ)	ते भुंजिस्संति। (ताओ, इमाओ, के, काओ)

क्रियाएं

पढ– पढना
अज्ज – कमाना
तर – तैरना
तव – तप करना
ण्हा – नहाना
पत्थ – प्रार्थना करना
थुण – स्तुति करना
दा – देना
गवेस – खोजना
घोस – घोषणा करना

भविष्य काल (Future Tense)

उत्तम पुरुष - एकवचन

1.	अहं पोत्थअं पढिहिमि।	मैं पुस्तक पढूंगा।
2.	अहं कल्लिं ण्हाहिमि।	मैं कल नहाऊंगा।
3.	अहं धणं गवेसिहिमि।	मैं धन खोजूंगा।
4.	अहं धणं अज्जिहिमि।	मैं धन कमाऊंगा।
5.	अहं पहुं पत्थिहिमि।	मैं प्रभु से प्रार्थना करूंगा।
6.	अहं घोसिहिमि।	मैं घोषणा करूंगा।
7.	अहं तरिहिमि।	मैं तैरूंगा।
8.	अहं थुणिहिमि।	मैं स्तुति करूंगा।
9.	अहं तविहिमि।	मैं तप करूंगा।
10.	अहं दाणं दाहिमि।	मैं दान दूंगा।

उत्तम पुरुष - बहुवचन

1.	अम्हे पोत्थअं पढिहिमो।	हम पुस्तक पढ़ेंगे।
2.	अम्हे कल्लिं ण्हाहिमो।	हम कल नहाएंगे।
3.	अम्हे धणं गवेसिहिमो।	हम धन खोजेंगे।
4.	अम्हे धणं अज्जिहिमो।	हम धन कमाएंगे।
5.	अम्हे पहुं पत्थिहिमो।	हम प्रभु से प्रार्थना करेंगे।
6.	अम्हे घोसिहिमो।	हम घोषणा करेंगे।
7.	अम्हे तरिहिमो।	हम तैरेंगे।
8.	अम्हे थुणिहिमो।	हम स्तुति करेंगे।
9.	अम्हे तविहिमो।	हम तप करेंगे।
10.	अम्हे दाणं दाहिमो।	हम दान देंगे।

अब्भासो-अभ्यास

प्राकृत बनाओ

एकवचन

1. मैं कल नहाऊंगा। ____________________
2. मैं धन कमाऊंगा। ____________________
3. मैं घोषणा करूंगा। ____________________
4. मैं स्तुति करूंगा। ____________________
5. मैं दान दूंगा। ____________________

बहुवचन

6. हम पुस्तक पढ़ेंगे। ____________________
7. हम धन खोजेंगे। ____________________
8. हम प्रभु से प्रार्थना करेंगे। ____________________
9. हम तैरेंगे। ____________________
10. हम तप करेंगे। ____________________

भविष्य काल (Future Tense)

मध्यम पुरुष - एकवचन

1.	तुमं पोत्थअं पढिहिसि।	तुम पुस्तक पढ़ोगे।	6.	तुमं घोसिहिसि।	तुम घोषणा करोगे।
2.	तुमं कल्लिं ण्हाहिसि।	तुम कल नहाओगे।	7.	तुमं तरिहिसि।	तुम तैरोगे।
3.	तुमं धणं गवेसिहिसि।	तुम धन खोजोगे।	8.	तुमं थुणिहिसि।	तुम स्तुति करोगे।
4.	तुमं धणं अज्जिहिसि।	तुम धन कमाओगे।	9.	तुमं तविहिसि।	तुम तप करोगे।
5.	तुमं पहुं पत्थिहिसि।	तुम प्रभु से प्रार्थना करोगे।	10.	तुमं दाणं दाहिसि।	तुम दान दोगे।

मध्यम पुरुष - बहुवचन

1.	तुम्हे पोत्थअं पढिहित्था।	तुम पुस्तक पढ़ोगे।	6.	तुम्हे घोसिहित्था।	तुम घोषणा करोगे।
2.	तुम्हे कल्लिं ण्हाहित्था।	तुम कल नहाओगे।	7.	तुम्हे तरिहित्था।	तुम तैरोगे।
3.	तुम्हे धणं गवेसिहित्था।	तुम धन खोजोगे।	8.	तुम्हे थुणिहित्था।	तुम स्तुति करोगे।
4.	तुम्हे धणं अज्जिहित्था।	तुम धन कमाओगे।	9.	तुम्हे तविहित्था।	तुम तप करोगे।
5.	तुम्हे पहुं पत्थिहित्था।	तुम प्रभु को प्रार्थना करोगे।	10.	तुम्हे दाणं दाहित्था।	तुम दान दोगे।

अब्भासो-अभ्यास

प्राकृत बनाओ

एकवचन

1. तुम पुस्तक पढ़ोगे। ____________
2. तुम धन खोजोगे। ____________
3. तुम प्रभु से प्रार्थना करोगे। ____________
4. तुम तैरोगे। ____________
5. तुम तप करोगे। ____________

बहुवचन

6. तुम कल नहाओगे। ____________
7. तुम धन कमाओगे। ____________
8. तुम घोषणा करोगे। ____________
9. तुम स्तुति करोगे। ____________
10. तुम दान दोगे। ____________

सूचना : 'पढिहित्था' के स्थान पर 'पढह' भी Use कर सकते हैं। इसी तरह ण्हाह, गवेसह, अज्जह आदि भी समझ लेने चाहिए।

अब्भासो-अभ्यास

मध्यम पुरुष के वाक्यों के प्राकृत में नकारात्मक व प्रश्नवाचक वाक्य बनाएं।

नकारात्मक वाक्य - Negative Sentence

एकवचन	बहुवचन
1. तुमं पोत्थअं न पढिहिसि।	1. तुम्हे पोत्थअं न पढिहित्था।
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.
6.	6.
7.	7.
8.	8.
9.	9.
10.	10.

प्रश्नवाचक वाक्य - Interrogative Sentence

एकवचन	बहुवचन
1. किं तुमं पोत्थअं पढिहिसि?	1. किं तुम्हे पोत्थअं पढिहित्था?
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.
6.	6.
7.	7.
8.	8.
9.	9.
10.	10.

भविष्य काल (Future Tense)

अन्य पुरुष – एकवचन

1.	सो पोत्थअं पढिहिइ।	वह पुस्तक पढ़ेगा।	6.	सो घोसिहिइ।	वह घोषणा करेगा।
2.	सो कल्लिं ण्हाहिइ।	वह कल नहाएगा।	7.	सो तरिहिइ।	वह तैरेगा।
3.	सो धणं गवेसिहिइ।	वह धन खोजेगा।	8.	सो थुणिहिइ।	वह स्तुति करेगा।
4.	सो धणं अज्जिहिइ।	वह धन कमाएगा।	9.	सो तविहिइ।	वह तप करेगा ।
5.	सो पहुं पत्थिहिइ।	वह प्रभु से प्रार्थना करेगा।	10.	सो दाणं दाहिइ।	वह दान देगा ।

अन्य पुरुष – बहुवचन

1.	ते पोत्थअं पढिहिंति।	वे पुस्तक पढ़ेंगे।	6.	ते घोसिहिंति।	वे घोषणा करेंगे।
2.	ते कल्लिं ण्हाहिंति	वे कल नहाएंगे।	7.	ते तरिहिंति।	वे तैरेंगे।
3.	ते धणं गवेसिहिंति।	वे धन खोजेंगे।	8.	ते थुणिहिंति।	वे स्तुति करेंगे।
4.	ते धणं अज्जिहिंति।	वे धन कमाएंगे।	9.	ते तविहिंति।	वे तप करेंगे।
5.	ते पहुं पत्थिहिंति।	वे प्रभु से प्रार्थना करेंगे।	10.	ते दाणं दाहिंति।	वे दान देंगे।

अब्भासो–अभ्यास

प्राकृत बनाओ

एकवचन

1. वह कल नहाएगा। ______
2. वह धन कमाएगा। ______
3. वह घोषणा करेगा। ______
4. वह स्तुति करेगा। ______
5. वह दान देगा । ______

बहुवचन

6. वे पुस्तक पढ़ेंगे। ______
7. वे धन खोजेंगे। ______
8. वे प्रभु से प्रार्थना करेंगे। ______
9. वे तैरेंगे। ______
10. वे तप करेंगे। ______

सूचना :

1. ‘न’ लगाने से नकारात्मक वाक्य बनेंगे। जैसे – सो पोत्थअं न पढिहिइ – वह पुस्तक नहीं पढ़ेगा।
2. ‘किं’ लगाने से प्रश्नात्मक वाक्य बनेंगे। जैसे – किं सो पोत्थअं पढिहिइ – क्या वह पुस्तक पढ़ेगा?

अब्भासो-अभ्यास

अन्य पुरुष के वाक्यों के प्राकृत में नकारात्मक व प्रश्नवाचक वाक्य बनाएं।

नकारात्मक वाक्य

एकवचन

1. ______
2. ______
3. ______
4. ______
5. ______
6. ______
7. ______
8. ______
9. ______
10. ______

बहुवचन

1. ______
2. ______
3. ______
4. ______
5. ______
6. ______
7. ______
8. ______
9. ______
10. ______

प्रश्नवाचक वाक्य

एकवचन

1. ______
2. ______
3. ______
4. ______
5. ______
6. ______
7. ______
8. ______
9. ______
10. ______

बहुवचन

1. ______
2. ______
3. ______
4. ______
5. ______
6. ______
7. ______
8. ______
9. ______
10. ______

भविष्यकाल के वाक्यों के वैकल्पिक रूप

सूचना–

पृष्ट नं 53 पर पंक्ति A व B में भविष्य काल के वाक्य दिए गए हैं। पंक्ति B में वैकल्पिक रूप हैं अर्थात् भविष्य काल में इस तरह के रूप भी बनाए जा सकते हैं। निम्नलिखित वाक्य पंक्ति B के अनुसार ही बनाए गए हैं।

अहं भुंजिस्सामि – मैं खाऊंगा।
अम्हे भुंजिस्सामो – हम खाएंगे।
तुमं भुंजिस्ससि – तुम खाओगे।
तुम्हे भुंजिहित्था – तुम खाओगे। (बहुवचन)
सो भुंजिस्सइ – वह खाएगा।
ते भुंजिस्संति – वे खाएंगे।
सा भुंजिस्सइ – वह खाएगी।
ताओ भुंजिस्संति – वे खाएंगी।
इमो भुंजिस्सइ – यह खाएगा।
इमा भुंजिस्सइ – यह खाएगी।
इमे पिविस्संति – ये पीएंगे।
इमाओ भुंजिस्संति – ये खाएंगी।
को भुंजिस्सइ? – कौन खाएगा?
के भुंजिस्संति? – कौन खाएंगे?
का भुंजिस्सइ? – कौन खाएगी?
काओ भुंजिस्संति? – कौन खाएंगी?

पाढो अव्वयो

पाठ 12 अव्यय

अव्यय शब्द वे शब्द हैं, जिनका सब जगह एक जैसा ही प्रयोग होता है।
राम शब्द को प्राकृत में कहीं रामो, कहीं रामं, रामेण, रामस्स आदि रूप में लिखते हैं, किन्तु अव्यय शब्दों का रूप एक समान ही रहता है, जैसे– ण, किं, एत्थ आदि। प्रमुख अव्यय शब्द लगभग 150 हैं। किन्तु यहां सिर्फ 20 शब्द दिए जा रहे हैं।

ण – नहीं

अहं मज्जं न पिवामि ।
– मैं शराब नहीं पीता हूं।

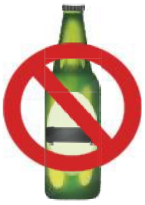

किं – क्या

साहू किं कहइ ?
– साधु क्या कहता है?

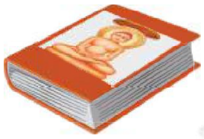

इह / एत्थ – यहां

इह/एत्थ धुम्मपाणं ण करेज्ज ।
– यहां धूम्रपान न करें।

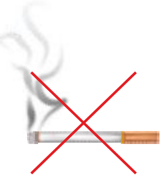

तत्थ– वहां

तत्थ न गच्छ ।
– वहां न जा।

कत्थ / कहिं–कहां

तुमं कत्थ / कहिं निवससि ?
– तुम कहां रहते हो?

अग्गओ/पुरओ – आगे

अग्गओ/पुरओ विज्जालओ अत्थि ।
– आगे स्कूल है।

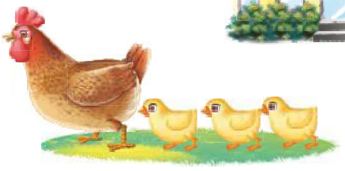

पच्छा – पीछे

सव्वे मम पच्छा आगच्छह।
– सब मेरे पीछे आओ ।

उवरि/उवरिं–ऊपर

चंदो उवरि/उवरिं अत्थि।
– चंद्रमा ऊपर है।

अहो – नीचे

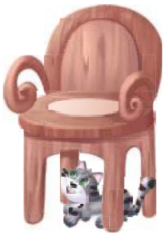

आसंदीए अहो मज्जारी अत्थि।
– कुर्सी के नीचे बिल्ली है।

सणिअं – धीरे

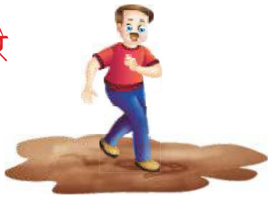

सणिअं गच्छ।
– धीरे चलो।

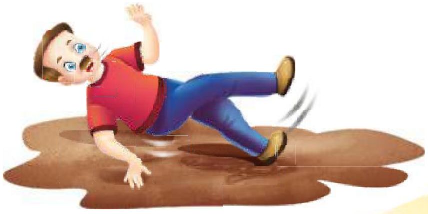

दूरं – दूर

सूरो दूरं अत्थि।
– सूर्य दूर है।

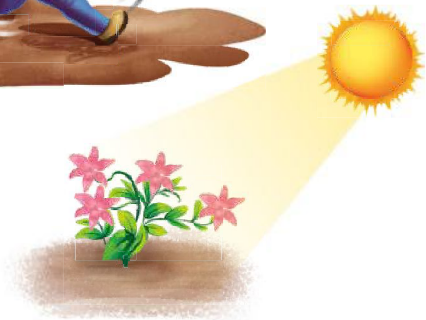

समया – पास

दुट्ठं समया न गच्छेज्ज।
– दुष्ट के पास नहीं जाना चाहिए।

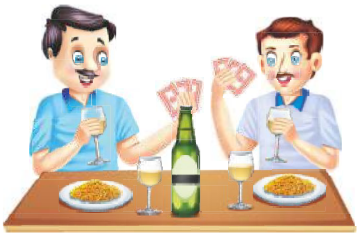

विणा – बिना

जलं विणा मच्छो मरइ ।
– जल के बिना मत्स्य मर जाता है।

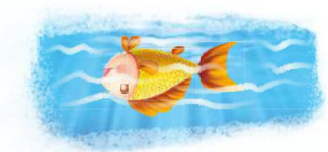

पुणो – फिर

सो पुणो पुणो पडइ ।
– वह बार-2 गिरता है।

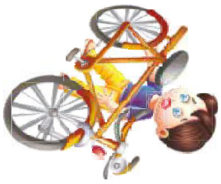

कल्लिं – कल

कल्लिं रविवासरो अत्थि ।
– कल रविवार है।

अज्ज/अज्जं–आज

अज्ज/अज्जं मम जम्मदिवसो अत्थि।
– आज मेरा जन्मदिवस है।

च / य – और

रामो लक्खणो य भायरा संति।
– राम और लक्ष्मण भाई हैं।
(प्राकृत भाषा में य (और) बीच में नहीं, बाद में आता है।)

आम – हां

Q. – किं तुम जेणो सि?
Ans – आम, अहं जेणो म्मि।
Q. – क्या तुम जैन हो?
Ans – हां, मैं जैन हूं।

जइ – यदि

जइ अहिअं भुंजिहिसि ता थूलो होहिसि।
यदि अधिक खाओगे तो मोटे हो जाओगे।

[redacted]

कयावि – कभी भी

अहं कयावि मंसं न भुंजिहिमि।
मैं कभी मांस नहीं खाऊंगा।

Be Vegetarian
शुद्ध बनोगे तो बुद्ध बनोगे।

कुछ अन्य अव्यय शब्द

(सिर्फ पढ़ने के लिए)

सव्वत्थ–सब जगह
जया/जइया–जब
जाव–जब तक
णत्तं–रात में
चिरं–दीर्घ काल तक
जहा–जैसे
हा–खेद है।
एव–ही

बहिं/बहिया/बाहिं–बाहर
कया/कइया–कब
ताव–तब तक
पगे–सुबह
झडत्ति/झडिति–जल्दी
तहा–वैसे
हंदि–खेद है।
अओ–इसलिए

अंतो–भीतर
तया/तइया–तब
एगया–एक बार
सायं–संध्या में
परसुवे–परसों
सम्मं–भली प्रकार से
मुहु–बार–2
सुहं–सुखपूर्वक

अंतरा–बीच में
इयाणिं– अब
दिवा–दिन में
पुव्विं–पहले
इत्थं–ऐसा
धि–धिक्कार है।
सह/सद्धिं/समं–साथ
एगया–एकबार

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. पण्हो – अव्यय शब्द किसे कहते हैं?

उत्तरो --

----

2. पण्हो – लगभग कितने अव्यय हैं?

उत्तरो --

हिन्दी अर्थ लिखिए

किं –

एत्थ –

कत्थ –

तत्थ –

पच्छा –

सणिअं –

समया –

पुणो –

कल्लिं –

अज्जं –

अहो –

उवरिं –

प्राकृत अर्थ लिखिए

यहां –

आगे –

पीछे –

धीरे –

दूर –

बिना –

वहां –

कल –

कहां –

पास –

नहीं –

हां –

प्राकृत बनाएं

1. तुम कहां जाते हो? --
2. मैं यहां बैठता हूं। --
3. मैं पीछे जाता हूं। --
4. मैं फिर खाऊंगा। --
5. धीरे चलो। --
6. ऊपर चंद्रमा है। --
7. नीचे बिल्ली है। --
8. चंद्रमा दूर है। --

पाढो पाठ 13

लहुससगो (कव्वं)
नन्हा खरगोश (काव्य)

लहुससगो - नन्हा खरगोश

अहो लहुससग!
चाय-पाणं इच्छसि?
नहि नहि एयं मज्झं न रोयइ
चायपाणं विवज्जित्ता (विवज्जिऊण)
फल मेव रोयइ।।

अत्थो - अर्थ

अरे नन्हे खरगोश
चाय पीना चाहते हो?
नहीं, नहीं, मुझे चाय पसंद नहीं है,
चाय छोड़कर
फल ही अच्छा लगता है।

सद्दत्था-शब्दार्थ

अहो - हे
लहु - नन्हा
ससगो - खरगोश
एयं - यह
मज्झं - मुझे
विवज्जित्ता - छोड़कर
रोयइ - अच्छा लगता है।

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. ससगो कहं अत्थि? - खरगोश कैसा है?	1. ससगो लहू अत्थि। - खरगोश नन्हा/छोटा है।
2. किं ससगो चायपाणं इच्छइ? - क्या खरगोश चाय पीना चाहता है?	2. न, ससगो चायपाणं न इच्छइ। - नहीं, खरगोश चाय पीना नहीं चाहता है।
3. ससगो किं इच्छइ? - खरगोश क्या चाहता है?	3. सो फलमेव इच्छइ। - वह फल ही चाहता है।

पाढो
पाठ
14

धावन्तो वेज्जो (कव्वं)
दौड़ता हुआ वैद्य (काव्य)

धावन्तो वेज्जो-दौडता हुआ वैद्य

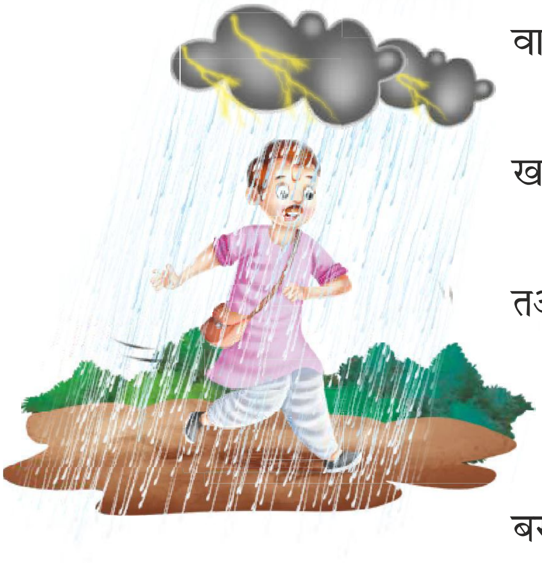

वासाए मज्झे वेज्जो
धावन्तो जाइ तिगिच्छिउं
खलिओ सो पंक मज्झे
सक्को उट्ठाउं न लहु
तओ पच्छा विसमकाले
रुद्धो बहिया निगच्छिउं।।

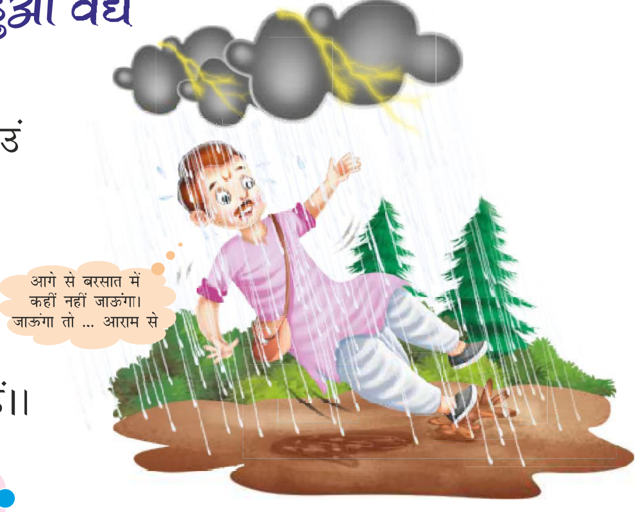

अत्थो - अर्थ

बरसात के समय एक वैद्य (डाक्टर)
दौड़ता हुआ इलाज करने के लिए चला
कीचड़ में फिसल गया,
आसानी से उठ भी नहीं सका
उसके बाद उसने प्रतिकूल समय में
बाहर निकलना छोड़ दिया (बंद कर दिया)

सद्दत्था-शब्दार्थ

वासाए - वर्षा में
लहु - आसानी से
धावन्तो - दौडता हुआ
पच्छा - बाद में
वेज्जो - वैद्य (डाक्टर)
रुद्धो - रोक दिया (बंद कर दिया)
खलिओ - फिसल गया
निगच्छिउं - निकलना

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. को धावन्तो जाइ? - कौन दौड़ता हुआ जाता है?	1. वेज्जो धावन्तो जाइ। - वैद्य (डाक्टर) दौड़ता हुआ जाता है ।
2. वेज्जो कत्थ/कहिं खलिओ? - वैद्य कहां फिसल गया?	2. वेज्जो पंक-मज्झे खलिओ। - वैद्य कीचड में फिसल गया।
3. वेज्जेण किं रुद्धो? - वैद्य ने क्या रोक दिया?	3. वेज्जेण विसमकाले बहिआ निगच्छिउं रुद्धो। - वैद्य ने प्रतिकूल समय में बाहर निकलना रोक दिया (बंद कर दिया)।

पाढो
पाठ
15

दंत सोहणं (कव्वं)
दंत शोधन (काव्य)

दंत सोहणं – Tooth Brush

दंत सोहणं मह अत्थि सच्छं तह सुन्दरं
पक्खालेमि निए दंते पइदिणं सायरं
पायं सायं सए दंते मज्जामि अहं सयं
तेण लसन्ते मह दंता सुद्धा सच्छा य भिसं।

अत्थो - अर्थ

मेरा Tooth Brush स्वच्छ और सुन्दर है।
मैं प्रतिदिन प्यार से अपने दांत साफ करता हूं।
सुबह शाम मैं स्वयं ही अपने दांत साफ करता हूं,
इससे मेरे शुद्ध और स्वच्छ दांत बहुत चमकते हैं।

सद्दत्था-शब्दार्थ

दंत-सोहणं	– Tooth Brush	**सए**	– अपने	**मह**	– मेरा
मज्जामि	– साफ करता हूं	**पक्खालेमि**	– धोता/साफ करता हूं।	**सयं**	– खुद/स्वयं ही
सायरं	– प्यार से	**तेण**	– इससे	**पायं सायं**	– प्रात: सायं
भिसं	– बहुत ज्यादा				

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. दंत सोहणं कहं अत्थि?	1. दंससोहणं सच्छं तह सुंदरं अत्थि।
– टूथ ब्रश कैसा है?	– टूथब्रश स्वच्छ तथा सुंदर है।
2. अहं कया सए दंते पक्खालेमि/मज्जामि?	2. अहं पइदिणं पायं सायं सए दंते मज्जामि।
– मैं कब अपने दांत साफ करता हूं?	– मैं प्रतिदिन प्रात: सायं अपने दांत साफ करता हूं।
3. किं लसन्ते?	3. सुद्धा सच्छा दंता लसन्ते।
– क्या चमकते हैं?	शुद्ध स्वच्छ दांत चमकते हैं।

पाढो पाठ 16

गोल गप्पं (कव्वं)
गोलगप्पा (काव्य)

गोल गप्पं-गोलगप्पा

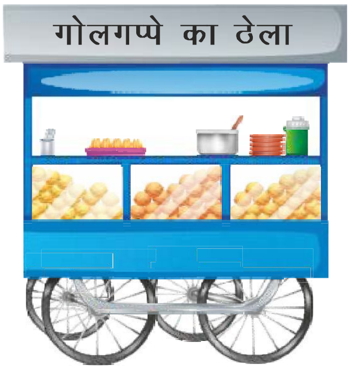

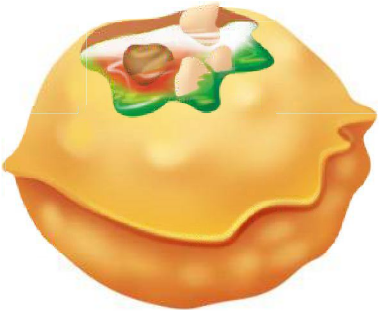

अहं पासीअ एगं गोलगप्पं
जलं अहिअं आलुअं अप्पं।
मुहे आगअं खारं जलं
अहं भुंजीअ तं सयलं।
जले मरीअं अहिअं आसी,
अहं जलं सव्वं हि पासी,
नेत्तेसु मम जलं आयासी,
अहं पुणो गप्पं न खासी ।

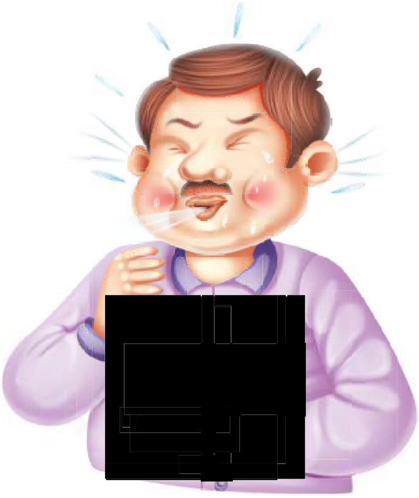
[redacted]

अत्थो - अर्थ

मैंने एक गोलगप्पा देखा
(उसमें) जल ज्यादा था आलू कम था
मेरे मुंह में नमकीन पानी आ गया
मैंने उस गोलगप्पे को पूरा ही खा लिया
पानी में मिर्ची ज्यादा थी
मैंने सारा ही पानी पी लिया
मेरी आंखों में पानी आ गया
मैंने दुबारा कभी गोलगप्पा नहीं खाया।

सद्दत्था–शब्दार्थ

पासीअ	– देखा	**आसी**	– था	**अहिअं**	– अधिक
पासी	– पीया	**अप्पं**	– अल्प/थोडा	**नेत्तेसु**	– आंखों में
सयलं	– सकल/पूरा	**आयासी**	– आ गया	**मरीअं**	– मिर्च
न खासी	– नहीं खाया				

पण्होत्तराइं–प्रश्नोत्तर

1. अहं किं पासीय? – मैंने क्या देखा?	1. अहं गोलगप्पं पासीअ। – मैंने गोलगप्पा देखा।
2. किं अहिअं किं अप्पं आसी? – क्या अधिक था, क्या कम था?	2. जलं अहिअं आलुअं अप्पं आसी। – जल अधिक था, आलु कम था।
3. मुहे किं आगयं? – मुंह में क्या आ गया?	3. मुहे खारं जलं आगयं। – मुंह में नमकीन पानी आ गया।
4. अहं पुणो किं न खासी? – मैंने दुबारा क्या नहीं खाया?	4. अहं पुणो गप्पं (गोलगप्पं) न खासी। – मैंने दुबारा गोलगप्पा नहीं खाया।

पाढो
पाठ
17

चंदो माउलो (कव्वं)
चंदा मामा (काव्य)

चंदो माउलो – चंदा मामा

चंदो सया चमक्कइ,
कयावि ण थक्कइ।
सणिअं सणिअं गच्छइ,
कहिं वि न अच्छइ।
सो माआए भाऊ णत्थि
परं मम माउलो अत्थि।
चंदो/चंद! कया आगच्छिहिसि?
मिट्ठण्णं कया आहरिहिसि?

अत्थो – अर्थ

चंद्रमा सदा चमकता है।
कभी नहीं थकता है।
धीरे-धीरे जाता है,
कहीं भी नहीं बैठता है।
वह मां का भाई नहीं है,
किन्तु मेरा मामा है।
चंद्रमा ! कब आओगे?
मिठाई कब लाओगे?

सद्दत्था-शब्दार्थ

कयावि	–	कभी	**अच्छइ**	–	बैठता है	**कहिं**	– कहीं
मिट्ठण्णं	–	मिठाई	**माआए**	–	मां का	**आहरिहिसि**	– लाओगे
भाऊ	–	भाई					

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. को चमक्कइ? – कौन चमकता है?	1. चंदो चमक्कइ। – चंद्रमा चमकता है।
2. चंदो कहं गच्छइ? – चंद्रमा कैसे चलता है?	2. सणिअं सणिअं गच्छइ। – धीरे-2 चलता है।
3. सो माआए को णत्थि? – वह मां का क्या नहीं है?	3. सो माआए भाऊ णत्थि। – वह मां का भाई नहीं है।
4. चंदो को अत्थि? – चंद्रमा क्या है?	4. चंदो माउलो अत्थि। – चंद्रमा मामा है।

पाढो
पाठ
18

1. को एत्थ संदेहो?

एगेण साउणिएण एगो सुयपोओ लद्धो। जो बहुसुन्दरो आसी। घरम्मि सव्वे जणा तं राम रामत्ति बोल्लिउं सिक्खावेंति। सुयपोओ बोल्लिउं न सिक्खिओ। परं एगया सुयपोओ बोल्लिउं आरद्धो। तस्स वयणाइं आसी 'को एत्थ संदेहो?'

साउणिओ तं निवस्स समीवे आणेइ, कहेइ-जं एसो सुयसावगो मणुस्स इव भासिउं जाणइ। राया पुच्छइ 'किं भो सुया! तुमं मणुस्स इव भाससि?' सो भणइ-'को एत्थ संदेहो?'

पसण्णो राया बहुधणं दाऊण साउणिआओ तं सुयं किणइ। पच्छा निवेण नायं जं एसो सुओ सव्वेसिं पसिणाणं एगमेव उत्तरं भणइ-को एत्थ संदेहो। राया कुद्धो जाओ। तेण सकोवं पुच्छियं-किं तुमं एगमेव वक्कं भासिउं जाणासि 'को एत्थ संदेहो?' सुएणं तक्खणं उत्तरिअं 'को एत्थ संदेहो'। खिण्णो निवो पुच्छइ-किं अहं बुद्धिहीणो म्हि जं बहुमुल्लेण तुमं कीणीअ? सुएणं पुणरवि तहेव भणिअं 'को एत्थ संदेहो?'

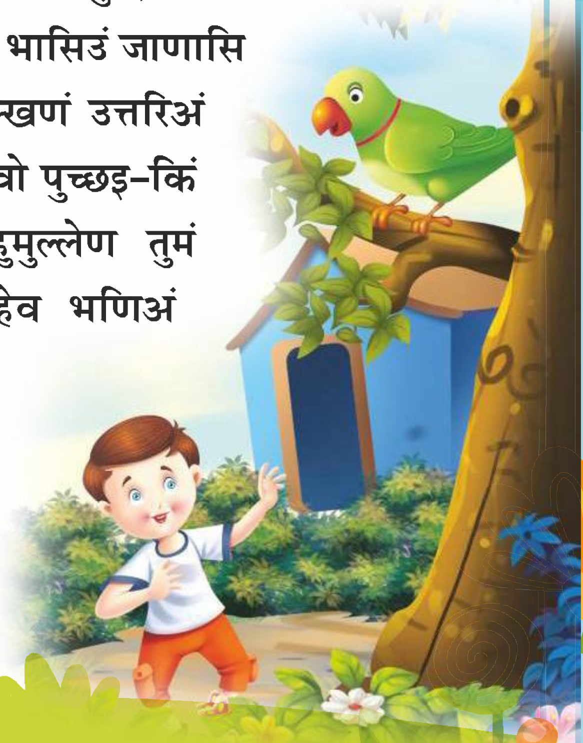

सिक्खा - सद्दाण उच्चारणं
तया उवओगि
जया अत्थ-बोहो
वि समगं सिया।

प्राकृत कथाएं

1. इसमें क्या शक है?

एक बहेलिए को एक तोते का बच्चा मिला जो कि बहुत सुन्दर था। घर के सब लोग उसे 'राम-राम' बोलना सिखाते हैं। तोते का बच्चा बोलना नहीं सीखा। पर एक बार तोते का बच्चा बोलने लगा, उसके शब्द थे "इसमें क्या शक है?"

बहेलिया उस बच्चे को राजा के पास लाता है और कहता है कि यह तोते का बच्चा मनुष्य की तरह बोलना जानता है। राजा पूछता है 'हे तोते! क्या तुम मनुष्य की तरह बोलते हो?' वह कहता है "इसमें क्या शक है?"

प्रसन्न राजा ने बहुत धन देकर बहेलिए से वह तोता खरीद लिया। बाद में राजा को समझ आया कि यह तोता सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर देता है 'इसमें क्या शक है?' राजा क्रुद्ध हो गया। उसने गुस्से में पूछ लिया 'क्या तू एक ही वाक्य बोलना जानता है, "इसमें क्या शक है?" तोते ने तुरन्त उत्तर दिया 'इसमें क्या शक है?' दु:खी राजा पूछता है- क्या मैं मूर्ख हूं, जो तुझे बहुत मूल्य देकर खरीद लिया? तोते ने फिर वही उत्तर दिया 'इसमें क्या शक है?'

शिक्षा – शब्द बोलना तभी उपयोगी है जब साथ में अर्थ का ज्ञान हो ।

सद्दत्था-शब्दार्थ

साउणिएण	– पक्षियों के व्यापारी के द्वारा	**भाससि**	– बोलते हो
सुअपोओ	– तोते का बच्चा	**भणइ**	– कहता है
लद्धो	– प्राप्त किया	**दाऊण**	– देकर
आसी	– था	**किणइ**	– खरीदता है
बोल्लिउं	– बोलने के लिए	**पसिणाणं**	– प्रश्नों का
सिक्खावेंति	– सिखाते हैं	**नायं**	– जान लिया
आरद्धो	– शुरू किया	**वक्कं**	– वाक्य
वयणाइं	– वचन	**तक्खणं**	– उसी समय
आणेइ	– लाता है	**खिण्णो**	– खिन्न/दुखी

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

1. साउणिएण को लद्धो?

(पक्षियों के व्यापारी को क्या मिला?)

उत्तर- एगो सुअपोओ लद्धो।

(एक तोते का बच्चा मिला।)

2. सव्वे जणा तं किं बोल्लिउं सिक्खावेंति?

(सब लोग उसे क्या बोलना सिखाते हैं?)

उत्तर- सव्वे जणा तं राम-रामत्ति बोल्लिउं सिक्खावेंति।

(सब लोग उसे राम-राम बोलना सिखाते हैं।)

3. सुअपोओ किं कहीअ?

(तोते के बच्चे ने क्या कहा?)

उत्तर- सुअपोओ कहीअ जं 'को एत्थ संदेहो।'

(तोते के बच्चे ने कहा कि 'इसमें क्या संदेह (शक) है।')

4. राया बहुधणं दाऊण किं किणइ?

(राजा बहुत धन देकर क्या खरीदता है?)

उत्तर- राया बहुधणं दाऊण सुअपोअं किणइ।

(राजा ने बहुत धन देकर तोते का बच्चा खरीदा।)

5. राया किं जाओ?

(राजा क्या हो गया?)

उत्तर- राया कुद्धो जाओ।

(राजा क्रुद्ध हो गया अर्थात् राजा को क्रोध आ गया।)

6. खिण्णो निवो/राया किं पुच्छइ?

(खिन्न/दुखी राजा क्या पूछता है?)

उत्तर- खिण्णो निवो पुच्छीअ जं, कि अहं बुद्धिहीणो म्हि जं बहुमुल्लेण तुमं कीणीअ?

(खिन्न राजा ने पूछा कि क्या मैं बुद्धिहीन हूं जो बहुत मूल्य देकर तुझे खरीदा है?)

7. सुएण किं भणिअं?

(तोते ने क्या कहा?)

उत्तर– सुएण भणिअं जं 'को एत्थ संदेहो?'

(तोते ने कहा कि – इसमें क्या संदेह (शक) है?')

रित्तं ठाणं

(रिक्त स्थान भरो एवं वाक्यों का हिन्दी अर्थ लिखो।)

1. सुअपोओ बहु .... आसी।

हिन्दी अर्थ– ....

2. सुअपोओ .... न सिक्खिओ।

हिन्दी अर्थ– ....

3. किं भो सुआ! तुमं .... इव भाससि?

हिन्दी अर्थ– ....

4. तेण .... पुच्छियं।

हिन्दी अर्थ– ....

5. को एत्थ .... ?

हिन्दी अर्थ– ....

पाढो
पाठ
19

2. तिण्णि मित्ताणि

एगो हत्थी आसी । तस्स मित्तं आसी एगा अया। दोण्णि सह एव वणं गच्छन्ति। हत्थी रुक्खसाहं नमइ, अया तस्स पत्ताणि खायइ। वणम्मि एगो बोर-बच्छो आसी। हत्थी तं वच्छं वेवइ, तओ पडिआणि फलाणि अया खायइ।

एगया दोण्णि मित्ताणि वणं गयाणि । तेहिं तत्थ तलाओ दिट्ठो। तया चेव वच्छाओ एगो चडगा-सावगो जलम्मि पडिओ । तस्स रक्खं काउं अया तलायम्मि पविसइ, परं अप्पणा चेव निमग्गा जाया। हत्थी चडगासिसुं अयं दोण्णि वि बाहिं आणेइ। चडगा-सिसू कमसो जुवा जाओ। सो वच्छस्स उवरि चिट्ठइ। हत्थी अया य वच्छस्स अहो चिट्ठंति। चडगो उड्डिऊण अण्णवेसेइ-कत्थ वच्छे फलाइं संति। तओ तिण्णि तत्थ गच्छंति, साणंदं फलाणि खादंति।

सिक्खा- परोप्परं सहयोग-भावेण सव्वे सुहिणो होंति।

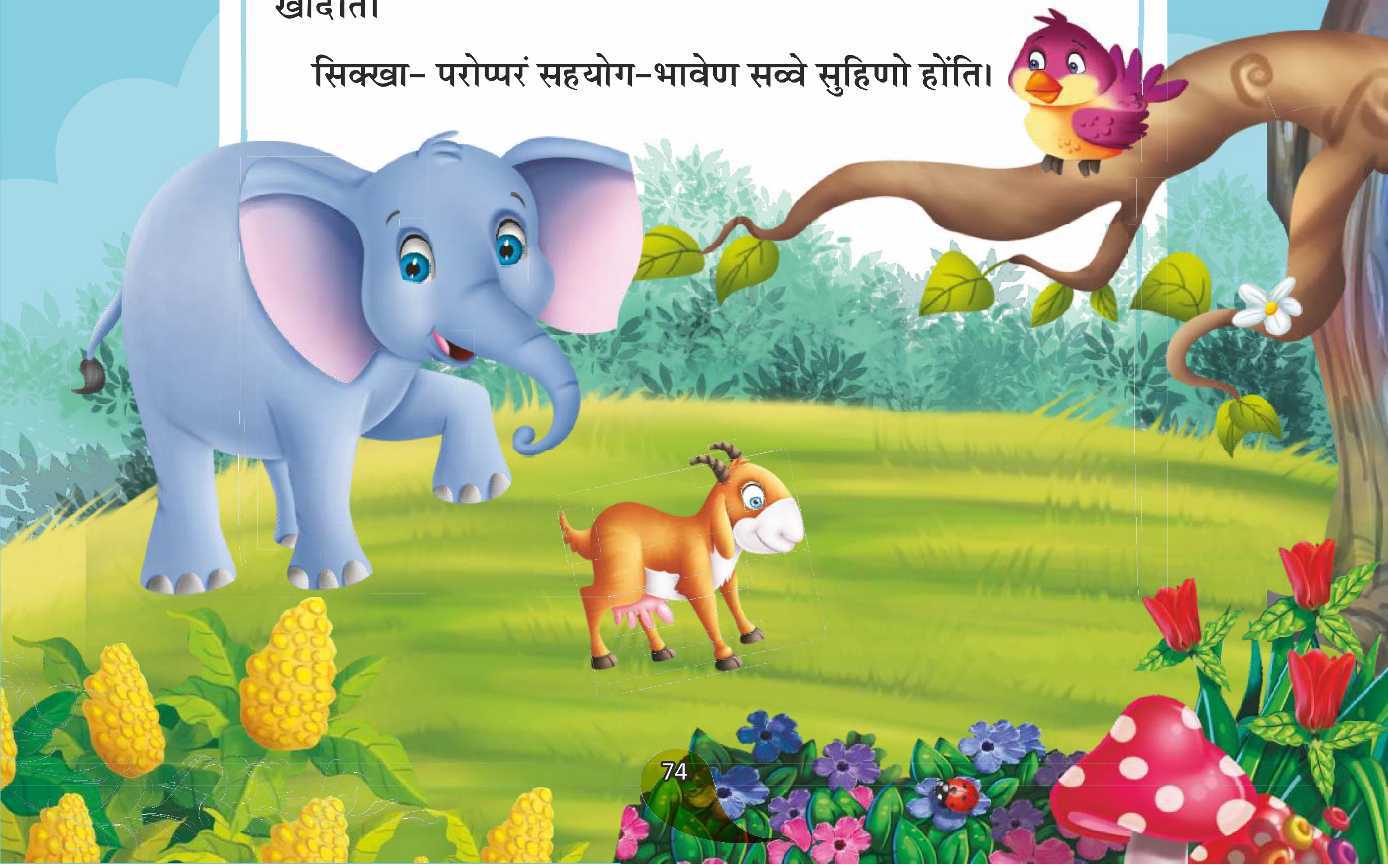

2. तीन मित्र

एक हाथी था। उसकी एक दोस्त बकरी थी। दोनों वन में साथ–2 जाते। हाथी वृक्ष की शाखा को झुका देता और बकरी उसके पत्ते खा लेती। वन में एक बेरी का पेड़ था। हाथी उस पेड़ को हिला देता। उससे गिरे हुए फलों को बकरी खा लेती।

एक बार दोनों मित्र वन में गए। उन्होंने वहां एक तालाब देखा। तभी वृक्ष से एक चिड़िया का बच्चा पानी में गिर पड़ा। उसकी रक्षा करने के लिए बकरी पानी में प्रवेश करती है पर खुद ही वह डूबने लगी। हाथी ने चिड़िया के बच्चे तथा बकरी दोनों को बाहर निकाल लिया। चिड़िया का बच्चा धीरे–2 जवान हो गया। वह वृक्ष के ऊपर बैठता है तथा हाथी और बकरी वृक्ष के नीचे बैठते हैं। चिड़ा उड़कर तलाश करता है कि किस वृक्ष पर फल हैं। फिर तीनों वहां जाते हैं और मजे से फल खाते हैं।

शिक्षा– परस्पर सहयोग करने से सभी सुखी रहते हैं।

सद्दत्था–शब्दार्थ

अया	–	बकरी	**रुक्खसाहं**	–	वृक्ष की शाखा को
बोर	–	बेर	**नमेइ**	–	झुकाता है।
पडियाणि	–	गिरे हुए	**चडगा–सावगो**	–	चिड़िया का बच्चा
अप्पणा	–	खुद ही	**निमग्गा**	–	डूब गई
अहो	–	नीचे	**उड्डिऊण**	–	उड़कर
वेवइ	–	हिलाता है	**कमसो**	–	धीरे–2
अण्णवेसेइ	–	ढूंढता है			

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

पण्ह– 1. हत्थिणो मित्तं बूहि? (हाथी का मित्र बताइए)

उत्तरं– हत्थिणो मित्तं अया आसी।

पण्हं– 2. अया रुक्खपत्ताइं कहं खायइ? (बकरी वृक्ष के पत्तों को कैसे खाती है?)

उत्तरं– जया हत्थी रुक्खसाहं नमेइ तया सा तस्स पत्ताइं खायइ।

पण्हं– 3. जलम्मि को पडिओ? (पानी में कौन गिर गया?)

उत्तरं– एगो चडगा–सावगो वच्छाओ जलम्मि पडिओ।

पण्ह– 4. हत्थी केसिं रक्खं कुणइ? (हाथी किनकी रक्षा करता है?)

उत्तरं– हत्थी चडगासिसु अयं दोण्णि वि जलाओ बाहिं आणेत्ता रक्खं कुणइ।

पण्ह– 5. तिण्णि मित्ताणि किं कुणंति? (तीनों मित्र क्या करते हैं?)

उत्तरं– वच्छस्स समीवं गच्छित्ता साणंदं फलाणि खादंति।

रित्तीपूरणाणंतरं अत्थो लेहणिज्जो

1. वणम्मि .... वच्छो आसी।
2. एगया दोण्णि .... दिट्ठो।
3. तस्स रक्खं .... जाया।
4. चडगा सिसू .... चिट्ठइ।
5. चडगो .... फलाइं संति।

अत्थो :- 1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

पाढो
पाठ
20

3. मूढो वाणरो

चंदणपुरम्मि एगो राया निवसइ। तस्स मित्तं वाणरो आसी। सो रायाणं सेवीअ। एगया राया सुत्तो आसी। तया एगा मच्छिया तत्थ आगया। सा रण्णो मुहम्मि निसण्णा। वाणरो तं उड्डावीय। परं सा मच्छिया रण्णो उयरम्मि निसण्णा। वाणरो पुणो तं उड्डावीय। परं मच्छिया न विरमीअ। सा सुत्तस्स रण्णो खंधम्मि निसण्णा। तया वाणरो कुविओ जाओ। सो रण्णो असिं गेण्हीअ मच्छिआए च पहारं करीअ। मच्छिआ उड्डीणा परं असीए रण्णो गीवा छिण्णा जाया। वाणरो अप्पणो मूढयाए बहुदुक्खिओ जाओ।

सिक्खा- मूढ मित्ताओ बुद्धिमंतो रिऊ सोहणयरो हवइ।

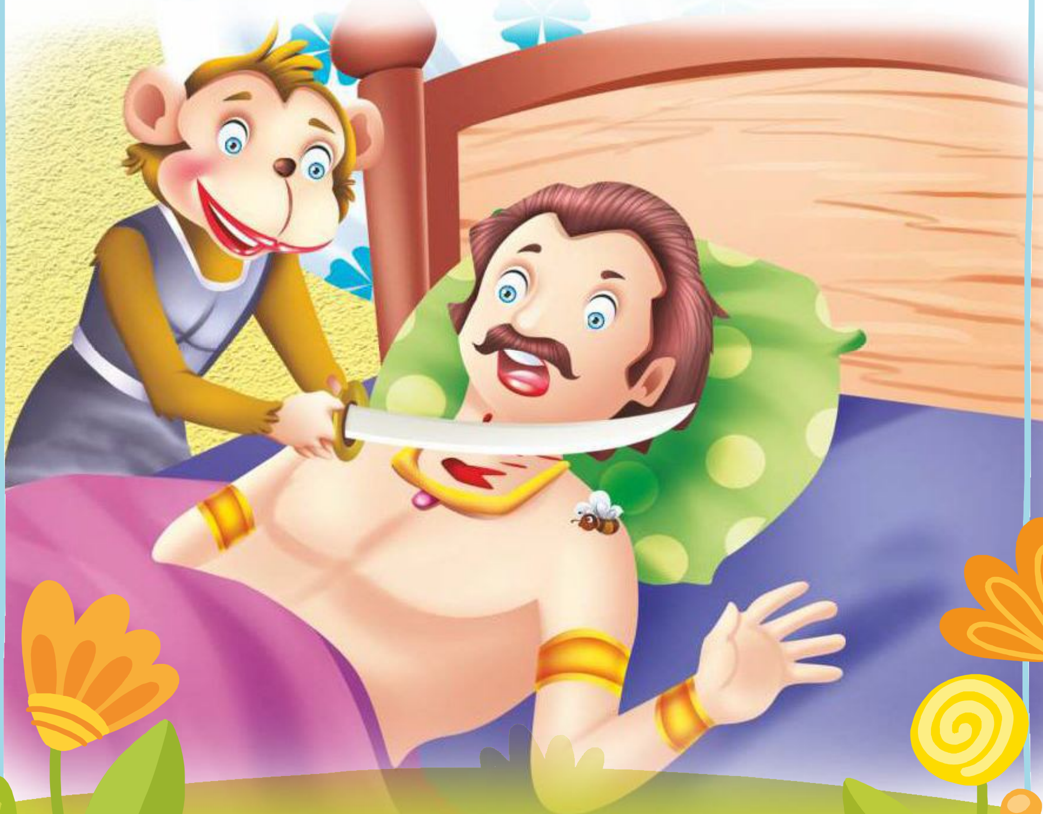

3. मूर्ख बन्दर

चन्दनपुर में एक राजा रहता था। उसका मित्र एक बन्दर था। वह राजा की सेवा करता था। एक बार राजा सोया हुआ था। तब एक मक्खी वहां आ गई। वह राजा के मुंह पर बैठ गई। बन्दर ने उसे उड़ा दिया। परन्तु वह मक्खी राजा के पेट पर बैठ गई। बन्दर ने फिर उसे उड़ा दिया पर मक्खी नहीं रुकी। वह सोए हुए राजा के कंधे पर बैठ गई। तब बन्दर कुपित हो गया। उसने राजा की तलवार उठा ली और मक्खी पर प्रहार कर दिया। मक्खी उड गई पर तलवार से राजा की गर्दन कट गई। बन्दर अपनी मूर्खता पर बहुत दुःखी हुआ।

शिक्षा– मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा।

सद्दत्था–शब्दार्थ

सेवीअ	– सेवा करता था।	**सुत्तो**	– सोया हुआ	**निसण्णा**	– बैठ गई	**उयरम्मि**	– पेट पर
कुपिओ	– कुपित	**गेण्हीअ**	– ग्रहण कर ली	**अप्पणो**	– अपनी	**मूढयाए**	– मूर्खता पर
मच्छिआ	– मक्खी	**विरमीअ**	– रुकी	**उड्डीणा**	– उड गई		

पण्होत्तराइं–प्रश्नोत्तर

पण्हं 1. रण्णो मित्तं को आसी? (राजा का मित्र कौन था?)

उत्तरं– रण्णो मित्तं वाणरो आसी।

पण्हं 2. पुव्वं मच्छिआ कत्थ निसण्णा? (पहले मक्खी कहां बैठी?)

उत्तरं– मच्छिआ रण्णो मुहम्मि निसण्णा।

पण्हं 3. वाणरो कया कुविओ जाओ? (बंदर को क्रोध कब आया?)

उत्तरं– जया मच्छिआ रण्णो खंधम्मि निसण्णा।

पण्हं 4. मच्छिआए निवारणत्थं वाणरो किं कुणीअ? (मक्खी को हटाने के लिए बंदर ने क्या किया,)

उत्तरं– सो असिं गेण्हिअ मच्छियाए उवरिं पहारं कुणीअ।

पण्हं 5. असि–पहारेण का हाणी जया? (तलवार के प्रहार से क्या हानि हुई?)

उत्तरं– असि–पहारेण रण्णो गीवा छिण्णा जाया।

रित्तट्ठाण–पूरणं

1. तया एगा .... निसण्णा।
2. वाणरो पुणो .... विरमीअ।
3. तया वाणरो .... गेण्हीअ।
4. मच्छिआ .... छिण्णा जाया।
5. वाणरो .... जाओ।

4. बुद्धिमंतो वायसो

गिम्ह कालो आसी। एगो वायसो आगासे उड्डइ। गिम्हस्स कारणा सो अच्चंतं पिवासिओ जाओ। सो इओ तओ जलं गवेसइ। परं कत्थवि तेण जलं न लद्धं।

उड्डंतो सो एगम्मि उज्जाणम्मि ओअरिओ। तत्थ सो जलसहिअं घडं पासीअ परं तत्थ घडम्मि जलं अप्पं आसी। तस्स चंचू जलं न फुसइ। सो एगं उवायं चिंतीअ। घडस्स समीवे अणेगे सक्करा-खंडा पडिआ संति। सो एगं खण्डं चंचूए गेण्हीअ तं च घडे निक्खिवीअ।

एवं कमेण बिइज्जं, तइज्जं, चउत्थं च सक्करा-खण्डं निक्खिवीअ। जहा जहा सो सक्करा-खण्डे घडम्मि निक्खिवइ, तहा तहा जलं उवरि आगच्छइ। एवं तेण वायसेण अप्पणो पिवासा सामिआ।

सिक्खा- जस्स बुद्धिबलं अत्थि तस्स कज्जाणि सिज्झंति।

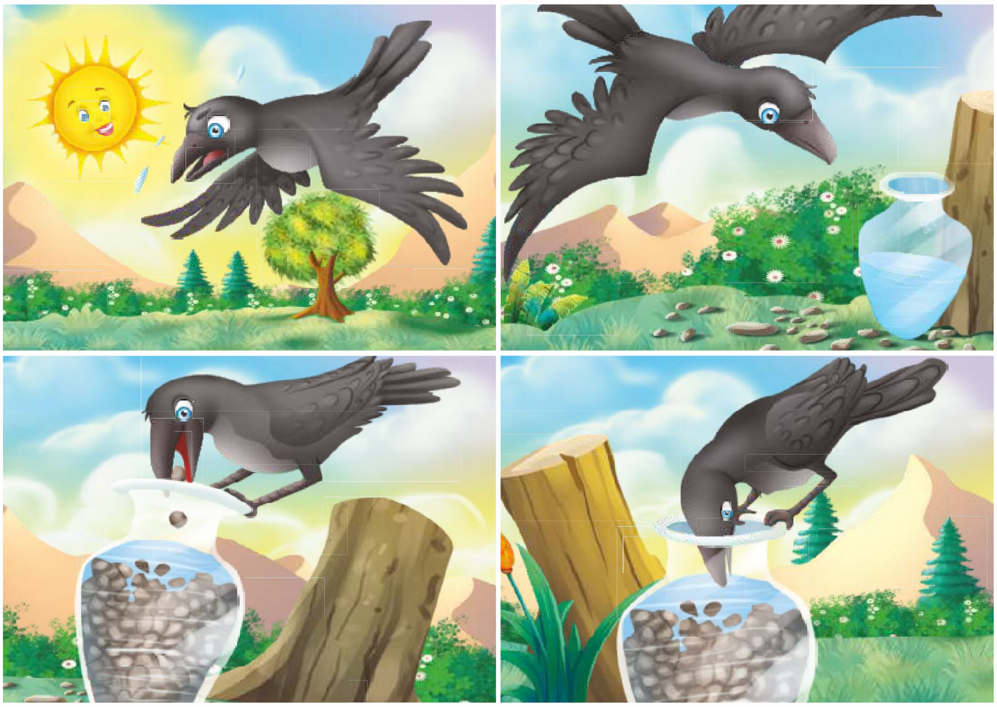

4. बुद्धिमान कौआ

गर्मी का समय था। एक कौवा आकाश में उड़ रहा था। गर्मी के कारण वह अत्यन्त प्यासा हो गया। वह इधर उधर जल ढूंढता है। पर कहीं भी उसे जल नहीं मिला।

उड़ता हुआ वह एक उद्यान में उतरा। वहां उसने जल सहित एक घड़े को देखा। पर उस घड़े में पानी थोड़ा था। उसकी चोंच जल को नहीं छू सकती थी। उसने एक उपाय सोचा। घड़े के पास अनेक कंकर पड़े थे। उसने एक कंकर अपनी चोंच में पकड़ कर उसे घड़े में डाल दिया। इस क्रम से दूसरी, तीसरी और चौथी कंकर डाल दी। जैसे–2 वह कंकर को जल में डालता जाता, वैसे–2 पानी ऊपर आता गया। इस प्रकार उस कौवे ने अपनी प्यास बुझा ली।

शिक्षा – जिसके पास बुद्धिबल है उसके सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

सद्दत्था–शब्दार्थ

अच्चंतं	– अत्यंत/बहुत ज्यादा	**उज्जाणम्मि**	– बाग में	**पिवासिओ**	– प्यासा
अप्पं	– थोड़ा	**कत्थ वि**	– कहीं भी	**फुसइ**	– छूती है
सक्करा-खंडा	– कंकर	**बिइज्जं**	– दूसरा	**तइज्जं**	– तीसरा
चउत्थं	– चौथा	**निक्खिवीअ**	– डालता रहा	**सामिआ**	– बुझा दी
सिज्झंति	– सिद्ध हो जाते हैं				

पण्होत्तराइं–प्रश्नोत्तर

पण्हो 1. वायसो कहं पिवासिओ जाओ? (कौआ प्यासा क्यों था?)

उत्तरं– वायसो गिम्हस्स कारणा पिवासिओ जाओ।

पण्हो 2. वायसो उज्जाणम्मि किं पासीअ? (कौए ने उद्यान में क्या देखा?)

उत्तरं– वायसो उज्जाणम्मि जल–सहिअं घडं पासीअ।

पण्हो 3. वायसो घडे किं निक्खिवीअ? (कौए ने घड़े में क्या डाला?)

उत्तरं– वायसो चंचूए सक्करा–खण्डे गेण्हीअ घडे य निक्खिवीअ।

पण्हं 4. जलं उवरि कहं आगच्छइ? (पानी ऊपर कैसे आता है?)

उत्तरं– जहा–जहा वायसो सक्करा–खण्डे घडम्मि निक्खिवइ तहा तहा जलं उवरि आगच्छइ।

पण्हं 5. तेण को परिणामो लद्धो? [उससे (कंकर डालने से) क्या फल मिला?]

उत्तरं– तेण वायसेण अप्पणो पिवासा सामिआ।

रित्तट्ठाणं पुत्तिं करेह वक्काण अत्थं य लिहह।

1. सो इओ .... न लद्धं।
2. परं तत्थ .... फुसइ।
3. घडस्स .... पडिआ संति।
4. एवं कमेण .... निक्खेवीअ।
5. जस्स बुद्धि .... सिज्झन्ति।

अत्था :- 1. ....

....

2. ....

....

3. ....

....

4. ....

....

5. ....

....

पाढो
पाठ
22

5. सुसंगई कायव्वा

सुमई सय-पियराण एगागी बालओ आसी। लहु-वयम्मि सो कुसंगम्मि आसत्तो जाओ। तस्स पिया तं पडिबोहिउं एगं उवायं चिंतीअ। सो सुन्दराणि सेव्व-फलाणि किणित्ता सुमइं पयच्छीअ, कहीअ च “तुमं एयाणि फलाणि तेहिं मंजूसाए निक्खिव।” तस्स पिया एगं सडिअं सेव्वफलं पि तेहिं सह निक्खेवणट्ठं पयच्छीअ।

बिइए दिवसे जया सुमई ताणि सेव्व-फलाणि भक्खिउं बाहिं आणेइ तया पासइ जं सव्वाणि सेव्वफलाणि दूसिआणि संति। सो पियरं पुच्छइ “पुरा सव्वाणि फलाणि सुन्दराणि हवीअ, अज्ज कहं विगइं गयाइं?” जणओ भणइ, एगेण दूसिएण सेव्वफलेण सुन्दराणि फलाणि दूसियाणि। एवमेव एगो दुट्ठो जणो अणेगे सुजणे वि दूसेइ। सुमई पिउणो भावं जाणित्ता कुसंगं चईअ।

सिक्खा- बालजणो दूरा परिवज्जियव्वो।

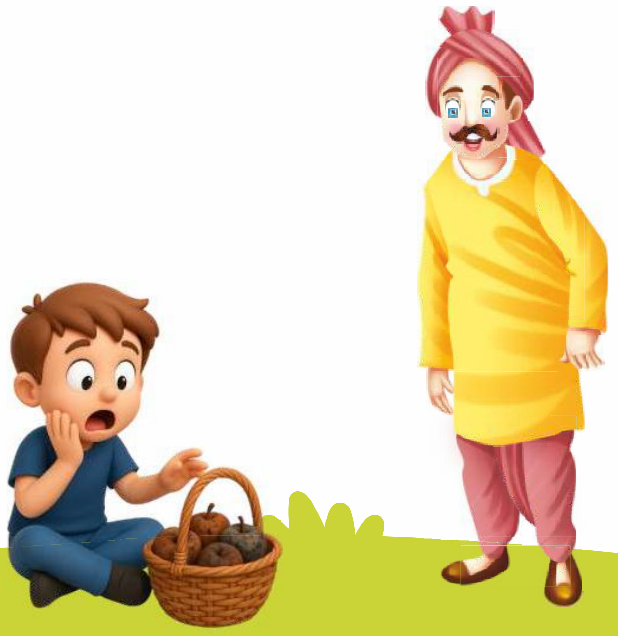

5. सत्संगति करनी चाहिए

सुमति अपने माता-पिता का अकेला बालक था। छोटी उम्र में वह कुसंगति में आसक्त हो गया। उसके पिता ने उसे समझाने के लिए एक उपाय सोचा। उसने सुन्दर सेब खरीद कर सुमति को दे दिये और कह दिया 'तू इन फलों को पेटी में रख दे।' उसके पिता ने एक सडा हुआ सेब का फल भी उनके साथ ही रखने को दे दिया।

दूसरे दिन जब सुमति उन सेबों को खाने के लिए बाहर निकालता है तब देखता है कि सभी सेब दूषित हो चुके हैं। वह पिता जी से पूछता है 'पहले सारे फल सुन्दर थे, आज क्यों विकृत हो गए?'

पिता कहता है 'एक दूषित फल ने अच्छे फल भी दूषित कर दिए। उसी तरह एक दुष्ट आदमी अनेक अच्छे लोगों को खराब कर देता है।' सुमति ने पिता के भाव जानकर कुसंगति को छोड़ दिया।

शिक्षा – बुरे आदमी को दूर से छोड़ देना चाहिए।

सद्दत्था-शब्दार्थ

पियराण	माता-पिता का	**मंजूसाए**	पेटी में	**लहु-वयम्मि**	छोटी उम्र में
निक्खेवणट्ठं	रखने के लिए	**पडिबोहिउं**	समझाने के लिए	**दूसिआणि**	दूषित/खराब
सेव्व-फलाणि	सेब	**विगइं गयाइं**	विकृति को प्राप्त हो गए	**किणित्ता**	खरीदकर
पिउणो	पिता के	**चईअ**	छोड़ दिया		

पण्होत्तराइं-प्रश्नोत्तर

पण्हं 1.सुमइस्स कियन्तो भायरा हुवीअ? (सुमति के कितने भाई थे?)

उत्तरं- सुमई सय-पियराण एगागी बालओ आसी।

पण्हं 2.पिया सुमइं किं यच्छीअ? (पिता ने सुमति को क्या दिया?)

उत्तरं- सो सुन्दराणि सेव्व-फलाणि किणित्ता सुमइं यच्छीअ।

पण्हं 3.बिइए दिवसे सुमई किं करेइ? (दूसरे दिन सुमति क्या करता है?)

उत्तरं- बिइए दिवसे सुमई ताणि सेव्व-फलाणि भक्खिउं बाहिं आणेइ।

पण्हं 4.सुमई पियरं किं पुच्छइ? (सुमति पिता को क्या पूछता है?)

उत्तरं- सो पुच्छइ-पुरा सव्वाणि फलाणि सुन्दराणि हवीअ, अज्ज कहं विगइं गयाइं (गयाणि)।

पण्हं 5.जणओ पुत्तं किं सिक्खावेइ? [जनक (पिता) पुत्र को क्या सिखाता है?]

उत्तरं– जणओ सिक्खावेइ जं एगो दुट्ठो जणो अणेगे सुजणे वि दूसइ।

रित्तता-पूरणं वक्काणं य अत्थं लिहह।

1. तस्स पिया .... चिंतीअ।

अत्थो → ....

2. तेहिं सह .... यच्छीअ।

अत्थो → ....

3. पुरा सव्वाणि .... गयाइं।

अत्थो → ....

4. जणओ भणइ .... दूसियाणि।

अत्थो → ....

5. सुमई पिउणो .... चईअ।

अत्थो→ ....

पाढो
पाठ
23

दाणिं को समयो?
अब क्या समय है?

बजे – वायणं/वायणे
पायोण – पौने
सपाय – सवा
सड्ढ – आधा घंटा सहित
कला – मिनट
विकला – सैकण्ड

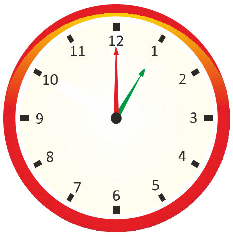

एगवायणं

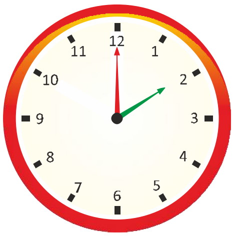

दुवायणं

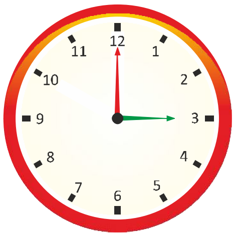

ति वायणं

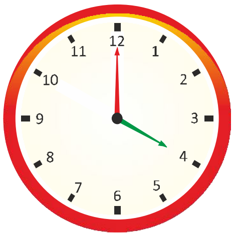

चउवायणं

5 : 00
पंच वायणं

6 : 00
छहवायणं

7 : 00
सत्तवायणं

8 : 00
अट्ठवायणं

9 : 00
नव वायणं

10 : 00
दस वायणं

11 : 00
एयारह वायणं

12 : 00
बारह वायणं

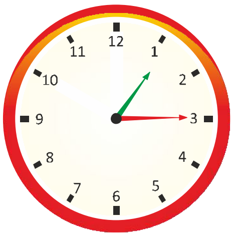

1 : 15
सपायं एगवायणं
(सवा एक)

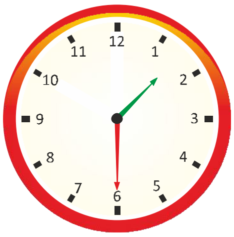

1 : 30
सड्ढएग वायणं
(डेढ़)

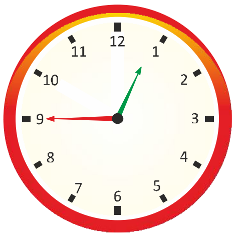

12 : 45
पायोण एग वायणं
(पौने एक)

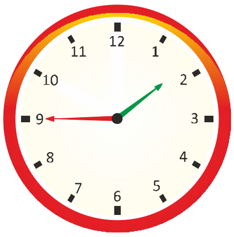

1 : 45
पायोण दु वायणं
(पौने दो)

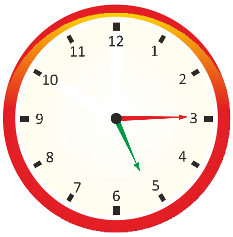

5 : 15
सपाय पंच वायणं

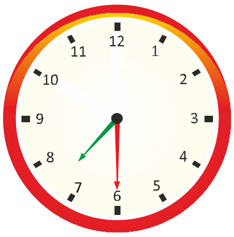

7 : 30
सड्ढ सत्तवायणं

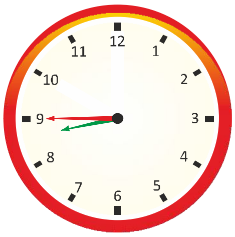

8 : 45
पायोण नव वायणं

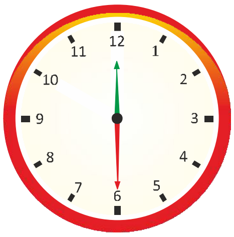

12 : 30
सड्ढ बारहवायणं

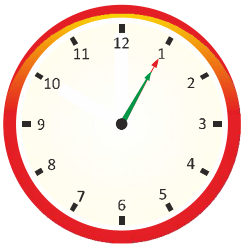

1 : 05

पंच कलोत्तर एग वायणं

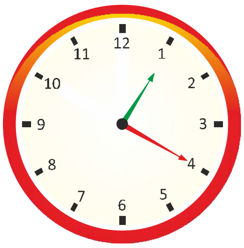

1 : 20

वीसा कलोत्तर एग वायणं

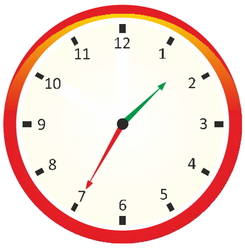

1 : 35

पणतीसा कलोत्तर एग वायणं

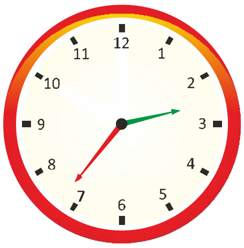

2 : 37

सत्ततीसा कलोत्तर दु वायणं

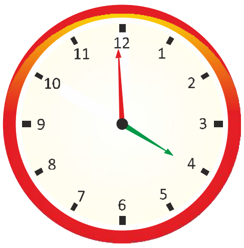

3 : 59

एगूणसट्ठि कलोत्तर तिण्णि वायणं
(एग कलोण चउ वायणं)

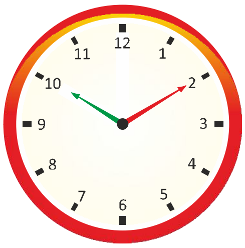

10 : 10

दस कलोत्तर दस वायणं

अब्भासो-अभ्यास

बताइए कि क्या बजा है?

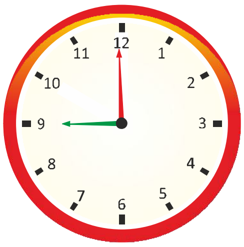

....

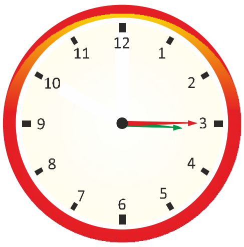

....

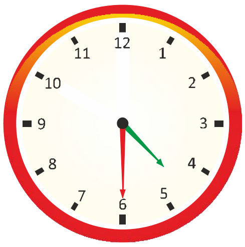

....

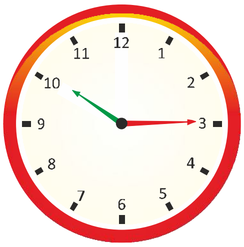

....

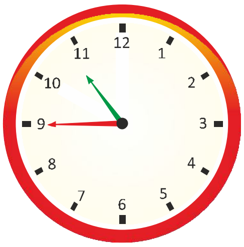

....

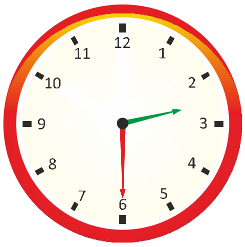

....

1 : 15 = ……………………………

2 : 15 = ……………………………

3 : 30 = ……………………………

4 : 30 = ……………………………

5 : 45 = ……………………………

6 : 45 = ……………………………

7 : 05 = ……………………………

8 : 09 = ……………………………

9 : 17 = ……………………………

10 : 25 = ……………………………

11 : 35 = ……………………………

12 : 48 = ……………………………

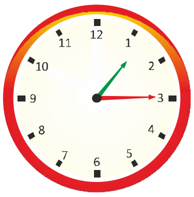
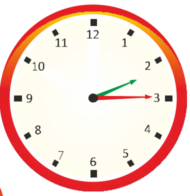
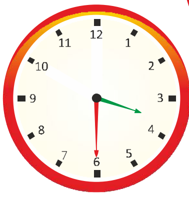
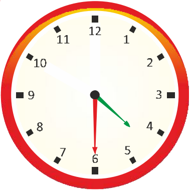
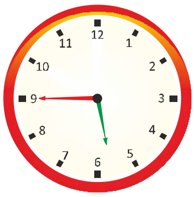
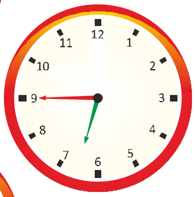
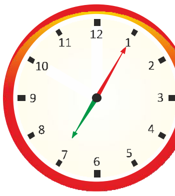
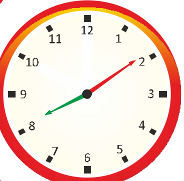
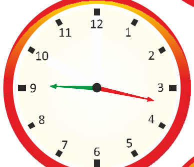
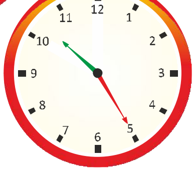
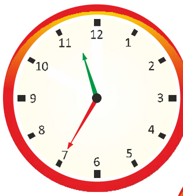
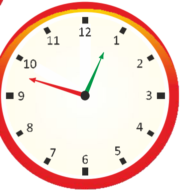

पाढो
पाठ
24
मम पायचरिया
मेरी प्रातःचर्या

जय/जयउ जिणिंदो। मम नाम खुसो जेण। अहं मम पायचरियं वयामि।

जय जिनेन्द्र। मेरा नाम खुश जैन है। मैं अपनी प्रातःचर्या बताता हूं।

अहं पइदिणं पायं पंचवायणे उट्ठामि ।
– मैं प्रतिदिन प्रातः 5 बजे उठता हूं।

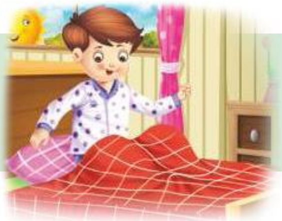

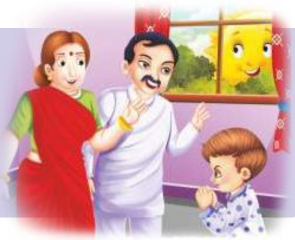

पढमं महावीरं पहुं वंदामि, माअरं पिअरं य नमामि ।
– पहले महावीर प्रभु को वंदना करता हूं और
माता–पिता को नमस्कार करता हूं।

तओ जलपाणं करेमि, कवुण्हं जलं पिवामि ।
– उसके बाद जलपान करता हूं, कोसा पानी पीता हूं।

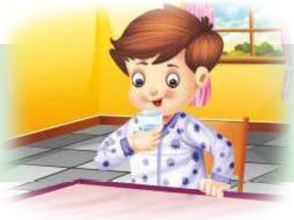

अहं सपाय पंचवायणे सोयं करेमि ।
– मैं सवा 5 बजे शौच जाता हूं।

तयणंतरं मुहपक्खालणं दंतधावणं य करेमि ।
– उसके बाद मुंह धोता हूं और ब्रश करता हूं।

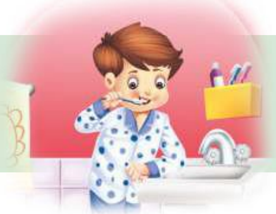

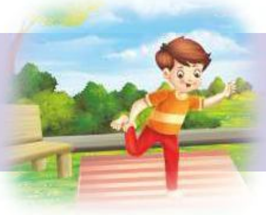

अहं सड्ढपंचवायणे जोगासणं करेमि ।
– मैं साढे 5 बजे योगासन करता हूं।

अहं छहवायणे सज्झायं करेमि ।
– मैं छः बजे स्वाध्याय करता हूं (पढ़ता हूं)।

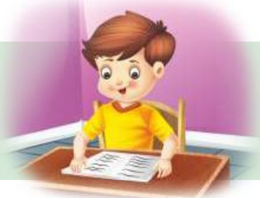

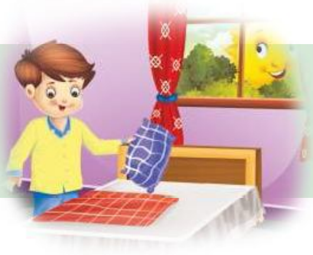

अहं सड्ढछहवायणे मम कक्खं (परिसरं) सच्छं करेमि।
– मैं साढ़े छः बजे अपना कमरा साफ करता हूं।

अहं तओ पायोण–सत्त–वायणे ण्हाणं करेमि।
– मैं उसके बाद पौने 7 बजे स्नान करता हूं।

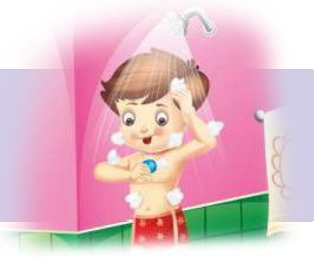

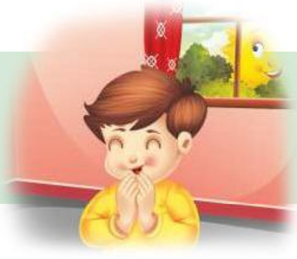

अहं सत्तवायणे पत्थणं करेमि, आगम–गाहाओ य पढामि ।
– मैं सात बजे प्रार्थना करता हूं और आगम की गाथाएं पढ़ता हूं।

अहं सड्ढसत्तवायणे पायरासं करेमि ।
– मैं साढे सात बजे नाश्ता करता हूं।

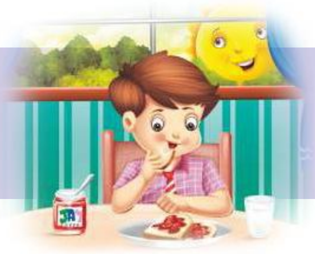

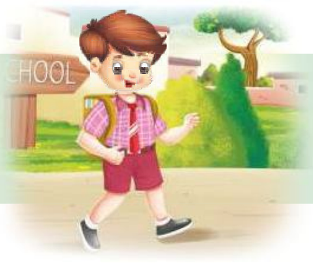

तप्पच्छा अट्ठवायणे विज्जालयं गच्छामि ।
– उसके बाद 8 बजे विद्यालय जाता हूं।

सरल प्राकृत वाक्यों में अपनी दिनचर्या लिखें। (10 वाक्य)

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

7. ....

8. ....

9. ....

10. ....

सामान्य शिष्टाचार

A. क्या आप प्रतिदिन अपने बड़ों को जय जिनेन्द्र, राम-2, सत्श्री अकाल आदि कहते हैं ?

यदि नहीं कहते तो आगे से अवश्य कहें।

B. क्या आप प्रतिदिन अपने इष्ट (भगवान / गुरु) का स्मरण कर पूजन करते हैं?

यदि नहीं करते तो आज से ही शुरू करें।

Early to bed Early to rise
Makes a man Healthy Wealthy and Wise.

पाढो
पाठ
25

रूवग–नाणग–बोहो
रूपये–पैसे का बोध

रूवगं–रुपया **नाणगं – पैसा**

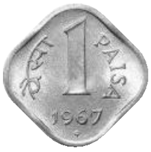
पैसा
1
PAISA
1967

एगं नाणगं

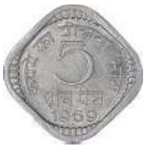

पंच नाणगाणि

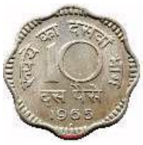
10
दस पैसे
1965

दस नाणगाणि

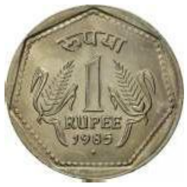
रुपया
1
RUPEE
1985

एगं रूवगं

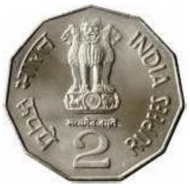
INDIA
2
RUPEES

दु रूवगाणि

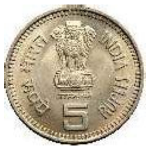
INDIA
5
RUPEES

पंच रूवगाणि

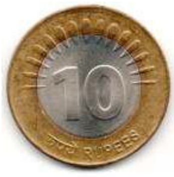

दस रूवगाणि

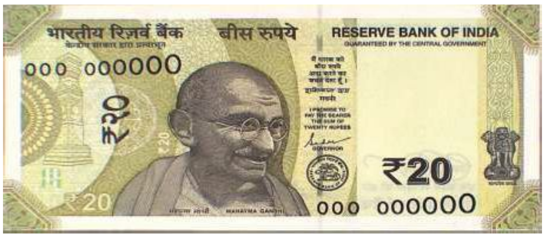
भारतीय रिज़र्व बैंक
बीस रुपये
RESERVE BANK OF INDIA
000 000000
₹20
000 000000

बीसं रूवगाणि

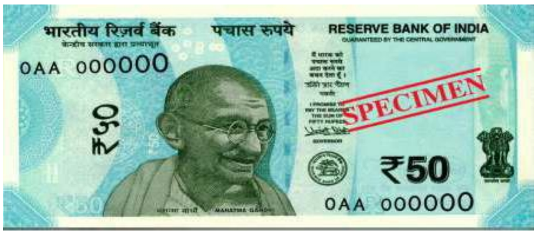
भारतीय रिज़र्व बैंक
पचास रुपये
RESERVE BANK OF INDIA
0AA 000000
SPECIMEN
₹50
0AA 000000

पण्णासं रूवगाणि

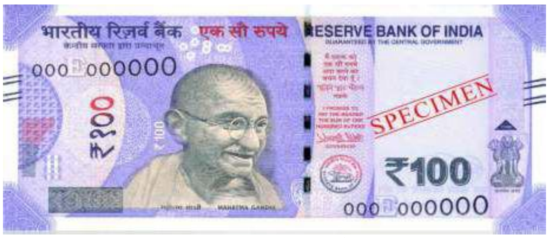
भारतीय रिज़र्व बैंक
एक सौ रुपये
RESERVE BANK OF INDIA
000 000000
SPECIMEN
₹100
000 000000

सयं रूवगाणि

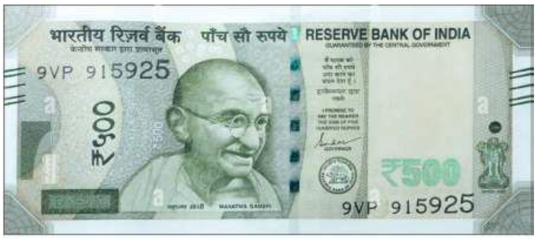
भारतीय रिज़र्व बैंक
पाँच सौ रुपये
RESERVE BANK OF INDIA
9VP 915925
₹500
9VP 915925

पणसयं रूवगाणि

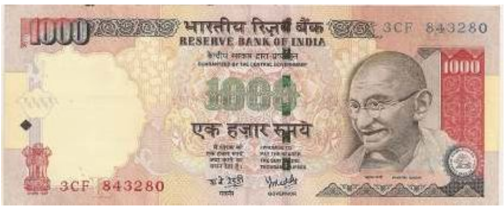
1000
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
3CF 843280
एक हजार रुपये
3CF 843280

सहस्सं रूवगाणि

अब्भासो-अभ्यास

(प्राकृत में लिखें)

3 रुपये – ………………………………………………… ।

5 रुपये – ………………………………………………… ।

11 रुपये – ………………………………………………… ।

15 रुपये – ………………………………………………… ।

20 रुपये – ………………………………………………… ।

22 रुपये – ………………………………………………… ।

5 पैसे – ………………………………………………… ।

10 पैसे – ………………………………………………… ।

25 पैसे – ………………………………………………… ।

50 पैसे – ………………………………………………… ।

रूवगं णाणगं च – रुपया और पैसा

1 रुपया 20 पैसे – एगं रूवगं वीसा णाणगाणि य

5 रुपये 30 पैसे – पंचरूवगाणि तीसा णाणगाणि य

10 रुपये 40 पैसे – दसरूवगाणि चालीसा णाणगाणि य

15 रुपये 35 पैसे – पण्णरस रूवगाणि पणतीसा णाणगाणि य

20 रुपये 50 पैसे – वीसा रूवगाणि पण्णास णाणगाणि य

50 रुपये 1 पैसा – पण्णास रूवगाणि एगं णाणगं य

100 रुपये 30 पैसे – सयं रूवगाणि तीसा णाणगाणि य

200 रुपये 45 पैसे – दुसयं रूवगाणि पणचत्तालीस णाणगाणि य

500 रुपये 50 पैसे – पणसयाइं रूवगाणि पण्णास णाणगाणि य

1000 रुपये 50 पैसे – सहस्सं रूवगाणि पण्णास णाणगाणि य

(प्राकृत बनाओ)

2 रुपये 20 पैसे – ……………………………………………………

10 रुपये 10 पैसे – ……………………………………………………

40 रुपये 10 पैसे – ……………………………………………………

50 रुपये 50 पैसे – ……………………………………………………

60 रुपये 15 पैसे – ……………………………………………………

100 रुपये 30 पैसे – ……………………………………………………

200 रुपये 20 पैसे – ……………………………………………………

300 रुपये 40 पैसे – ……………………………………………………

400 रुपये 30 पैसे – ……………………………………………………

2000 रुपये 35 पैसे – ……………………………………………………

पाढो संवाओ
पाठ संवाद
26

कइओ (गाहगो) – ग्राहक	आवणिओ (विक्केया) – दुकानदार
1. जयउ जिणिन्दो!	1. जयउ जिणिन्दो!
2. किं सिआ (चीनी) अत्थि?	2. आम (हां), अत्थि ?
3. किं मुल्लं (मूल्य) अत्थि?	3. सट्ठी रूवगाणि पइकिलो।
4. चायवत्ताणं किं मुल्लं अत्थि?	4. तिण्णि सयाइं रूवगाणि पइकिलो।
5. किं सीसग–लेहणी (पेंसिल) वि अत्थि?	5. आम, सीसग–लेहणी वि अत्थि।
6. किं मुल्लं अत्थि?	6. पण्णास णाणगाणि।
7. एगं पाइअ–पोत्थअं (प्राकृत पुस्तक) वि देहि।	7. एगस्स पोत्थअस्स मुल्लं पण्णास रूवगाणि अत्थि।
8. एगं कक्कं (साबुन) वि देहि।	8. वीसा रूवगाणि एगस्स कक्कस्स मुल्लं अत्थि।
9. दन्तपिट्ठगस्स (दंतपेष्ट) किं मुल्लं अत्थि?	9. एगस्स दंतपिट्ठगस्स मुल्लं सयं रूवगाणि।
10. कइ रूवगाणि देमु?	10. तीसोत्तर तिण्णिसयाइं रूवगाणि पण्णास णाणगाणि य।
11. इमाणि रूवगाणि लेहि। (लो)	11. धण्णवाओ (धन्यवाद)।
12. जयउ जिणिन्दो!	12. जयउ जिणिन्दो!

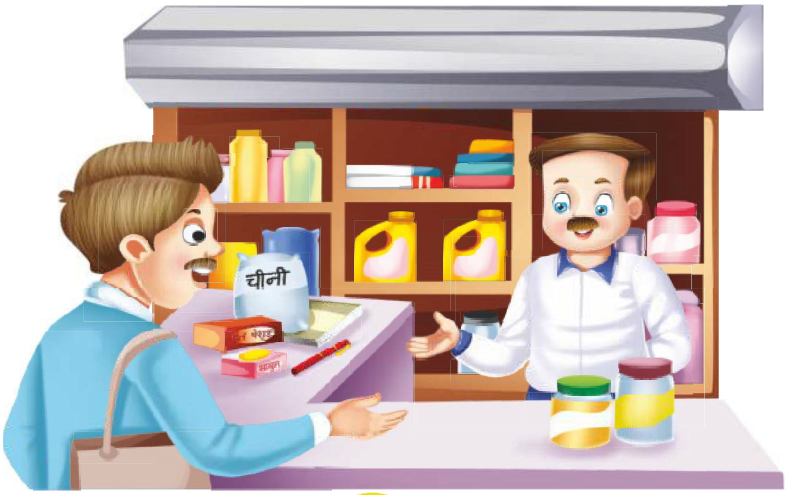

अब्भासो-अभ्यास

ऐसी 15 वस्तुओं की list बनाओ, जो आप दुकानदार से खरीदकर लाते हो। सामने उनका नाम एवं मूल्य प्राकृत में लिखो।

वस्तुएं	**वस्तुओं के प्राकृत नाम**	**वस्तु का मूल्य (प्राकृत में)**
गुड	गुड	तीसं रूवगाणि।

पाढो
पाठ
27
विविहा किरिया-रूवा
विविध क्रिया-रूप

क्रियाओं के विविधरूप व विविध अर्थ

धातु	वर्तमान	भूतकाल	भविष्य काल	आज्ञा अर्थक	संबंध कृदन्त	हेत्वर्थ कृदन्त	कृदन्त विशेषण (वर्तमान)
हस	हसइ	हसीअ	हसिहिइ	हसउ	हसिऊण	हसिउं	हसन्तो
हँसना	हँसता है।	हँसा	हँसेगा	हँसे	हँसकर	हँसने के लिए	हँसता हुआ
कह	कहइ	कहीअ	कहिहिइ	कहउ	कहिऊण	कहिउं	कहन्तो
कहना	कहता है	कहा	कहेगा	कहे	कहकर	कहने के लिए	कहता हुआ
नम	नमइ	नमीअ	नमिहिइ	नमउ	नमिऊण	नमिउं	नमन्तो
नमना	नमता है।	नमा / झुका	झुकेगा	झुके	झुककर	झुकने के लिए	झुकता हुआ
हो	होइ	होसी / होही	होहिइ	होउ	होऊण	होउं	होन्तो / होअन्तो
होना	होता है।	हुआ	होगा	हो / होवे	होकर	होने के लिए	होता हुआ
ले	लेइ	लेसी / लेही	लेहिइ	लेउ	लेऊण	लेउं	लेन्तो / लेअन्तो
लेना	लेता है	लिया	लेगा	ले	लेकर	लेने के लिए	लेता हुआ
ने	नेइ	नेसी / नेही	नेहिइ	नेउ	नेऊण	नेउं	नेन्तो / नेअन्तो
ले जाना	ले जाता है	ले गया	ले जाएगा	ले जाए	ले जाकर	ले जाने के लिए	ले जाता हुआ
जे	जेइ	जेसी / जेही	जेहिइ	जेउ	जेऊण	जेउं	जेन्तो / जेअन्तो
जीतना	जीतता है	जीता	जीतेगा	जीते	जीतकर	जीतने के लिए	जीतता हुआ
झा	झाइ	झासी / झाही	झाहिइ	झाउ	झाऊण	झाउं	झान्तो / झाअन्तो
ध्यान करना	ध्यान करता है	ध्यान किया	ध्यान करेगा	ध्यान करे	ध्यान करके	ध्यान करने के लिए	ध्यान करता हुआ
गा	गाइ	गासी / गाही	गाहिइ	गाउ	गाऊण	गाउं	गान्तो / गाअन्तो
	गाता है	गाया	गाएगा	गाए	गाकर	गाने के लिए	गाता हुआ
जा	जाइ	जासी / जाही	जाहिइ	जाउ	जाऊण	जाउं	जान्तो / जाअन्तो
	जाता है	गया	जाएगा	जाए	जाकर	जाने के लिए	जाता हुआ

वक्का - वाक्य

हस् धातु (क्रिया)

सो हसइ। – वह हंसता है।
सो हसीअ। – वह हंसा।
सो हसिहिइ। – वह हंसेगा।
सो हसउ। – वह हंसे।
सो हसिऊण भुंजइ। – वह हंसकर भोजन करता है।
सो हसिउं कक्खे गच्छइ। – वह हंसने के लिए कमरे में जाता है।
सो हसन्तो विज्जालयं गच्छइ। – वह हंसता हुआ स्कूल जाता है।

गा धातु (क्रिया)

सो गीअं गाइ। – वह गीत गाता है।
सो गीअं गासी/ गाही। – उसने गीत गाया।
सो गीअं गाहिइ। – वह गीत गाएगा।
सो गीअं गाउ। – वह गीत गाए ।
सो गीअं गाऊण सुवइ। – वह गीत गाकर सोता है।
सो गीअं गाउं विज्जालयं गच्छइ। – वह गीत गाने के लिए विद्यालय/स्कूल जाता है।
सो गीअं गाअन्तो/गान्तो भुंजइ। – वह गीत गाता हुआ भोजन करता है।

अर्थ लिखें

हसइ – ....
कहीअ – ....
नमिहिइ – ....
होउ – ....
लेऊण – ....
नेउं – ....
जेन्तो/जेअन्तो – ....
झाइ – ....
गासी/गाही – ....
जाहिइ – ....

प्राकृत शब्द लिखें

कहता है – ....
नमा/झुका – ....
होगा – ....
ले – ....
ले जाकर – ....
जीतने के लिए – ....
ध्यान करता हुआ – ....
जीते – ....
गाए – ....
जाकर – ....

पाढो
पाठ
28

पाइय सुत्ता
प्राकृत सूक्त

याद कीजिए

⊙ अणुसासिओ न कुप्पिज्जा। (उत्तराध्ययन सूत्र)

– अनुशासन मानना पड़े, तो क्रोध नहीं करना।

⊙ नच्चा नमइ मेहावी। (उत्तराध्ययन सूत्र)

– बुद्धिमान व्यक्ति ज्ञान सीखकर नम्र बनता है।

⊙ कोहो पीइं पणासेइ। (दशवैकालिक सूत्र)

– क्रोध प्रेम को नष्ट करता है।

⊙ माणो विणयणासणो। (दशवैकालिक सूत्र)

– अहंकार विनम्रता को नष्ट करता है।

⊙ माया मित्ताणि णासेइ। (दशवैकालिक सूत्र)

– माया (कपट) मित्रता को नष्ट करती है।

⊙ लोहो सव्व-विणासणो। (दशवैकालिक सूत्र)

– लोभ सब कुछ नष्ट करता है।

⊙ उट्ठिए णो पमायए। (आचारांग सूत्र)

– उठो, प्रमाद (आलस्य) मत करो।

⊙ णत्थि कालस्स णागमो। (आचारांग सूत्र)

– मृत्यु न आए, ऐसा नहीं हो सकता। (मृत्यु अटल सत्य है।)

⊙ धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं। (दशवैकालिक सूत्र)

– धर्म उत्कृष्ट मंगल है।

उत्तराध्ययन सूत्र

⊙ सद्धा परम दुल्लहा। (उत्तराध्ययन सूत्र)

– धर्मश्रद्धा परम दुर्लभ है।

⊙ पढमं णाण, तओ दया। (दशवैकालिक सूत्र)

– पहले ज्ञान है, फिर दया है।

⊙ सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं। (दशवैकालिक सूत्र)

– सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना नहीं चाहते।

उत्तराध्ययन
सूत्र

⊙ जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए । (दशवैकालिक सूत्र)

– यतना से चले, खड़ा हो, बैठे और सोए।

⊙ एयं खु णाणिणो सारं, जं ण हिंसइ किंचणं। (सूत्रकृतांग सूत्र)

– ज्ञानी के ज्ञान का यह सार है कि वो किसी जीव की हिंसा न करे।

⊙ विवत्ती अविणीअस्स, संपत्ती विणीयस्स य। (दशवैकालिक सूत्र)

– अविनीत को विपत्ति (मुसीबत) मिलती है तथा विनीत को सम्पत्ति मिलती है।

⊙ एवं तु गुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए। (दशवैकालिक सूत्र)

– गुणों को देखने वाले बनो, दुर्गुणों को छोड़ दो।

⊙ वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ। (दशवैकालिक सूत्र)

– हमारा गुजारा हो जाए, पर कोई जीव तकलीफ न पाए।

⊙ इच्छा खु आगास-समा अणंतिया। (उत्तराध्ययन सूत्र)

– इच्छा आकाश के समान अनंत है।

रिक्त स्थान भरो

- कोहो .... पणासेइ।
- लोहो .... विणासणो।
- नच्चा .... मेहावी।
- पढमं .... तओ .... ।
- .... चरे .... चिट्ठे, जयमासे .... सए।
- विवत्ती .... संपत्ती .... य।
- .... खु आगाससमा अणंतिया।
- एयं खु णाणिणो सारं जं ण .... किंचणं।

हिन्दी अर्थ लिखें

- अणुसासिओ न कुप्पिज्जा। ....
- माणो विणय-णासणो। ....
- उट्ठिए णो पमायए। ....
- धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं। ....
- एवं तु गुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए। ....
- इच्छा खु आगाससमा अणंतिया। ....
- वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मइ। ....
- सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं। ....
- णत्थि कालस्स णागमो। ....
- माया मित्ताणि नासेइ। ....

पाइय विज्जा
(प्राकृत विद्या)
1
प्राकृत भाषा की वर्णमाला
आओ प्राकृत भाषा सीखें।
जय जिनशासन प्रकाशन
श्रुत रत्नाकर

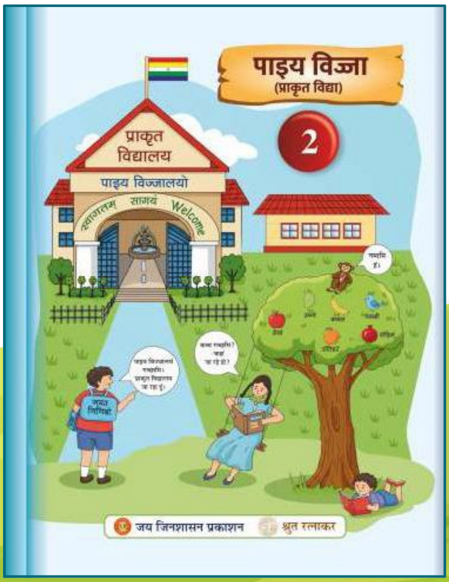
पाइय विज्जा
(प्राकृत विद्या)
2
प्राकृत विद्यालय
पाइय विज्जालयो
स्वागतम् सागयं Welcome
जय जिनशासन प्रकाशन
श्रुत रत्नाकर

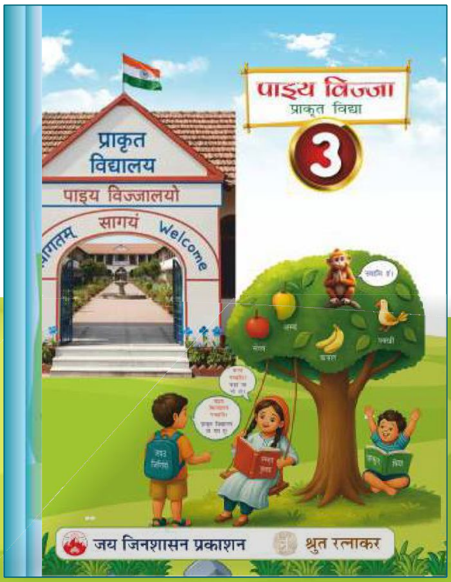
पाइय विज्जा
प्राकृत विद्या
3
प्राकृत विद्यालय
पाइय विज्जालयो
स्वागतम् सागयं Welcome
जय जिनशासन प्रकाशन
श्रुत रत्नाकर

भाग 4, 5, 6 के लिए प्रतीक्षा करें ...

जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमेन्ट्स, सेक्टर-13, रोहिणी, दिल्ली-110085
रवीन्द्र जैन - 098102-87446
Email: jaijinshaasanprakaashan@gmail.com